राष्ट्रीय-सिंहनाद ।

जिसमें
राष्ट्र-भाषा हिन्दीके अनेक सुकवियोंकी
सामयिकऔर विविध भाव पूर्ण
कविताओंका संग्रह है ।

प्रकाशक—
विश्वमित्र कार्यालय ।
२१।१ हेमर लेन,
कलकत्ता ।

प्रथमवार २००० } सन् १९२२
संवत् १९७८ { मूल्य सजिल्द २)

भूमिका

राष्ट्रीय सुकवियोंके वीर हृदयद्वारा निःसृत यह सिंहनाद है। सिंहनाद अलौकिक आनन्दप्रदायी है किन्तु वीर हृदयियोंके लिये। कवियोंने कविताएं उत्तेजना पूर्ण ही लिखी हैं किन्तु उसमें शान्ति विशिष्ट है। द्वेषपूर्ण हृदयसे किसीको कुछ कहना क्षुद्रता है किन्तु शुद्ध हृदयसे यदि अपना स्वत्वस्मरण किया जाय तो गौरवकी बात है। हम इसे हितचिन्तना कहते हैं। प्रस्तुत पुस्तकमें प्रायः ऐसी ही कविताओंका संग्रह किया गया है।

हम उन पत्र पत्रिकाओंके लेखक, लेखिकाओं तथा सुकवियोंके कृतज्ञ हैं जिनकी कविताओंका संग्रह हमने किया है।

यदि हमारे प्रेमी पाठकोंने सिंहनादको अपनाया तो हम इसी भांति और भी संग्रह निकालकर पाठकोंका मनोरञ्जन और हितसम्पादनकर सफलमनोरथ होंगे। शम्।

विनयावनत

संग्रहकर्त्ता

विषयानुक्रमणिका।

विषय	लेखक	पृष्ठ

विषय	लेखक	पृष्ठ

विषय	लेखक	पृष्ठ

विषय	लेखक	पृष्ठ

राष्ट्रीय—सिंहनाद।

अवतारका आवाहन।

[१]

जगतमें होता हाहाकार, कर रही जनता ईश-पुकार ।
आ गया क्या कलियुग विकराल, डस रहा जो बन करके व्याल ॥

[२]

मेदिनीमें बढ़ता है पाप, वृद्धि पाते हैं तीनों ताप ।
बढ़े होते हैं अत्याचार, राक्षसी फैला है अधिकार ॥

[३]

बराबर होते हैं अन्याय, सहन करते जाते हम हाय ।
नहीं है गो ब्राह्मणका त्राण, पड़े संकटमें सबके प्राण ॥

[४]

धर्मकी होती जाती ग्लानि, हाय ! भारतकी होती हानि ।
पापका बढ़ा प्रचण्ड प्रताप, जिसे नित देख रहे हैं आप ॥

[५]

स्वत्वका होता सत्यानाश, नहीं उन्नतिकी कोई आश ।
फूंक दो कर्मवीरता-मन्त्र, शीघ्र दे दर्शन करो स्वतन्त्र ॥

[६]

दुष्कृतोंका हो सर्व विनाश, आत्म-विद्याका करो प्रकाश।
भंवरमें नौका दी है डार, तुम्ही हो केवल खेवनहार ॥

[७]

यही जगमें है ऊषा काल, गगन होता जाता है लाल।
प्रभो हो जागृत सब संसार, चेत लें सब अपना घर-द्वार॥

[८]

उठे फिर वेद-मन्त्रका गान, हवन-पूजनका हो उत्थान।
कर्म हो स्वाहा स्वधा समेत, बढ़े गुण गौरव-दिव्य निकेत॥

[९]

नाथ अब पुनः धरो अवतार, हरो पृथ्वीका सारा भार।
ब्रह्ममय हो जावे संसार, करें हम भारतकी जयकार॥

जगन्नारायण देव शर्मा।

राष्ट्रीय-गान।

जयति जयति हिन्द—हिन्द

[१]

जयति जयति हिन्द॥

जै ज जै ज स्वदेश—कान्त, शान्त, दान्त देश

प्रकृति-केलि-कुञ्ज, अखिल-तेज-पुञ्ज

स्वर्गसे महान, जननि जन्म-स्थान

..., सफल, सरल, सबल, अचल, नवल, हिन्द-हिन्द ॥जयति०॥

[२]

साहत हिम गिरि विशाल—मंजु मुकुट भव्य भाल

गङ्ग, जमुन—जाल, कंबु कण्ठ माल

श्याम विपिन केश, सुघर, सुभग वेश

कमल वयन, कमल वदन, कमल शयन, हिन्द—हिन्द ॥ जयति० ॥

[३]

जयति मुक्ति, भुक्ति—द्वार—सौम्य, शक्ति, सौख्य—सार

आदि ज्ञान—खान; धान्य, धन- निधान

बल प्रतापवान; प्यारा हिन्दुस्तान

अवनि-वलय-मलय निलय, सदय-हृदय, हिन्द-हिन्द ॥ जयति० ॥

[४]

तीस कोटि कण्ठ गान—लसित द्विगुण कर कृपान

फलक स्वाभिमान; भ्रकुटि अग्निवान

निहिर तन विभूति; रोम रोम स्फूर्ति

खलन-दलन, कुशल करन, विपति-हरन, हिन्द-हिन्द ॥ जयति० ॥

[५]

जै जै जै पुण्य भूमि—जननि, जनक, जन्म-भूमि

तव पद अरविन्द; भजत मन मलिन्द

हिन्दु, मुसलमान; सकल करत गान

जगत—जीवन, पतित पावन, वरद सुखद, हिन्द-हिन्द ॥जयति०॥

"जीनन"

विजय.

यदि दुर्जयोंपर भी विजय हम चाहते संसारमें ।
रहना नहीं यदि इष्ट है परतन्त्र—पारावारमें ॥
तनमन लड़ाकर धन लगाकर धर्मका अर्जन करें ।
बलसे विनयसे जो विदेशी वस्तुका वर्जन करें ॥
जबतक विदेश विदेशियोंसे या विदेशी द्रव्यसे ।
होकर अलग अनुराग करियेगा न देशी द्रव्यसे ॥
तबतक सुसौख्य स्वराज्य सम्पति शान्ति पाओगे नहीं ।
उत्क्रान्तिसे उन्मुक्त होकर कान्ति पाओगे नहीं ॥
परसे अलग हो, प्रेम अपनेसे सदा करते रहो ।
सर्वस्वको करके निछावर देशपर मरते रहो ॥
निःस्वार्थ होकर स्वार्थ अपना देश-हितको मानिये ।
सर्वत्र इस विधि सर्वदा कल्याण अपना जानिये ॥
क्यों देश उसकी मानियोंमें भूलकर गिनती करे ?
निज जातिसे जो ऐंठकर परजातिसे विनती करे ॥
इससे अधिक निर्लज्जता क्या हो सकेगी बोलिये ।
जीवन्मृतक क्यों हो गये हैं चेतिये दृग खोलिये ॥
जो देशमें उपजे बने वर्तें उसे ही हम सदा ।
व्यय भी जहांतक हो सके प्रतिदिन करें हम कम सदा ॥
जबतक विलासी हम रहेंगे दीन होते जायँगे ।
बलसे गुणोंसे धन-जनोंसे हीन होते जायँगे ॥

जो नीच हमको हैं समझते नीच होकरके स्वयं।
फिर भी बने हम दास उनके लाज खोकरके स्वयं॥
सम्मान देकरके लिया अपमान हमने भूलसे।
प्रतिकूलसे अनुकूलता करते गये हम मूलसे॥
हम कौड़ियोंकी वस्तुको हैं गिन्नियोंपर ले रहे।
हा देव! अपनी मूर्खताको क्या कहें किससे कहें॥
परदेशियोंके गेह सोने चांदियोंसे भर गये।
हम दिन दहाड़े लुट गये हो रङ्क भूकों मर गये॥
खोआ मलाईकी जगह सिगरट सलाई चाहिये।
घरकी बुराई चाहिये परकी भलाई चाहिये॥
व्यापारको हम बेचकर दरबार करते है सदा।
दुतकार सहते है सदा बेगार करते हैं सदा॥
कहिये हमे परदेशियोंने क्या कभी कुछ दे दिया?
हां लूटकर हमको उन्हें लेता बना सो ले लिया॥
फिर क्यों भला अपनी भलाईको करेंगे हम नहीं?
काला करेंगे कालका भी मुख हमें है ग़म नहीं॥
अन्यायका बदला हमें देना पड़ा है न्यायसे।
निरुपाय क्यों हो हम करेंगे कार्यको सदुपायसे॥
तलवार भाले और गोले गोलियोंका भय नहीं।
हम देख सकते दुर्जनोंके अब अधिक दुर्विनय नहीं॥
है तत्व कहनेका यही छलके विवश रहिये नहीं।
कहिये नहीं झूठे वचन, अपमानको सहिये नहीं॥

प्रतिबन्धकोंके बन्धनोंमें झूलकर मरिये नहीं।
होगी विजय, वध बन्धनोंसे आप यदि डरिये नहीं॥
रामचरित्त उपाध्याय।

श्रीतिलक स्तव-सप्तक।

[१]

जय बाल गङ्गाधर तिलक जय वीर भारत-केशरी।
जय लोकमान्य वदान्य महिमा है भुवन भरमें भरी॥
पण्डित प्रवर-नवयुग प्रवर्त्तक राष्ट्रके आधार जय।
जय पुण्य पारावार नैतिक, ज्ञानके भाण्डार, जय॥

[२]

जगमग जगतमें ज्योति यशकी है जगाती जीवनी।
मृत जातिको जीवित किया, दी शक्तिमय सञ्जीवनी॥
यद्यपि कुनीति कुचक्रकी, बन्धन लिये पीछे पड़ी॥
पर, दासताकी बेड़ियोंकी, काट दीं कड़ियां कड़ी।

[३]

भारत-तरणि यह डूब जाती, जो न होते साथमें।
लाये इसे तटपर तुम्हीं, पतवार लेकर हाथमें॥
गीता रहस्य प्रकाशसे, कर्त्तव्य-पथ दरसा दिया।
फिर लहलहाई कर्म्म-लतिका, वह अमृत बरसा दिया॥

[४]

गजराज दुःशासन पछाड़ा, भीम-बल मृगराज हो।
अन्याय, अत्याचार विहगोंको, लथाड़ा बाज हो॥
कण्टक-कुलिश समझे कुसुम सम, स्वर्ग कारागार को।
जयमाल समझे शीशपर, आती हुई तलवारको॥

[५]

जातीयतापर जान दी, जाने न अपनी आन दी।
दौड़ा रगोंमें रक्त फिरसे, छेड़ ऐसी तान दी॥
रवि-बालकी छवि लालिमा,तम-कालिमाको हर गयी।
है एक विद्युत्-शक्तिकी; धारा हृदयमें भर गयी॥

[६]

थे कर्मयोगी मर्म्मज्ञाता, धर्मके अवतार थे।
भारत-हृदय-सम्राट् थे, कर्तृत्वके कर्त्तार थे॥
भगवान्! बलदे, चरण-सेवक; चरण-चिन्होंपर चलें।
रोपे हुए यह नीतिके तरुवर, सदा फूलें फलें॥

[७]

साहस सुकृत बढ़ता रहे, प्रभुके पदोंके ध्यानसे।
पिछड़ें नहीं अनुचर तुम्हारे, स्वत्वके मैदानसे॥
जय भुवन-भूषण कुशलताके, 'केन्द्र' वन्देमातरम्।
जय तिलक त्रैलोक्यके, 'रसिकेन्द्र' वन्देमातरम्॥

स्वर्गीय संगीत।

पुण्य भूमि पावन परम, भारत जननि महान ।
त्रिंस कोटि कलकण्ठ मिलि गाओ जय जय गान ॥
गाओ जय जय गान देशपर तनमन वारो ।
ईर्षा द्वेष विहाय परस्पर प्रेम प्रचारो ॥
सत्पथपर दृढ़ रहो इष्टका ध्यान न छोड़ो ।
सबसे नाता तोड़ देशसे नाता जोड़ो ॥१॥
प्यारे भारतवर्षसे मेटो स्वेच्छाचार ।
अकर्मण्यता दूरकर नवजीवन संचार ॥
नवजीवन संचार शक्ति स्वातंत्र्य जगाओ ।
फैला ज्ञान प्रकाश तिमिर अज्ञान भगाओ ॥
बनो वीर रणधीर किसीसे भय मत खाओ ।
स्वाधिकार कर प्राप्त समुन्नत देश बनाओ ॥२॥
सत्य स्वदेशी व्रत करो बाल वृद्ध औ, बाम ।
धन, बल, श्री, सम्पन्न हो भारत पुनः ललाम ॥
भारत पुनः ललाम बने सब ही का प्यारा ।
बहे यहांपर देश प्रेमकी उज्वल धारा ॥
होल्करके सिरताज पुनः जगतीमें चमके ।
देके ज्ञानालोक विश्व भरमें यह दमके ॥३॥
द्वेष दम्भ अरु दीनता हो समूल निःशेष ।
[illegible] पड़ भूलें नहीं भाषा भाव स्ववेश ॥

भाषा भाव स्ववेश भारतीको अपनाओ।
भेद भावको भूल हृदयसे हृदय लगाओ॥
स्वारथका कर त्याग देश-सेवा मन लाओ।
स्वत्व सुधा कर पान जगतमें अमर कहाओ॥४॥
भारतवासी प्रेमसे करके स्वत्वाह्वान।
डटे रहो कर्तव्यपर करो देश उत्थान॥
करो देश उत्थान कला व्यापार बढ़ाओ।
भारत अवनतिग्रस्त समुन्नति-शिखर चढ़ाओ॥
उत्साही स्वाधीन बनो सत्कीर्ति कमाओ।
साहससे जय बोल उठो अब देर न लाओ॥५॥

हरिश्चन्द्र देव विद्यार्थी

स्वदेश-प्रेम

कहो कौन दुर्भाग्य जगतमें, मृतक-हृदय वह रहता है?
जोकि प्रेम, उत्साह, आश-युत, कभी न मनमें कहता है
"यह है मेरी जन्म भूमि, यह ही जननी हितकारी है,
"प्रिय 'स्वदेश' की प्रेम-कथा, हित-चितसे मुझको प्यारी है"
जब कि कभी वह दूर-देशसे, प्रिय "स्वदेश" को है आता।
कौन दुष्ट. वह. हृदय न जिसका उछल उछलकर उमड़ाता?

यदि ऐसा कृतघ्न, हत्यारा, भी कोई भूपर जीता—
कभी न जो, प्रिय-स्वदेश-रसको, हृद्‌घटमें भर भर पीता ॥ ४ ॥
तो, हे पाठक ! चिन्हित कर दो, उस खलको तुम ध्यान-सहित,
क्योंकि सुकविके ध्यान, गानसे, पृथक् रहै वह मान-रहित ॥५॥
कितना ही वह श्रेष्ठ कहावै, कितना ही बल-धारी हो—
हो यथेच्छ धन, जन, सम्पति सब, लक्ष्मी उससे हारी हो ! ॥६॥
किन्तु श्रेष्ठता और सुयश, धन, सब ही उसका निष्फल है ।
क्योंकि तुच्छ वह जीव ! सदा, स्वारथ-हित रहता वेकल है ॥७॥
जीवन भरमें, कभी न वह सुख, सुयश, सुकीरति पावेगा !
तन, धन, होगा नष्ट !! नाम मिट धरा धामसे जावेगा ! ॥८॥
मृतक-हृदय वह मिट्टीका—पुनि "मिट्टीमे मिल जाता है"
जो न 'शरण' नित प्रिय "स्वदेश" को, हित चितसे अपनाता है ॥६॥

रामशरण गुप्त "शरण" ।

कृषक-प्रतिज्ञा ।

निज देशके ही सामने हम सिर झुकायेंगे !
उसके लिये ही प्राणकी बाजी लगायेंगे !

(१)

है जानते औदार्य हम शासन सुधारका
पञ्जर पलाश पुष्पके रस-हीन हारका।

उसको न कभी भूलकर हम सिर चढ़ायेंगे !

निज देशके ही सामने हम सिर झुकायेंगे !!

(२)

दिन रात दैन्य दुःख सहे, सहे ताप दाप

तदपि हमें मनुज तक न समझ सके आप

अब आपको हम शक्तिसे सीधे बनायेंगे !

निज देशके ही सामने हम सिर झुकायेंगे !!

(३)

हम कोर्टें, पञ्चायतें अपनी बनायेंगे

झगड़े सभी अपने परस्पर ही मिटायेंगे

मर जायेंगे पर न्याय-हित तुम तक न आयेंगे !

निज देशके ही सामने हम सिर झुकायेंगे !!

(४)

प्रण है यही कि भूमि है सम्पत्ति देशकी !

भूस्वाधिपति किसान हैं सन्तति स्वदेशकी !

सम स्वत्व सम विधान हम सबको दिलायेंगे !

निज देशके ही सामने हम सिर झुकायेंगे !!

(५)

हम लूटना पसन्द करेंगे न किसीको,

हम "हिन्द" को भी लूटने देंगे न किसीको !

सत्याग्रही सच्चे रणस्थलको कंपायेंगे !

निज देशके ही सामने हम सिर झुकायेंगे !!

"निरंकुश"

वीरोद्बोधन,

भर भर वीरो वीर भाव निबलोंको बल दो।
दाल दमन दुर्दानवकी छातीपर दल दो ॥
कुण्ठित कोप कुठार क्रूर दलका होने दो।
अन्त असुरताके अनीति बलका होने दो ॥
वीरो प्रकटा दो वीरता-का वैभव संसारपर।
प्राणोंतकका बलिदान दो जन्मसिद्ध अधिकारपर ॥
पशुबलका प्राबल्य प्रदर्शित मत होने दो।
पारतन्त्र्य-पारुष्य प्रवर्द्धित मत होने दो ॥
निर्दयता निश्चरीको न जीवित रहने दो।
निरपराधियोंको न अधिक चोटें सहने दो ॥
मदहारी नरसिंहो जगो, देखो तो क्या हो रहा।
तुम सोते हो, भयभीत हो, देश कीर्तिधन खो रहा ॥
अगणित अत्याचार यहांपर मत होने दो।
पुनि पुनि प्रबल प्रहार यहांपर मत होने दो ॥
मद अन्धोंके मद प्रहार ही को ठहरा दो।
अपनी भी तो नर सिंहो कुछ कार दिखलादो ॥
अन्याय आकुतीपर प्रबल, न्याय खड्ग खटकाइये।
दुर्दान्त शत्रु-दलकी सकल सेना शान्त कराइये ॥

असहयोगिनी, शान्तिमयी सेना सजने दो ।
प्राणोंका कुछ भय न करो, निर्भय बजने दो ॥
दुखदायक दुर्दम्य दास्य बन्धन कटने दो ।
अपनी आंखोंसे न लक्ष्य अपना हटने दो ॥
वीरो मत सहते ही रहो, चोटें विषम प्रहारकी ।
निश्चय ठहरा दो अब कहीं असुर भाव संहारकी ॥
रोके रहो न रोष वीरताका परिचय दो ।
धर्म्म युद्ध कर खड़ा धीरताका परिचय दो ॥
ग्रहण करो मत शस्त्र निहत्थी लड़ो लड़ाई ।
अभी इसीसे रहो समझते देश भलाई ॥
जबतक अतिके आतङ्कका, अन्त निकट आता नहीं ।
वीरो तबतक वीरत्व गुण, गौरवता पाता नहीं ॥

—कर्ण ।

कारागार

है तू शान्ति-निकेतन मेरा, प्यारे कारागार सखे ।
जहां कृष्णने जन्म लिया था, किया कंस-संहार सखे ॥
है तू तीर्थ-स्थान मनोहर, परम पूज्यवर प्रेमागार ।
हो निर्भीक रहूंगा तुझमें, प्यारे कारागार अपार ॥

गान्धी शौकत तथा तिलककी, जहां हुई तपकी चर्य्या ।
वही धर्मका धाम धन्य तू, धन्य तुम्हारी परिचर्य्या ॥
भगवतकी वर भक्ति, और तू कर्म्मशक्ति है सिखलाता ।
ऋणी तुम्हारा हूं मै इसका, आत्मशक्ति पथ दिखलाता ॥
कम्बलको कोमल मानूंगा, और मृदुल भू शय्याको ।
कांछ जांघिया तङ्ग करूंगा, प्यारे कुंवर कन्हैयाको ॥
भारतनाथ जपूंगा निशिदिन, देशप्रेम रस पागूंगा ।
हे प्रभु रक्षा करो देशकी, यही नित्य वर मांगूंगा ॥
वर्षा, तप, हिम सहन करूंगा, और पहरुओंकी गाली ।
गुफा तपस्याकी वे होंगी, प्यारी कोठरियां काली ॥

— वैद्यनाथ गुप्त विद्यार्थी ।

—॰—

अनुकूल समय

(१)

पाकर भी अनुकूल समयको क्यों खोते हो ?
चरते हैं चीने मुकुन्द तुम क्यों सोते हो ?
उठकर पीछे हाय ! हाथ मल-मल रोओगे,
लाखों करके खर्च गया क्या फिर पाओगे ?
समय-रत्न नर जगतमें, गया कभी पाता नहीं ?
जिसपर भी अनुकूल है, हाथ पुनः आता नहीं ॥

(२)

उठो-उठो मल आंख नींद आलसको तोड़ो,
छोड़ो ईर्षा-फूट एकका नाता जोड़ो ।
अपने घरका काम आपसे कर दिखलाओ,
अपने पगसे चलो बन्धुको भी सिखलाओ ।
स्वावलम्ब ही विश्वके, मनुज मात्र हित श्रेय है ।
परावलम्बी जगतमें, कहलाता नर हेय है ॥

(३)

भरकर अपनी तोंद गुलगुले तोसक सोते ।
खुलनेपर निज नेत्र उदरको पुनः सजाते ।
टनफार सुन्दर भेष हवाखोरीको जाते ।
मित्र मिलनपर खूब ज़ोर कहकहे लगाते ।
बन बाबू इस रीतिसे, दिवस बिताते हो यहां।
हा देशदशा लखते नहीं 'विमल' बुद्धि जाती कहां ?

(४)

देश-बन्धुकी गिरी दशाको शीघ्र सुधारो ।
उठो-उठाओ अपना भी कर्तव्य विचारो ।
अपनी भाषा, भेष धरो गिटपिट मत बोलो ।
अपने पथपर चलो आंख अब भी तो खोलो ।
कोकिल पाती है नहीं यदि कौवेसे बोलमें
पर निज भाषा विमुख हो गिरी नहीं क्या तोलमें ?

(५)

जिसने अपना भेष और भाषा छोड़ा है,
खाकर मानो नशा हाथसे सिर फोड़ा है।
ले लेते सब चीज अन्य है उसके संगकी।
हर लेता है ज्ञान नशा झट उसके अंगकी।
देख-देखकर जगतमें उसको हंसते हैं सभी।
नशा-भङ्गपर आप ही वह भी रोता है कभी॥

—“ विमल ”

राष्ट्रीय संगीत

[१]

जगत शिरमौर रत्नाकर, हमारा देश भारत है।
मनोहर श्रेष्ठतम भूपर, हमारा देश भारत है॥

[२]

है सजला श्यामला, सफला, नदी महिमामयी जिसकी।
पताका विश्वसदन सुन्दर, हमारा देश भारत है॥

[३]

प्रकाशक पुण्य प्रतिभाका, पवित्रागार प्रभुतका।
यशाकर धर्म करणी घर, हमारा देश भारत है॥

[४]

हुई विकसित जहांपर सभ्यता, आरम्भमें अनुपम।
बली वीरेन्द्र विजयी वर, हमारा देश भारत है॥

[५]

अमर गण भी जहांपर जन्म, पानेको तरसते थे।
वही स्वर्गीय सुखमाहर, हमारा देश भारत है॥

[६]

हिमालय विन्ध्य मलयाचल, की मनहर दुर्ग मालाओं—
से, दुर्गम दुरधरष दुस्तर, हमारा देश भारत है॥

[७]

कलित कीरति कुमुद कमनीयका, निर्मल कलाधर जो।
सदा सतनीतिपर निर्भर, हमारा देश भारत है॥

[८]

जो अनुपम, उच्चतम आदर्श, का प्रियतम निकेतन है।
अजय, अघहीन अजरामर, हमारा देश भारत है॥

[९]

यहां, क्रियमाणके कल्याण-धारक प्राण-संचारक।
निश्चल निर्वाणका अनुचर, हमारा देश भारत है॥

[१०]

हमारा प्राणजीवन हर्ष, भावोत्कर्ष प्रद भारत।
सुन्दर सौभाग्य सुखसागर, हमारा देश भारत है॥

—गोमाराम धेनुसेवक।

वीर हृदय।

वीर-हृदय विचलित होवेगा विपत्तियोंसे कभी नहीं।
गीदड़-घुड़की देख सिंह क्या डर सकता है कभी कहीं?
विषम-मार्ग उसका सम होगा, कण्टक होंगे कोमल फूल।
विजय-मालिका उसे विपक्षी पहनावेंगे हो अनुकूल॥
प्राण रहेंगे जब तक तब तक तोड़ेगा प्रण वीर नहीं।
विजय प्राप्त करने तक रण-स्थल छोड़ेगा रण-धीर नहीं॥
कर्म-काण्डका कृती डिगा सकता उसको अरि-तीर नहीं॥
वह स्वतन्त्र व्रत व्रती बहा सकता उसका धन-नीर नहीं॥
साहसमें वह सबल सिन्धु है, दृढ़तामें अविचल गिरिराज।
उसमें हैं वीरत्व काल सा निर्भयताका वह सिरताज॥
वह है प्रतिभाकी प्रिय प्रतिमा पुण्य प्रेमका मूर्ति महान।
भक्ति व्यक्तिकी शक्ति मनोहर दुखी जनोंका निश्चल त्राण॥
उसके विमल सुयश सौरभसे सोये जन जग जाते है।
मुर्दोंमें जानें आ जाती भूले पथ पा जाते हैं॥
पराधीन स्वतन्त्र हो जाते अन्यायी अकुलाते है।
स्वार्थी दबते, न्यायी बढ़ते, निर्बल बल पा जाते हैं॥
हे भगवान वीर-हृदयोंसे भारतको कर दो भरपूर।
उसके खून भरे घावोंकी कुछ तो हों पीड़ाएं दूर॥
जानें कब प्रतापकी प्रतिभा प्रभा यहां दिखलाओगे?
वीर-हृदय दिखलाकर जगको वह आदर्श बताओगे॥

—निर्भर।

अभिलाषा

मेरी जां न रहे मेरा सर न रहे सामां न रहे न ये साज़ रहे।
फक़त हिन्द मेरा आज़ाद रहे माताके सरपर ताज रहे॥
पेशानीमें जिसके सोहे तिलक औ गोदमें गान्धी विराज रहे।
न ये दाग बदनमें सुफेद रहे न तो कोढ़ रहे न ये खाज रहे॥
सिख हिन्दु मुसल्मां एक रहे भाई भाईसा रस्मो रिवाज़ रहे।
गुरु ग्रन्थ कुरान पुरान रहे मेरा पूजा रहे औ नमाज़ रहे॥
मेरी टूटी मड़ैयामे राज रहे कोई गैर न दस्तन्दाज़ रहे।
मेरी बीनके तार मिले हो सभी एक भीनी मधुर आवाज़ रहे॥
ये किसान मेरे खुश हाल रहें पूरी हो फसल सुख साज रहे।
मेरे बच्चे वतनपै निसार रहें मेरी मा बहिनोंमें लाज रहे॥
मेरी गायें रहे मेरे बैल रहें घर घरमे भरा सब नाज रहे।
घी दूधकी नदिया बहती रहे हरसू आनन्द स्वराज रहे॥
माधोकी है चाह खुदाकी क़सम मेरे बाद वफ़ातये बाज़ रहे।
गाढ़ेका कफ़न हो मुझ पै पड़ा वन्देमातरम् अलफ़ाज़ रहे॥

—माधवशुक्ल।

देश-संकट-मोचन

अंधेरा घटा-टोप घनघोर, किन्तु बिजलीकी रेखा एक।
ले चली हमें इष्ट पथ ओर, विपदमें दृढ़ता विमल विवेक॥

वीर हृदय ।

वीर-हृदय विचलित होवेगा विपत्तियोंसे कभी नहीं ।
गीदड़-घुड़की देख सिंह क्या डर सकता है कभी कहीं ?
विषम-मार्ग उसका सम होगा, कण्टक होंगे कोमल फूल ।
विजय-मालिका उसे विपक्षी पहनावेंगे हो अनुकूल ॥
प्राण रहेंगे जब तक तब तक तोड़ेगा प्रण वीर नहीं ।
विजय प्राप्त करने तक रण-स्थल छोड़ेगा रण-धीर नहीं ॥
कर्म-काण्डका कृती डिगा सकता उसको अरि-तीर नहीं ॥
वह स्वतन्त्र व्रत व्रती बहा सकता उसका धन-नीर नहीं ॥
साहसमें वह सबल सिन्धु है, दृढ़तामें अविचल गिरराज ।
उसमे हैं वीरत्व काल सा निर्भयताका वह सिरताज ॥
वह है प्रतिभाकी प्रिय प्रतिमा पुण्य प्रेमका मूर्ति महान ।
भक्ति व्यक्तिकी शक्ति मनोहर दुखी जनोका निश्चल त्राण ॥
उसके विमल सुयश सौरभसे सोये जन जग जाते हैं ।
मुर्दोंमें जाने आ जाती भूले पथ पा जाते हैं ॥
पराधीन स्वतन्त्र हो जाते अन्यायी अकुलाते है ।
स्वार्थी दबते, न्यायी बढ़ते, निर्बल बल पा जाते हैं ॥
हे भगवान वीर-हृदयोंसे भारतको कर दो भरपूर ।
उसके खून भरे घावोंकी कुछ तो हों पीड़ाएं दूर ॥
जानें कब प्रतापकी प्रतिभा प्रभा यहां दिखलाओगे ?
वीर-हृदय दिखलाकर जगको वह आदर्श बताओगे ॥

—निर्बल ।

अभिलाषा ।

मेरी जां न रहे मेरा सर न रहे सामां न रहे न ये साज़ रहे ।
फक़त हिन्द मेरा आज़ाद रहे माताके सरपर ताज रहे ॥
पेशानीमें जिसके सोहे तिलक औ गोदमें गान्धी विराज रहे ।
न ये दाग़ वदनमें सुफ़ेद रहे न तो कोढ़ रहे न ये खाज रहे ॥
सिख हिन्दु मुसल्मां एक रहे भाई भाईसा रस्मो रिवाज़ रहे ।
गुरु ग्रन्थ कुरान पुरान रहे मेरा पूजा रहे औ नमाज़ रहे ॥
मेरी टूटी मड़ैयामे राज रहे कोई ग़ैर न दस्तन्दाज़ रहे ।
मेरी बीनके तार मिले हो सभी एक भीनी मधुर आवाज़ रहे ॥
ये किसान मेरे खुश हाल रहें पूरी हो फसल सुख साज रहे ।
मेरे बच्चे वतनपै निसार रहें मेरी मा बहिनोंमे लाज रहे ॥
मेरी गायें रहे मेरे बैल रहें घर घरमे भरा सब नाज रहे ।
घी दूधकी नदिया बहती रहे हरसू आनन्द स्वराज रहे ॥
माधोकी है चाह खुदाकी क़सम मेरे बाद वफ़ातये बाज़ रहे ।
गाढ़ेका कफ़न हो मुझ पै पड़ा वन्देमातरम् अलफ़ाज़ रहे ॥

—माधवशुक्ल ।

स्वदेश-संकट-मोचन

अंधेरा घटा-टोप घनघोर, किन्तु बिजलीकी रेखा एक ।
ले चली हमें इष्ट पथ ओर, विपदमें बढ़ता विमल विवेक ॥

समन्दरकी लहरोंमें बहे, मगर रुख था साहिलकी ओर।
पार होकर ही आखिर रहे, यातना झेली यद्यपि घोर॥
भयङ्कर आंधीमें पड़ गये, उड़े पर ता भी दैव-वशात्।
कदम मंजिल ही पर गड़ गये; देर भी लगी बातकी बात॥
दैवके द्रोहानलमें पड़े, बचे बन कर प्रेमी प्रल्हाद।
सामने हरि आकर थे खड़े, अमर वर देते आशीर्वाद॥
नहीं कुछ इसका मुझको श्रेय, किन्तु यह देश प्रेमका भाव।
दिखाता रहा सदा ध्रुव ध्येय, इसीने पार लगायी नाव॥
दमनका उमड़ा था दरियाव, जर्जरी नाव विकट तूफान।
नहीं आता था दृष्टि बचाव, हर तरफ मुंह बाये शैतान॥
प्रेमियोंकी थी शक्ति अटूट, वही फिर लायी मुझको खींच।
यहां तो नब्ज गयी थी छूट, उन्होने दिया सुधासे सींच॥
कहांके कष्ट कहांका क्लेश, आ गया सन्मुख जब उद्देश।
नहीं रहता चिन्ताका लेश, सुखी होवे सब भांति स्वदेश॥
आह यह आशाओंका केन्द्र, और विपदाका विद्युत पात।
आह यह मनका महा महेन्द्र, और निर्धनताका उतपात॥
किन्तु है सोनासा कस गया, खरापन लिया गया है जांच।
सभीके हृदयोंमे बस गया, 'सनेही' नही सांचको आंच॥

—"सनेही"

आओ !

[१]

आओ सभी समरांगणमें, रख धैर्य हृदयमें आओ ।
आओ अब कर्मवीर बनकर, शुभ शौर्य हृदयमे लाओ ॥
आओ प्रोत्साहित होकर सब, निज दुःख दशा न भुलाओ ।
आओ बोलो भारतकी जय, आओ निज मान बचाओ ॥

[२]

आओ आओ दौड़ पड़ो अब, आओ जननि पुकार सुनो ।
आओ जो था बोया तुमने, उसको सभी सहर्ष लुनो ॥
आओ रख जान हथेलीपर, मां हित सर्वस्व गंवाओ ।
आओ अब पावन वेदीपर, निज शीश सहर्ष चढ़ाओ ॥

[३]

आओ पग पीछे नहीं हटाओ, अग्निकुण्डमें कूद पड़ो ।
आओ मांके हित तुमुल युद्धमें, तनसे मनसे खूब लड़ो ॥
आओ वीणा सम बेड़ी अब, पद करसे खूब बजाओ ।
आओ बन्दीगृहको मिलकर, सब स्वर्ग समान बनाओ ॥

—'रसिकेश' ।

स्वतंत्रता देवीका गुणगान.

हे स्वतन्त्रते देवि ! आपको, आर्य जाति हम करें प्रणाम ।
आर्योंकी आराध्य देवते ! तुम हो पुण्य राशि सुख धाम ।
माता अविचल भक्ति तुम्हारे, चरण कमलमें बनी रहे ।
भारतसुत निज उत्तमांग पर, तव पद पद्म पराग लहे ॥१॥
जिस अद्भुत छविके दर्शनको, चित्त हमारा रहा भ्रमा ।
क्यों न हमारे लोचनपुटमें, दिव्य ज्योति वह जाय समा ॥
देखेंगे अभिराम रूप कब, तृप्ति स्वान्तको कब होगी ।
उन्मीलन मीलनका प्रमुदित दृष्टि धर्म निज खो देगी ॥२॥
ससती अब्दोंकी बीती, भारतसे तुम हो रूठी ।
विदेशियोंका स्वागत करकर, इसकी सब सम्पति लूटी ॥
पराधीनता पिशाचिनीके-बन्धनमें हम जकड़े हैं ।
उसके पीवर हाथ हमारे-निर्बल तनुको पकड़े हैं ॥३॥
पाश्चिमात्य देशोंमें जननी, जबसे तुमने गमन किया ।
अमेरिका इङ्गलैंड, फ्रांसको, घर जबसे है बना लिया ॥
आर्य भूमिकी हुई दुर्दशा-हे माता तबसे भारी ।
प्लेग गुलामीकी दासोंने-भारतकी कर दी ख्वारी ॥४॥
पराधीनताकी रूपान्तर-परसत्ता कहलाती है ।
असली रूप छिपा भारतके अज्ञोंको फुसलाती है ॥
सच्ची हितू बता अपनेको, कपट जाल फैलाया है ।
कुलाभिमान देश गौरवको- अर्धचन्द्र दिलवाया है ॥५॥

आर्यपुत्र हम राष्ट्र गठनका-भूल गये सिद्धान्त महान् ।
हालत निज देशकी समझने-का न रहा हमको है ज्ञान ।
देशभक्तिसे वञ्चित हा ! हम-अविवेकी कहलाते हैं ।
अनहितको अति हितकर मानें, हितमें अनहित पाते हैं ॥६॥

कृपा कटाक्ष तुम्हारा जननी !--नहीं जाति जिसपर होता ।-
विदेशियोंके दास्य भावमें-सर्वनाश उसका होता ॥
अमेरिकाकी गैर जातिके, पारतन्त्र्यमें पड़ी हुई ।
रक्त-इण्डियन बर्बर जाती नामशेष जग बीच हुई ॥७॥

स्वतन्त्रतेजीमूत ! क्यो नही-सुधावृष्टि बरसाते हो ।
पारतन्त्र्यका वृक्ष जवासा-क्यों न शीघ्र मुरझाते हो ॥
कृपा स्वातिकी बूंद तुम्हारी-अगर शीघ्र नहिं पावेगा ।
तो अब आर्य देश चातक-यह कथा शेष हो जावेगा ॥८॥

पारतन्त्र्य-दुर्गन्धि विनाशक-परिमल मधुर प्रचारी हो ।
स्वतन्त्रते ! तुम कुसुम कोकनद्-की प्यारी फुलवारी हो ॥
तव मकरन्द तृषित यह भारत-भ्रमर महा दुःख पाता है ।
प्यासे अलिकी प्यास बुझाना-किसलयका यह नाता है ॥९॥

स्वतन्त्रते शीतांशु ! तुम्हारा-शुभ दर्शन कब पावेगा ।
प्रेम नीरका ज्वार मुदित कब-भारत उदधि बढ़ावेगा ?
प्रलय कालका उग्र रूप धर-कान्तिवीचि लहरावेगी ।
पराधीनता पिशाचिनीको-कब पाताल पठावेगी ॥१०॥

पराधीनता पिशाचिनीके-पदाघात उरमें करती ।
रूले उसके केश पकड़कर-तीक्ष्ण खड्ग गलपर धरती ॥

इस दुष्ट सर्व नाशको, ऐसा-तुम अवतार धरो।
भव्य रूप यह दिखा हमारे-जीवनको चरितार्थ करो ॥११॥
उग्र प्रकम्पन रूप धारकर-भारतमें कब आओगी ?
पारतन्त्र्य विष विटपीको-कब जड़से तोड़ गिराओगी ?
भारतमें इसकी जड़ आयत, है गहरी अति पैठ रही।
उन्मूलन उसको करनेका-क्या माना ! तव धर्म नहीं ॥१२॥
पारतन्त्र्यका तिमिर विनाशक-वह तेरा अतिभव्य स्वरूप !
भारतवासी किसलय कुलको-कब देगा आनन्द अनूप ?
हे देवी ! कर सम्पुट कर कब-तव पद शीश नमावेंगे ?
भारतमें स्वागत तव करते-फूले नहीं समावेंगे ॥१३॥
स्वतन्त्रते रत्नाकर ! कब तुम-भारत तट लहराओगे ?
भूषण हीन गले उसके कब-मुक्तमाल पहनाओगे।
पराधीनता पिशाचिनीको हालाहल न पिलाते हो !
क्यों न डूबते आर्य देशका-बेड़ा पार लगाते हो ॥१४॥
—किशोरसिंह बारहट्ट।

क्या है ?

मेरी तरफ़से यह बद ख़याली, न जाने उसका ख़याल क्या है ?
। नज़र मिलावें, न मुहंसे बोलें, ख़ुदा ही जानें मलाल क्या है ?

इसी तमन्नामें मर मिटे हम, कि जख्म दिलपर लगेगा मरहम,
मगर न पूछा यह उसने इकदम, मरीजे गम, तेरा हाल क्या है ?
वतन पै शैदा, वतन पै मफतूं, वतन है लैली, हुआ हूं मजनूं,
हकूक अपने ही चाहता हूं बस, और मेरा सवाल क्या है ?
इधर रहे रास्ती पै कायम, न जान जानेका कुछ भी है गम,
उधर चढ़ी त्योरियां हैं पैहम, खुदा ही हाफिज, जमाल क्या है ?
दरे मुहब्बतका जो गदा हो, मुसीवतोंसे घिरा हुआ हो,
जो खुद ही फाकोंसे मर रहा हो, उसे जो मारा, कमाल क्या है ?
हजार आफत हो लाख मुश्किल, कभी न घबराओ हजरते दिल,
पहुच ही जाओगे ता बमंजिल, जनूब क्या है, शुमाल क्या है ?
जो काम करना खुशीसे करना, मुसीवतोंसे कभी न डरना,
जो कुछ नतीजे हैं मिल रहेंगे, जुदाई कैसी, विसाल क्या है ?

—"मेहरोत्रा"

कलि-वेदीका सन्देश

नहीं लिया हथियार हाथमें, नहीं किया कोई प्रतिकार ।
"अत्याचार न होने देंगे"—वस, इतनी ही थी मनुहार ॥
सत्याग्रहके सैनिक थे ये,—सब सहकर, रहकर उपवास ।
वास वन्दियोंमें स्वीकृत था,—हृदय-देशपर था विश्वास ॥
मुरझा तन था, निश्छल मन था, जीवन ही केवल धन था ।
मुसलमान-हिन्दू-पन छोड़ा, वस, निर्मल अपनापन था ॥

मन्दिरमें था चांद चमकता. मसजिदमें मुरलीकी तान।
मक्का हो, चाहे वृन्दावन, होते आपुसमें कुर्बान ॥
रूखी रोटी दोनों खाते,-पीते थे गङ्गाका जल।
मानो मल धोनेको पाया, उसने अहा! उसी दिन बल ॥
गुरु गोविन्द! तुम्हारे बच्चे-अब भी तन चुनवाते हैं, -
"पथसे विचलित न हो,"-अहा! गोलीसे मारे जाते हैं ॥
गली गलीमें अली अलीकी गूंज मचाते, हिलमिल कर।
मारे जाते,-कर न उठाते, - हृदय चढ़ाते खिलखिल कर ॥
कहो! करें क्या, -बैठे हैं हम, —सुनें मस्त आवाजोंको।
धोते हैं रावीके जलसे हम इन ताजे घावों को ॥
रामचन्द्र, मुखचन्द्र तुम्हारा घातकसे कब कुम्हलाया।
तुमको मारा नहीं वीर! अपनेको उसने मरवाया ॥
जाओ. जाओ, जाओ,—प्रभुको पहुंचाओ स्वदेश सन्देश!
गोलीसे मारे जाते हे भारतवासी. हे सर्वेश ॥
रामचन्द्र, तुम कर्मचन्द्र-सुत बनकर आजाओ सानन्द।
बार बार मरकर दिखलाओ आर्यों का आत्मिक स्वच्छन्द ॥
चिन्ता है होवे न कलङ्कित हिन्दू धर्म पाक इस्लाम।
गावें दोनों सुध बुध खोकर या अल्ला, जय जय घनश्याम ॥
स्वागत है, सब जगती तलका, उसके अत्याचारोंका,—
अपनापन रखकर स्वागत है उसको दुर्बल मारोंका ॥
हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य बनाया, स्वागत उन उपहारोंका।
मर मिटनेके दिवस रूप धर आवेंगे त्यौहारोंका ॥

गोलीको सह जाओ, जाओ ! प्रिय अब्दुल करीम, जाओ !
अपनी बीती हुई खुदातक, अपने बनकर पहुंचाओ !

× × × ×

क्यों मारा ? हा ! हा !! क्यों तोड़ी ईसाकी प्यारी प्रति मूर्ति ?
भारतमें कर डाली तुमने नस नसमें बिजलीकी स्फूर्ति ॥

— "भारतीय आत्मा"

तुम

[१]

दुनियाको हम चक्कीमें ला, मिट्टीमें आज मिला सकते ।
लाखोंकी खून-खराबी कर, मुंसिफ बांके कहला सकते ॥
अपना आतंक ज़मानेको, बच्चे तक हम कटवा सकते ।
बरवीर सिपाही कहलाकर, दुनियासे पद चटवा सकते ॥

[२]

तुम आश्रित हो, क्यों उठते हो ? बस दबे रहो, हां पिसे चलो ।
हम मालिक हैं, जो जुल्म करें सो सहो नाक मुंह घिसे चलो ॥
हम मा हैं 'माहुर' देनेको, हैं बाप तुम्हें बलि करनेको ।
शिक्षक हैं तुम्हें सड़ानेको रक्षक हैं इज्जत हरनेको ॥

[३]

तुम हमसे कहीं न बढ़ जाओ, यह धुन निशिदिन मनमें रहती ।
परतन्त्र रहो, स्वाधीन न हो, येही लहरें उरमें बहती ॥

तुम काले रङ्गके होकर भी, हमसे समता करने चलते ?
हां, कुली कवाड़ी कहलाकर शाही बाना धरने चलते ?

—'नृसिंह'

कृषक-विलाप

दीनवन्धु भगवान, कहो हम किसे पुकारें ।
तुम्हीं बता दो, नाथ ! किस तरह धीरज धारें ॥
ले लेकर अवतार दैत्य तुमने संहारे ।
निठुर बने क्यों नाथ ! देखकर हाल हमारे ॥
विकट समय है आ गया, दया दृष्टि करते न क्यों ?
मरनेमें क्या देर है ? दुःख क्लेश हरते न क्यों ?
बिना वस्त्रके नाथ ! बने नंगे लुच्चे हैं ।
मरें भूखसे तड़प तड़प प्यारे बच्चे हैं ॥
टका नही है पास अधम कङ्गाल हुए हैं ।
समय फेरसे नाथ ! और ही हाल हुए हैं ॥
घायलसे हम हो रहे, जर्जर हुए शरीर हैं ।
रोके अब रुकते नहीं, लोचनके यह नीर हैं ॥
दयाधाम हे नाथ ! दया धारा बरसाओ ।
एक बार कर कृपा स्वयं रक्षा हित आओ ॥
बहुत सह चुके क्लेश और अब सहा न जाता ।

प्रभु अब रक्षा कीजिये तव चरणोंमें लीन हैं।
काटो यह दुख-फन्द सब सभी तरहसे हीन हैं॥

—"गुलाब"

कैदीको मुबारकबादी

(१)

दिलको थामे हुए तू शायके-बेदाद हुआ।
जेल जाते हुए न कुछ भी तू नाशाद हुआ।
देखा दुनियाने कसौटी पै खरा तू निकला।
कौमी आजादीके जोशोंसे भरा तू निकला॥

(२)

वलवला जोशे-वतनका जो तेरे दिलमें था।
मच रहा कबसे शोर हुक्मरां-महफिलमें था।
मुल्की खिदमतसे फकत तुझको मगर प्यार रहा।
कुछ भी किसी अवरूके खमसे न सरोकार रहा॥

(३)

था कमरवस्ता तर्के राहमें चलनेवाला।
पैर बढ़ा करके तू पीछे न पिछड़नेवाला।
साहबे—होश था तू कौमका सौदाई था।
भूले भटकोंके लिये एक रहनुमाई था॥

(४)

फर्ज तेरा जो रहा उसको अदा तूने किया।
जो कुछ कि दिलने कहा उसको सदा तूने किया।
डट गया वक्त पै सरको न झुकाया तूने।
शिद्दते—जेलको खुश होके बुलाया तूने॥

(५)

खेल जो खेल रहे हैं हमारी शानोंसे।
नीम—वहशीकी तरह मुल्कके दीवानोंसे।
उनको 'गुलजार' यह भी खेल मुबारक होवे।
जेलको तू हो, तुझे जेल, मुबारक होवे॥

—देवीप्रसाद गुप्त, बी० ए० एल० एल० बी०

दो दो बातें

तुम्हारा शेवा है दिल दुखाना ही गोया शामोसहर हमारा।
जो जुल्म तुमने किये है हमपर वह जानता है जिगर हमारा॥
तुम्हें है गर शौक मारनेका तो यां भी मरनेकी है उमङ्ग।
उठाओ खञ्जर, दिखाओ जौहर, जुदा करो तनसे सर हमारा॥
उधर उठायी है तेग तुमने इधर झुकायी है हमने गर्दन—
कि आज मैदांमें इमतिहां है उधर तुम्हारा, इधर हमारा॥

यह बुर्दबारी यह नेकनियती यह पाकबाजी हमारी देखी ?
कि तेरे जिन्दां मे किस खुशीसे गया है शेरे बबर हमारा ॥
सता ले जितना सता सके तू, जला ले जितना जला सके तू।
मजा चखायेगा तुझको जालिम ! यह नाल-ए पुर असर हमारा
तुम अपनी जिदपर डटे हुए हो तो हम भी हैं अपनी धुनके पक्के
तुम्हारी गोली, तुम्हारा खञ्जर. हमारा सीना सिपर हमारा ॥

-- राहत

तर्पण प्रतिज्ञा ।

(१)

भारतीय बेड़ेके सुयोग्य कर्णधार, नीति—
कौशल किशोरको छिपा लिया अंधेरेने !
भूमि निराधार हुई, दिग्गज चिग्घार उठे,
शेषनाग फांस लिया "विषम" संपेरेने !
हाय ! कहां, धीर "लोकमान्य ?" रे कराल काल !
क्यो न तुझे आज ग्रहा प्रलय ठठेरेने !!
दीन देश हो गया अनाथ, आंख मीचते ही,
रत्नकी महान निधि लूट ली लुटेरेने !!!

(२)

नाम सुनते ही, कांप जाते थे विरोधी वृन्द,
रक्त सूख जाता 'व्यूराक्रेसी' की भुजाओंका !

नींदमें भी चौंक चौंक उठते स्वराज्य-शत्रु,

बड्ड उड़ जाता राम-रह्नकी कथाओंका !

"लोकमान्य बाल" मुख चन्द्र देखते ही हिन्द,

-कुरु-वन, जाता बन नन्दन लताओंका !

हाय ! गुरु "तिलक !" तुम्हारा क्या वियोग हुआ,

हो गया वियोग, प्राण-उच्च भावनाओंका !!

[३]

कौन, आज देश-हित, जेलमें स्वदेशव्रत-

बैठा बैठा कर्मयोग बांसुरी बजावेगा ?

कौन, मृत भारतीय-मनोंमें, विकार हटा,

जीवन-सुधाका स्रोत नूतन बहावेगा ?

कौन इङ्गलैण्ड तक, स्वराज्यका निशान लिये,

मान मातृभूमिका विदेशोंमें बढ़ावेगा ?

तन, मन, धाम, धन, कौन, "श्रीतिलक" बिना,

मोदसे स्वतन्त्रताके चरण चढ़ावेगा ?

(४)

वृद्ध मृगराज सम, वृद्ध था तथापि युवा -

केसरी समान मत्त यूथपका काल था !

'द्रोण' था दरिद्रतामें, 'भीष्म' था पवित्रतामें;

'कंस'-- अनुयायियोंके लिये 'नन्दलाल' था !

दानी 'रविनन्द' सम. मानी था 'सुयोधन' सा,

अविचारियोंके लिये 'वीर छत्रशाल' था !

ज्ञानका 'कुबेर' रण भूमिका 'सुमेरु', शैल,

"भारत तिलक" सारे भारतकी ढाल था !!

[५]

छोड चल दिये हो यद्दपि, तात ! आप हमें,

किन्तु सह अधिक-वियोग न सकेंगे हम !

आनेको तुम्हारे पास, देख देख पद-चिन्ह

राष्ट्रीय प्रेम पगे पथिक बनेंगे हम !

ढेर बलिदानोके लगाके स्वर्गराज्य तक,

सुन्दर सोपान कर्तव्यके चुनेंगे हम !!

देशकी स्वतन्त्रताकी दुन्दुभी बजाते हुए,

स्वर्ग हीमें गीताके परायण सुनेंगे हम !!!

" राष्ट्रीय पथिक"

अकल-कांक्षा।

(१)

जगदम्बे ! दुर्बल जीवन यह, मैं भी कुछ उत्सर्ज्जन पाऊं ।

स्मिति चमके, दमके आनन, उन्नति-पादपपर चढ़ जाऊं ॥

सुख- मूलमयी, वात्सल्यमयी, स्वातन्त्र्य स्ववीणा झनकाऊं ।

अटवीपर प्रेम-कुटीर सजे, मैं नूतन अभिनय दिखलाऊं ॥

[२]

थर्रा डालूं अम्बर तिल तिल, वैजन्ती मेरी फहरावे।
कम्पा डालूं संसार-श्वसन, सुखकी मेरी चिड़िया छावे॥
नटवरकी बाज उठे-वंशी, काली-करालिनी तू बन जा।
वसुधा स्वागत करने आवे, मां मुण्ड-मालिनी तू बन जा॥

[३]

फिर देखें कौन सम्हलता है, आवे जीवन रणमें आवे।
मैं नूतन-शक्ति दिखाऊं, मेरी दिव्य प्रभा जगमें छावे॥
मानव कंकाल बधाई दें, आवें वह वीर पुरोगम हो।
करमें सत्आयुध ले धावें, नवजीवन-ज्योति दमादम हो॥

[४]

वर्षोंसे दीन-दशा ये मां! मैं इसी तरह अकुलाता हूं।
करुणा-मय हस्त बढ़ा दे, अब यह जीवन भेंट चढ़ाता हूं॥
नवजीवन और नवबल दे, नव स्वत्व मिले पलटे काया।
अर्चाका नव-वरदान मिले, तू भूल न जा ममता-माया॥

—"गुलाब"

नवयुगका स्वागत

[१]

उठो उठो सब वीर देख लो नवयुग आया।
तिमिर हटाकर प्रखर सूर्य्यकी लाली लाया॥

अपना प्रखरित प्रभा-पूर्ण आलोक दिखाया।
व्यथित आत्माओंका हृदय-कमल विकसाया॥
है अन्धकारका नाम क्या, दिव्य ज्योति जगने लगी।
दूर हुई अविवेकता, कुमुद-कली खिलने लगी॥

[२]

हे नवयुग! किस भांति करूं तव आगत स्वागत।
बहुत दिनोंपर हुआ तुम्हारा यहां नवागत॥
सभी आत्माएं थीं उत्सुक और हताहत।
था विरोधियोंके कारण मर्माहत भारत॥
अब द्रवित हृदय उनका हुआ, करते पश्चाताप हैं।
निज भूलोंको याद कर, उन्हें स्वयं त्रयताप हैं॥

—जलेश्वरप्रसाद सिंह।

दुष्काल-यातना।

[१]

यह कराल-दुकाल जैसा आ पड़ा,
था न पहले भी कभी ऐसा हुआ।
हैं जिधर ही देखते सुनते यही,
"हाय ईश्वर! यह समय कैसा हुआ॥"

(२)

मर रहे लाखों करोड़ों भूखसे,

हैं अनेकों वस्त्र बिन नङ्गे खड़े।

अस्थि पञ्जर मात्र ही कितने कहीं,

देहमें चिथड़े लपेटे हैं पड़े॥

(३)

नेत्र भीतर खोड़रोंमें जा घुसे,

हैं दिखाते दूरसे जो कूपसे।

पेट पीठोंसे मिले ऐसे सटे,

जान पड़ते जो पुराने सूपसे॥

(४)

हैं लड़पते देखिये बच्चे यही,

भूखसे लोटन कबूतरसे बने।

हो रहे हैं घोर हाहाकार हा ?

पा रहे हैं देश दुःख-सङ्कट घने॥

[५]

वस्तु भी रहते यहां कोई कहीं;

दाम भी देते नहीं जी खोलकर।

क्या करें कैसे वितायें यह घड़ी,

है नहीं कोई बताता बोलकर॥

[६]

जो किसीके पास भी कुछ है अगर,

वह बचाता वक्त औरोंका नहीं।

मुह चढ़ाकर बैठ रहता दूरसे,
बात क्या करता सबोंसे वह कहीं ॥

[७]

अब बड़ोंकी क्या बड़ाई रह गयी,
जब पथिक भूखे रहे आ द्वारपर ।
हाथ मलता ही बड़ा हो रह गया,
क्या करे जब कुछ नहीं है हाथपर ॥

[८]

हे दयामय दीन-दुख-भञ्जन हरे,
आ बचाओ दीन-दुखियोंको यहां ।
या "दयामय" नाम अपना छोड़ दो,
सङ्ग-दिल होकर रहो चाहो जहां ॥

—"विमल" ।

कर लेने दो वार।

कर लेने दो वार उन्हें, अपना अरमान मिटाने दो ।
हटनेके हैं वीर नहीं, आफतपर आफत आने दो ॥
समझा होगा बड़े लोग हैं, जेलोंसे डर जायेंगे ।
क्षमा प्रार्थना कर लेंगे, बस धमकीमें आ जायेंगे ॥

दें आशा यह छोड़, देख लें शूर सामने आते हैं।
होंगे जो दो चार भीरु, वे खुद ही निकले जाते हैं॥
झूठा मोह न अब लड़कोंका, वृद्ध पिता दिखलाते हैं।
देश धर्मपर बलि होना सुन, सुनकर खुशी जनाते हैं॥
सच्ची पुत्रवती अपनेको, माताएं अब मान रहीं।
भारतके हित सन्तानोंको, कर सहर्ष वे दान रहीं॥
वीर पत्नियां भी कहती हैं, "सुखसे जाओ प्राणपते!
'कृष्ण भवन' में आप रहेंगे, तबतक चरखा इधर कते"॥
कष्ट कहांतक पहुचायेंगे, जी भरकर पहुचाने दो।
मिट्टी मिले हुए आटेकी, रोटी खूब खिलाने दो॥
कोमल करकमलोंसे श्रमके सारे काम कराने दो।
रस्सीको बटवाने दो, या चक्की ही पिसवाने दो॥
सब कुछ सहनेको उद्यत हैं, बनकर स्यार न भागेंगे।
मरते मरते मर जायें, पर सिंह स्वध्येय न त्यागेंगे॥
नाना नीर प्रलोभन हो, नर चातक एक न चाहेंगे।
स्वाति स्वराज्य सुधारस लेंगे, 'निश्चल'-टेक निबाहेंगे॥

—"निश्चल"

असहयोगी

आती हैं यदि विपुल दुखोंकी घटा घोर घिर आने दो,
परम कंटकाकीर्ण विघ्न बाधाओंको हां! आने दो।

अनय, अनीति, स्वार्थसे जगमें अन्धकार छा जाने दो,
पशु-बलको उस सत्य, न्यायपर क्षणिक विजय पा जाने दो ॥
कस लो होकर मुदित लोह-लड़ियोंसे तुम बन्धन सारे,
निर्दोषोंको बांध खूब चमका लो उन्नतिके तारे।
या दिखलाओ विविध प्रलोभन, कुटिल नीतिसे चलकर चाल;
किन्तु न हम सहयोग करेंगे हो चाहे कुछ भी वेहाल ॥
प्यारी वेड़ी, हथकड़ियो! करते हैं तव स्वागत हम आज,
क्या तुमसे ही रही कभी थी मोहनकी जननीकी लाज?
कारागृह! है देवालय, या है नटवरका अभिनय - क्षेत्र,
अहा! आज यह असहयोगियोंका है पावन कर्म – क्षेत्र ॥
ठहरो! ठहरो!! बढ़े कहां आगेको चलते जाते हो?
करके निर्भय सिंह—नाद क्यों विश्व कंपाते जाते हो?
आगे है उस स्वार्थ दुर्गके अनी खड़ी रिपु वीरोंकी,
निवलोंके ऊपर गोले वर्षानेवाले वीरोंकी ॥
स्वत्व-प्राप्तिके लिये शान्तिमय करनेको जाते है क्रान्ति,
यदि कहते हो रक्तपातका समर इसे, तो है उद्भ्रान्ति।
हैं खाली ही हाथ, यहां वर्छी भालोंका काम नहीं ॥
है यह सारा खेल आत्म—बलका गोलोंका नाम नहीं ॥
यदि महान आत्मिक बलका वह दमन करें हथियारोंसे।
नभ—मण्डलसे वायु-यान द्वारा गोलोंकी मारोंसे।
तो सहर्ष हम सहन करेंगे, जीवन वेदीपर हो बलि,
अर्पणकर प्रिय भारत—जननीके चरणोंमे पुष्पाञ्जलि ॥

रहे ध्यान यह किन्तु हमारा तो जीवन विजयी होगा,
शठता और क्रूरतापर हां! सत्य—न्याय विजयी होगा।
है शुचि आत्मिक शक्ति विश्वमें अजय, दानवी पशुबलसे,
असुरोंकी उस निशाचरी मायाके मिथ्या कौशलसे॥
हम सबका है ध्यान यही, अरमान यही, अभिमान यही,
पावन प्यारी श्रीमातृ-भूमिका मान यही बलिदान यही।
तान यही जीवन-वीणाकी आओ पुनरुत्थान करें,
मान यही है असहयोगका भारत मां हित जियें मरें॥

—सुरेन्द्र शर्मा।

हृदय-निर्देश।

कृषको! अब न देरतक सोओ-शीघ्र सचेतन होओ।
बैठे २ अकर्मण्य सम मत स्वभाग्यको रोओ।
दाग अयशका लगा हुआ है उसे सर्वथा धोओ॥
कृषको! अब न देरतक सोओ।
अश्रु-विन्दुओंसे माताका वक्षस्थल न भिगोओ।
अपने अधिकारोंको समझो, जन्म न यों ही खोओ॥
कृषको! अब न देरतक सोओ।
रूठे हुए स्वबन्धु जनोंको ऐक्य सूत्रमें पोओ।
रहो कलहसे दूर निरन्तर, वैर-विवाद विगोओ॥
कृषको! अब न देरतक सोओ।

अज्ञानी रह स्वयं स्वधर्मों पर कलङ्क मत बोओ ।
ढोना पड़े देशके हित दुख तो दृढ़ होकर ढोओ ॥
भारतो ! अब न देरतक सोओ ।

— दीनानाथ, अशङ्क

विदेशी वस्त्रोंकी विदा

टलो यहांसे विदेशी वस्त्रो, न अब तुम्हारी है चाह हमको ॥
तुम्हींसे भारत हुआ है गारत, किया है तुमने तबाह हमको ॥१॥
उद्योग धन्धे सभी हमारे, किये हैं आकर विनष्ट तुमने ॥
मिटाके चरखे हमारे करघे, है दी मुसीबत अथाह हमको ॥२॥
कहां, यहांकी महीन मलमल, पड़ा है ढाकामें आज फाका ॥
बने निकम्मे जुलाहे कोरी, मिला ये तुमसे गुनाह हमको ॥३॥
तजेंगे तुमको सजेंगे तनपर पवित्र प्यारा स्वदेशी खद्दर ॥
हमारे गांधी महातमाने, ये दी है कामिल सलाह हमको ॥४॥
रुई हमारी खरीद सस्ती, उसीके कपड़े मढ़े है हमपर ॥
हुए धनी तुम गरीब भारत, दिखायी गारतकी राह हमको ॥५॥
बढ़ायी तुमने बेरोजगारी, बनाया तुमने बेहाल भारत ॥
पड़े हैं पेटोंके आज लाले, दिखाता मुश्किल निबाह हमको ॥६॥
कहां है भारतकी वो तिजारत, रही दलाली ही देशमें अब ॥
जहां दिवाली थी अब वहांपर, दिखाती होलीकी दाह हमको ॥७॥

हा धन्य गांधी महात्मा तुम, चलाया चर्खेका चक्र फिरसे ॥
मिली तुम्हींसे स्वदेश हितकी, नवीन निर्मल निगाह हमको ॥८॥
करोड़ो चर्खे चलाके कातेंगे, सूत सुन्दर पवित्र अपना ॥
स्वयं बुनेंगे उसीके कपड़े, न अब तुम्हारी है आह हमको ॥६॥

—शोभाराम धेनुसेवक

अड़ी है विकट समस्या आज

हाय ! विपति-घन घिरे गगनमें दुःखित बन्धु समाज ।
लुटा देख अपनेको संप्रति आती अतिशय लाज ॥ अड़ी ॥

सङ्कट दूर करेंगे कैसे ?
मांकी पीर हरेंगे कैसे ?

धर्म-च्युत है——हिंसा—युत है—
मची हुई है हा ! स्वदेशमें गोहत्याकी गाज ॥ अड़ी ॥

पराधीनता बेड़ी पगमें ।
अनाचार कण्टक है मगमें ।

भ्रष्ट—चरित है——प्रेम-रहित है ।
हाय ! छिन चुका सिरसे देखो !! स्वतन्त्रताका ताज ॥अड़ी ।

असहकारिताके हो योगी ।
या होवे पूरे सहयोगी ॥

कर्मवीर या—वाक् - वीर हो ।
कबतक बिना रहेगा केशव ! यह अधर्ममय राज ॥ अड़ी ॥

—दुर्गादत्त त्रिपाठी ।

जय होमरूल होगा

करना हमारी इज्जत तुझको कबूल होगा,
हम होंगे और ही कुछ जय होमरूल होगा।
इन्सान एकसे हैं गोरे हों या कि काले,
इसके खिलाफ तेरा बकना फजूल होगा।
तब जुल्मके फरिश्ते तेरा शिकार बनकर,
कोई न हमसे अहमक या डैमफूल होगा।
इस हिन्दके चमनमें फिर वह बहार लाना,
हर जिन्दगीकी हसरत, मकसद, उसूल होगा।
बनकरके खुद गरज तू जो कुछ छिना चुका है,
वह कुल हिसाब करके तुझसे वसूल होगा।
सौदाय-वतन होकर 'गुलज़ार' मस्त होंगे,
तब इस तरह न यह दिल हर्गिज़ मलूल होगा।

—गुलज़ार।

छोड़ो

सीधी कुछ बात करो जुल्मका ढाना छोड़ो।
मकरोंका जाल भला अब तो बिछाना छोड़ो॥
कबसे थामे हुए आहोंको सितम सहते हैं।
हम गरीबोंका लहू अब तो बहाना छोड़ो॥

गर वतनके लिये मरते हैं हम तो मरने दो ।
हम हैं मासूम हमें मुफ्त सताना छोड़ो ॥
हम भी दिल रखते हैं इन्सान सरीखा आख़िर ।
अबतो हक छीनकर तुम दिलका दुखाना छोड़ो ॥
चमने-दहरके हैं हम भी तो परिन्दे "गुलज़ार" ।
उड़नेदो, परोंपर अब कैंचीका चलाना छोड़ो ॥

—देवीप्रसाद गुप्त,
बी० ए० एल-एल० बी०

दीनकी आह.

[१]

ज्येष्ठके मध्याह्नके लूकी लपट:
या दहक है घोर खाण्डव-दाहकी ।
या कि बड़वानल बहक आया यहां.
या किसी दुख दीनने है आहकी ॥

[२]

खूनसे हैं रंगे जिन्होंने हाथ:
हैं कलेजे पकड़ पकड़ मलले ।
आज वे हायसे गरीबोंकी.
कह रहे हैं कि हाय हाय जले ॥

[३]

छेदकर अवनी गगनको पारकर,

दूंढ़ती है हैं कहां त्रिभुवन-धनी।

"दीनका सन्देश लायी दीन-बन्धु!

लो खबर अब जानपर है आ बनी॥

[४]

वाष्प-मय थी बनी सलिल-सुन्दर;

जा बसी है रमेश आंखोमे।

आंसुओसे मिली कहेगी दुख;

कर लिया है प्रवेश आंखोंमें॥

[५]

प्रकट करुणा सिन्धुकी करुणा हुई;

दीनवत्सलका हृदय आया पिघल।

चल-धरने चक्रसे अपने कहा;

देख अबलोंको सताते है सबल॥

[६]

चक्र दिया चक्र और यों घूमा;

जो तले थे वही हुए ऊपर।

अब गुनहगार सर झुकाये हैं;

उड़ रही हैं हवाइयां मुंहपर॥

[७]

फांदने जाओ हिमालयके शिखर;

लवण बनकर सिन्धुकी तुम थाह लो।

अङ्गपर ले लो दवानलकी लपटः

पर सताकर दीनकी मत आह लो ॥

[८]

हो किसी देशमें न हे ईश्वर !

होय हालत तबाह दीनोंकी ।

आग इसकी लगी नहीं बुझती:

है जहां-साज़ आह दीनोंकी ॥

—स्नेही।

प्रवेश किया कर
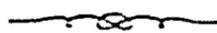
प्रेम पसार महीतल पै सबसे सुखदायक सीख लियाकर ।
सेवक हो तनसे मनसे सबको शतशः सुखदान दियाकर ॥
वाद विवाद बिसार सभी श्रुति वाक्य सुधा भरपेट पियाकर ।
त्याग सुसङ्गति "कर्ण" कदापि कुसङ्गतिमे न प्रवेश कियाकर ॥
छोड़ सनातन चाल अरे ! न कुपन्थमें पांव कदापि दियाकर ।
अमृत त्याग हलाहल ही मरनेके लिये मत मूढ़ पियाकर ॥
दीन जनोंको दियाकर दान किया कर धर्म सुकीर्ति लियाकर ।
रे कवि "कर्ण" मनोमुख हो मत ठौर कुठौर प्रवेश कियाकर ॥
ईश्वरकी रचनापर ध्यान कियाकर लोचन लाभ लियाकर ।
कभी मत भूल किया कर, पाकर जीवन मुक्ति जियाकर ॥

धारण योग समाधि कियाकर, औसर व्यर्थ न जाने दियाकर।
रे कवि "कर्ण" उपाधि जहां उस ठौर कभी न प्रवेश कियाकर॥
मायिक मोह दुखी न करे, दिनरात इसीपर ध्यान दियाकर।
हो फल प्राप्त तुझे कुछ तो, कुछ तो मनमे शुभ ठान लियाकर॥
बन्धन काट सयत्न सभी, कर पाप अरे ! जगमें न जियाकर।
रे कवि "कर्ण" विगाड़ प्रथा दुखसागरमें न प्रवेश कियाकर॥
संसृति—सागरमें न वहाकर ! जीवनको सुखदान दियाकर।
रे कवि "कर्ण" हुआकर पार, वृथा शिर भार न लाद लियाकर॥
है दिन चार यहां मिहमान कभी मदिरा मदकी न पियाकर।
लाभ नहीं अपना जिसमें उस लायनमें न प्रवेश कियाकर॥

—"कर्ण"

रत्न क्या हम अलक्ष्य कह सकते।
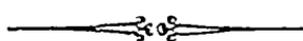
(१)

दर्द दिलका न जब कि सुनते तुम,
दर्दमें जब न काम हो आते।
किस तरह हम तुम्हे कहे स्वामी,
दर्दपर दर्द जब कि हो लाते॥

(२)

दर्दपर दृष्टि दीनके करता—
जो वही दर्दहर कहाता है।

किस तरह दर्दका पता लगता,
दर्दको जो स्वयं सहाता है ॥

(३)

देख लो अब तुम्हीं हृदय अपना,
क्या है पत्थर है या है कोमल कुसुम ।
दर्दपर ध्यान जो नहीं लाते,
न्याय अन्याय सब समझलो तुम ॥

(४)

दर्दसे आह सैकड़ों भरते,
दीन जन हैं गये अहो तुमतक ।
लातसे मारकर दिया तुमने,
पर हटा जान व्यर्थ ही बकबक ॥

(५)

गिरपड़े मुंहके बल लगी चोटें,
तिसपै पड़ते तुम्हारे हैं ठोकर ।
तो भी तुमको पुकारते बाबू,
पैर पड़ते हैं नम्र हो रोकर ॥

[६]

याचते जब दया तुम्हारी हैं,
दीन देते तभी उन्हें जूते ॥
क्या रसातल न ये पठायेंगी,
नीच अन्यायपूर्ण करतूतें ॥

(७)

दीन दुखियाकी बात सुननेको,
हैं तुम्हारे न कान जब फिरते।
हाथ अपना बढ़ाओगे आगे,
दीनको देख किस तरह गिरते॥

[८]

आंखकी किरकिरी हमारे बन,
तुम सदा ही हमें सताते हो।
व्यर्थ गढ़कर बनावटी बातें,
सौख्यप्रद आपको बताते हो॥

[९]

अपने मुंह तुम बनो मियां मिट्ठू,
पर न हम तुमको सभ्य कह सकते।
कांचकी देखकर दमक झूठी,
रत्न क्या हम अलभ्य कह सकते॥

—'भ्रमर'

---

(१)

क्यो डरें प्रह्लादकी सन्तान हैं, कायरोंकी हम न रखते बान हैं।
दास बनकर विश्वमें रहना नहीं, है गुलामीसे भला मरना कहीं॥

(२)

सह चुके पर अब सहा जाता नहीं, रह चुके अब यों रहा जाता नहीं
यदि न सारी सृष्टिके सिरताज हो. नीच सबसे भी बनो हम आज हों

[३]

दीन-भारतके कृषक भूखों मरें, अन्य उनके अन्नसे मौजें करें।
रात दिन उनपर पड़े धिक्कार ही, मारपर सहते रहें नित मार ही॥

(४)

वृटिश शासनके सदा ही भक्त हैं. भूपपर जी जानसे अनुरक्त हैं।
वे रहें सम्राट् दिलसे चाहते, सिर्फ अपने स्वत्व ही हैं मांगते॥

[५]

अब न अपनी लाज खोना चाहते, हैं न निज सर्वस्व देना चाहते!
दासताकी लुप्त हो काली घटा, व्याप जाय स्वराज्यकी सुखदा छटा

[६]

नीति-नियमोंसे यदपि आबद्ध हैं, किन्तु निज उद्धारको कटिबद्ध हैं
कोटि मुखसे रात दिन चिल्लायेंगे, प्राप्त कर लेंगे तभी कल पायेंगे

[७]

आग भी ठंढी बरफ बन जायगी, मृत्यु भी जिन्दा हमें कर जायगी
कण्टकोंके पुष्प मृदु बन जायंगे, दुःख सब सुख साज ही हो जायंगे

[८]

हैं प्रभो अपना बपौती चाहते, प्राकृतिक अधिकार ही हैं मांगते।
क्यों न फिर सुनते भला भगवान हो, छीनते क्यों मानुषिक सम्मान हो

—भगवानदीन पाठक, विशारद

असहकारिता-आन्दोलन ।

बातोंका यह समय नहीं है कर्म-क्षेत्रमें कूद पड़ो ।
बन्धु विरोध भुलाकर सत्वर सत्पथपर प्रण ठान अड़ो ॥
मातृभूमिके सच्चे सेवक बन उसका सन्मान करो ।
स्वार्थ भरे भावोंको अपने दृढ़तासे बलिदान करो ॥
अन्यायी झूठोंका छोड़ो साथ, न उनका ध्यान धरो ।
निरपराध बच्चोंके घातक दलका मत अभिमान करो ॥
बहुत सहा, अब सहनेकी यह कायरताकी बान तजो ।
नौकरशाहीकी 'उपाधियों' के ढोनेकी शान तजो ॥
माननीय-पद हत्यारोंके त्यागो, भागो पापोंसे ।
कायर बनकर तुम न तपाओ देश हृदयको तापोंसे ॥
अब न सड़ाओ प्रिय बच्चोंको सरकारी स्कूलोंमें
राष्ट्र धर्मका पाठ पढ़ाओ पड़े रहो मत भूलोंमें ॥
वीर वकीलो! विश्व हिलाया बातोंसे गढ़ जीत लिया ।
कोर्टोंका काला मुंह कर दो जग देखे क्या कार्य किया ॥
देशोन्नतिपर मिटनेवालो, पैर न पीछे पड़ने दो ।
पहलीसी पञ्चायत पद्धति प्रबल वेगसे बढ़ने दो ॥
मतदाताओ? न्यायनाशिनी कौंसिलको मत भरने दो ।
रही नहीं आर्योंकी इज्जत यों न और अब हरने दो ॥
दीनोंके शोणितसे रञ्जित हाथ न प्रतिनिधि छू पावें ।
पशु-दलकी प्रति मूर्ति पूजने प्रिय प्रितिनिधि न कभी जावें ॥

कोरी ज्ञान और शौकतमें देश-द्रव्य मत लुटने दो।
करो गुजर देशी चीजोंसे भारतमें धन जुटने दो॥
घर घरमें फिर निज करघोंपर कौशल गहिनें दिखलावें।
मुरलीधर, मोहनको मोहक भारतीय पट पहिरावें॥
औद्योगिक, व्यापारिक उन्नति कर भारतको उच्च करो।
'माल विदेशी यहां न खपने पावे,' सन्तत ध्यान धरो॥
शस्य श्यामला भारत मैया सबला हो, स्वाधीन बने।
भारतीय भारत शासनके चंदवे चारो ओर तने॥
तभी स्वर्गसे सब सुर समुदित तुमपर सुमन गिरावेंगे।
अमरपुरीमे भारत-प्रेमी फूले नहीं समावेंगे॥
"धन्य, धन्य, जय-जय", की ध्वनिसे त्रिभुवन वे गुंजावेंगे।
असहकारिता आन्दोलनका शुचि यश निशिदिन गावेंगे॥

—'नृसिंह'

लाता हूं

(१)

"लाता हूं"! लो लाता हूं! लो व्यग्र न हो मैं आता हूं!
नवयुगकी शुभ नव्य ज्योत्स्ना भारतमें फिर लाता हूं!
ठहरो, देखो, कर्मयोगकी वीणा मधुर बजाता हूं!
बिखरे हुए जीर्ण साजोंको, पलमें अभी सजाता हूं॥

(२)

अकर्मण्य हृदयोंमे फिरसे नवजीवन सरसाता हूं।
'ताप तप्त भारत' पर फिर मैं सुधा धार बरसाता हूं॥
पुण्य प्रभामय भारत! तेरी पूर्व छटा छहराता हूं।
गौरव, मान, सभ्यताकी शुभ विमल ध्वजा फहराता हूं॥

(३)

आलस, निद्रा, दास्य, स्वार्थके शासन शीघ्र मिटाता हूं।
पूर्व दिशासे स्वतन्त्रताका उज्ज्वल रवि प्रकटाता हूं॥
मत उदास हो, मत निराश हो, आशा कुसुम खिलाता हूं।
युगसे बिछुड़ी स्वतन्त्रता भारत! फिर तुझे मिलाता हूं॥

—देवीदत्त मिश्र।

जलियांवाला बाग

अनुपम इन्द्र-विपनसे बढ़कर प्यारे जलियांवाले बाग।
तेरे दुखको सुमिर आज भी भड़क उठे सीनेमें आग॥
तन, मन, प्राण निछावर कर दूं, तेरी सेवामें मैं आज।
खान, पान, औ मान छोड़कर लग जाऊं तेरे ही काज॥
वीर, सपूतोंके पवित्र शोणितकी सरिता बही जहां।
तोप और बन्दूक चली दुखड़ोंकी छायी घटा जहां॥
हुए मृत्युके ग्रास किसीके पुत्र किसीके भ्रात जहां।

मरे सहस्त्रों वयोवृद्ध औ सुन्दर बालक कई जहां ॥
मैं भी प्यारे जलियांवाले तुझपर प्राण गंवा देती ।
रुधिर गङ्गमे बहकर गोता रुचिसे एक लगा लेती ॥
स्मरण मात्रसे तेरे दुखके हृदय विकल हो जाता है ।
व्याकुल रहती हूं निश दिन, हा ! चैन नहीं अब आता है ॥
कौन उपाय करूं मैं, जिससे मिट जावें सब तेरे क्लेश ?
कौन उपाय करूं, जो होवे शान्त ! तप्त मेरा हृद्देश ?
मत निराश हो जलियांवाले ! मरे वीर फिर आवेंगे ।
स्वतन्त्रताकी ध्वजा देशमें आकर वे फहरावेंगे ॥
रक्त बहा है जिन वीरोंका वृथा नहीं वह जावेगा ।
शुभ स्वराज्यकी सुन्दर लतिका लाकर शीघ्र लगावेगा ॥

—श्रीमती रा० र० कक्कड़,

मातृ भूमि वन्दना ।

जय जय जय मातृभूमि पद-रज शिर नाऊं ॥ टेक ॥
रसना मम जननि एक, औ तव गुण गण अनेक ।
मुझमें नहिं बुद्धि विवेक, किस विधि यश गाऊं ॥ जय० ॥
दर्शन तव अति पुनीत, हरते मनकी कुरीति ।
[illegible] तव पाद प्रीति, तुझको बस ध्याऊं ॥ जय० ॥

तेरा आजन्म प्रेम, भारत नर नारि क्षेम ।
पूजाव्रत पाठ नेम, तेरा अपनाऊं । जय० ॥
तुझसे है प्राप्त अन्न, रखती रक्षित प्रसन्न ।
तेरे पद पद्म धन्य, छोड़ कहां जाऊं ॥ जय० ॥

—'भ्रमर'

धर्म्म चौकीदारोंकी टेर.

लोहेके चने चबायेंगे हम नंगे उमर बितायेंगे ।
पर भूल विदेशी तागेको निज तनसे नहीं लगायेंगे ॥
इस सूतपै भोजन पान दिया, ईमान दिया फिर प्रान दिया ।
निज प्यारा हिन्दुस्थान दिया इससे क्या अधिक गंवायेंगे ॥
इस मांडीकी वह चिकनाई जिस चरबीके बलसे आयी ।
छूकर मुसलिम हिन्दू भाई क्या अपना धर्म मिटायेंगे ॥
धन दौलत दुनिया माल मता, आयेगा तब किस कोम बता ।
पैसे ले बेचें धर्म तो क्या मालिकको मुंह दिखालायेंगे ॥
गोमाताको निज माताको या भूमी भारत माताको,
जो पैसे लेकर बेचत रहे वे भी क्या मनुज कहायेंगे ॥
फटकार सहें या मार सहे या गाली या पैजार सहे ।
पर सच्ची बीच बजार कहें हम निर्भय धर्म बतायेंगे ॥

तुम भारतके सुखदानी हो, जैसे हो हमारे भाई हो।
इस नाते देख कुमार्ग चलते आपको हम समझायेंगे ॥
तज कर व्यापार विदेशीका हम रक्षा करें स्वदेशीकी।
निज देशप्रेमके सूतसे बंध भारत स्वराज्य फिर लायेंगे ॥
इसलामका भी ईमान रहे, हिन्दूके धर्मका मान रहे।
रूई गैया, धन धान रहे, रक्षामें हम मिट जावेंगे ॥
हिन्दू मुसलिम, नर औ नारी, ग्राहक दलाल या व्यापारी।
हम एक हो भारतके वासी निज देशपे मर मिट जावेंगे ॥

—रा० गौ०

स्वदेशी बाना।

पहनो पहनो स्वदेशी बाना।

चर्खा चलाना सूत बनाना काम यही अपनाना।
जो ही मिले प्रेमसे उसको यह उपदेश सिखाना ॥ १ ॥
प्रातः काल प्रथम उठकर चरखेको शीश नवाना।
पुनः चलाकर सूत बनाना मोहन ध्वनि गुंजाना ॥ २ ॥
वेद-मन्त्रके सदृश समझ ध्वनि सुनना और सुनाना।
इस पवित्र ध्वनिसे ही अपना कर्ण पवित्र बनाना ॥ ३ ॥
गान्धीजीकी बात मानकर चलना और चलाना।
असहयोगकी टेक शान्तिके सहित सप्रेम निभाना ॥ ४

टांग स्वदेशी जयका झण्डा जय-दुंदुभी बजाना ।
भारतको करके स्वतन्त्र बस जय जय घोष कराना ॥ ५ ॥

— "भ्रमर"

क्या हुआ ?

मिट गयी नौकरशाही शान हाथसे छूट गये हथियार ।
न आयी दमननीति कुछ काम —हुए निष्फल सब निष्ठुर वार ॥
हुए रद्दी सारे प्रोग्राम—भेदकी रीति हुई निस्सार ।
मर मिटे आप—'मदन' को मार—
हुआ वह 'अमर'—बढ़ा दुख भार ॥
मर्ज वैसा ही नित प्रति बढ़ा—लगी औषधिसे जैसी लाग ।
नहीं छलके जलसे बुझ सकी—जगी जो स्वत्व-प्रेमकी आग ॥
उसे ठण्डी करनेके यत्न——
हुए आहुति कर दृढ़ अनुराग ।
हट गये तब पीछे पग उधर—
इधर लख ऐसा ऊंचा त्याग ॥
आरजू-मिन्नतपर जब बहा—दिखी जञ्जीर, तेज़—तलवार ।
हुआ तब आत्म-शक्तिका ध्यान—जोशसे निकले ये उद्गार ॥
"न इससे डर सकते हम कभी—
सजावेंगे नव-पलके साज ।

न छोड़ेंगे ले लेंगे अभी—शान्तिसे लड़कर पूर्ण स्वराज।
दीन-दब्बू बन क्यों जग जियें?—व्यर्थ है? होवेंगे बलि आज
संभालो-संभलो देखो बचो—गिर रहा अन्यायी-सिर-ताज।

—निर्बल।

सितमगर

आते नजर चारो तरफ हैं यार सितमगर।
है हिन्दपर छायी घटा अंधियार सितमगर ॥१॥
हम हिन्दवाले क्यों नहीं तकलीफ उठावें।
जब कि हमारी बन गयी सरकार सितमगर ॥२॥
इन्साफकी उम्मेद रखे किनसे हाय हम।
जुल्मो सितम हैं कर रहे दरबार सितमगर ॥३॥
मुंह पै लगा है कुफ्ल न कुछ बोल सकें हम।
लिखना किया है हाथसे दुश्वार सितमगर ॥४॥
सच्ची कहें तो जेलमे करते हैं रवाना।
मारे है गजब चाबुकोंकी मार सितमगर ॥५॥
रोते थे अपने दुःखको जलियान बागमें।
आ पहुंचा मशीगन लिये बदकार सितमगर ॥६॥
हमने मुखालफतकी रौलटके रूल्की।
तो गोलियांकी हम पै की बौछार सितमगर ॥७॥

होता है कत्ले आम ओडायरके हुक्मसे।
किये तूने हमको जलीलोख्वार सितमगर ॥८॥
मासूम बच्चे बेगुनाह जो खाली हाथ थे।
उनपर किया है गोलियोंका वार सितमगर ॥६॥
डायरने बहाया यहां दरयाए खूनका।
जख्मी बना हमको किया बेकार सितमगर ॥१०॥
हा! फूल समझकर जिसे पहना था गलेमें।
अफसोस निकला काटोंका वह हार सितमगर ॥११॥
पागल, कुली, गुलाम कहाना न हमें है।
तुझसे करे अलहदगी अख्त्यार सितमगर ॥१२॥
ऐसे सनमकी अब नहीं हमको है जरूरत।
किसको कभी होवे भला दरकार सितमगर ॥१३॥

— चन्दूलाल वर्मा चन्द्र

दुष्कर्मका फल।

(१)

गला घोटकर नहीं किसीने सुख पाया है।
स्वत्व हरणकर बड़ा न जगमे कहलाया है॥
करके क्या अन्याय मनुज निर्भय होता है।
चोरी करके कहीं सुखी हो घर सोता है॥

(२)

दुष्कर्मों के कर्त्ताको क्या शान्ति मिली है।
कौड़ी लड्डू दे लेनेसे काहीं फली है॥
अहङ्कार करनेवाला क्या नष्ट न होता।
हिंसा करके कहो भला क्या कष्ट न होता॥

(३)

जग-द्रोहीको कभी नहीं उत्कर्ष मिला है।
कभी कलङ्कीके शिरसे क्या टली वला है॥
गाली देकर कभी बड़ाई प्राप्त हुई है।
कूटनीतिसे कभी विजय पर्य्याप्त हुई है॥

(४)

क्या करके अपमान किसीका मान बढ़ा है।
करके वृथा विवाद कभी क्या ज्ञान बढ़ा है॥
किसका कर अपकार विश्वमें पार लगा है।
करके निन्दित काम भला क्या भार भगा है॥

(५)

कुत्सित जनको कभी कहीं क्या मान हुआ है।
क्रूर व्यक्तिका कभी कहीं सम्मान हुआ है॥
बलसे कर व्यवहार नहीं चालाकी चलती।
ज्यों कागदकी नाव सदा पानीमें गलती॥

—'कवि पुष्कर'

——

असहयोग संग्राम ।
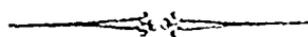
छिड़ा है असहयोग संग्राम ।
शान्ति सहित शुद्धात्मासे ही होंगे सारे काम ।
अन्यायी अत्याचारोंका मिट जावेगा नाम ॥ १ ॥
बरसेंगे यदि गोली गोले वीरोंपर अविराम ।
तो भी विजयपताका फहरेगी नभ मध्य ललाम ॥ २ ॥
सत्य मार्गपर चलनेमें क्या लगे किसीका दाम ।
पीठ फेरकर कभी न भागो आगे मालिक राम ॥ ३ ॥
सच्चे हो तो करो निछावर अपना तन धन धाम ।
आयेगा किस काम अन्तमें यो कौड़ीका चाम ॥ ४ ॥

—'भ्रमर'

कहां हो ?

कहां हो मेरे कृष्ण कन्हैया !
अति आरत ह्वै आजु पुकारत पुनि पुनि भारत मैया ॥
देखहु आज रंभाय रही है हाय तुम्हारी गैया ।
जानत हू न दया उर आनत, तुम बिन कौन बचैया ॥ १ ॥

आवहु फेरि गुपालग्वाल बनि गौअनके चरवैया ।
लाखन लाल मर रहे मेरे दूध बिना ही दैया ॥ २ ॥
डोलति है मंझधार भंवरमें जर्जर मेरी नैया ।
कोई कर्णधार कहु नाहीं तुमही एक खेवैया ॥ ३ ॥
वह ब्रज, वही कूल कालिन्दी, वही समय है भैया ।
मुरली लै विचरहु वन वनलैं, लेउं तुम्हारि बलैया ॥४॥

—ब्रजभूषणलाल त्रिपाठी

भयंकर स्वप्नोत्थित.

ओफ ! था कैसा दृश्य कठोर ।
जागृत हूं, तौ भी कंपता है हृदय याद कर जोर ॥
शुभ्र चांदनी छिटक रही थी,
'शस्य-श्यामला' रजत मढ़ी थी,
बनी धरा वह शान्त गढ़ी थी,
पर क्षण भरमें उमड़ी चहुदिश हाय ! घटाएं घोर ।
बिजली चमकी, चका चौंध थी, धारा बंधी अथोर ॥
बदली ईश दृष्टिकी कोर ।
ओफ था ! कैसा दृश्य कठोर ॥ १ ॥
पागलसे हम ठगे खड़े थे,
बढ़ न सके बस फकत अड़े थे,
देख दशा हैरान बड़े थे,

उसी समय एक विषम दस्युदल टूटा करते वार।
"पकड़ो लूटो और अन्तमें डालो इसको मार ॥"
सुनाई पड़ता था यह शोर।
ओफ ! था कैसा दृश्य कठोर ॥२॥
चिल्लानेकी चाह बनी थी,
पर आती आवाज़ नहीं थी,
गला बन्द था, सांस रुंधी थी,
परन्तु उनके विषम वारसे रही निकलती जान।
छट पट करते मार रहे थे वे विकराल कृपाण ॥
दर्दका दीख न पड़ता छोर।
ओफ ! था कैसा दृश्य कठोर ॥३॥
यों मृतप्राय बन रहे थे हम,
रही छूटती क्षण क्षणमें दम,
मुक्ति आशा रह गयी बहुत कम,
उसी समय पूरबमें बस एक मुर्गेने दी बाग।
ठहरो, छोड़ हमें क्यों नीचो, जाते हो अब भाग ॥
अरे रे ! दौड़ो पकड़ो चोर।
ओफ ! था कैसा दृश्य कठोर ॥४॥

—"प्रबुद्ध"।

— —

वोटका भिखारी

---

(१)

आया हूं दर पे तेरे हूं वोटका भिखारी ।

मैं उम्रभर कहूंगा दाता तेरा भला हो
तुझको हो ऐश सारा दुश्मनके सर बला हो
दोज़ख़मे जा पड़े वह तुझसे जो दिल जला हो
तेरा बहिश्तखाना दुश्मनका करबला हो ।

आया हूं दर पे तेरे हूं वोटका भिखारी ॥

(२)

मैं ग्रेजुएट हूं और लाका भी जानता हूं
चलता हूं देखकर रुख अपनी न तानता हूं
कीरत तुम्हारी दिलसे हरदम बखानता हूं
दादाको भी तुम्हारे अपना ही मानता हूं ।

आया हूं दर पै तेरे हूं वोटका भिखारी ॥

(३)

बन करके मेम्बर मैं कुछ भी अकड़ दिखाऊं
गर उनकी हांमे हरदम अपनी भी हां मिलाऊं
दोज़ख़मे जा पड़ूं मैं ज़िल्लत सदा उठाऊं
लेकरके वोट दाता तुझको जो भूल जाऊं ।

आया हूं दरपै तेरे हूं वोटका भिखारी ॥

(४)

अपनी सखावतोंसे अब कर निहाल दे तू
इज्ज़त बिगड न जाये दाता सम्हाल दे तू
मंगतेका ऐ सखी ! कर पूरा सवाल दे तू
झोला लिये खड़ा हूं एक वोट डाल दे तू।
आया हूं दरपे तेरे हूं वोटका भिखारी ॥

—देवीप्रसाद गुप्त बी. ए., एल. एल. बी.

सहेंगे कर्कश कारागार

वे सारा स्वातन्त्र्य छीन कर भेज रहे हैं जेल;
पर हम आज देश हित नाते सभी रक्तों,
न होगा जल दान, वन्देमातरम् !
सहेंगे न समुद्र,
माना हमने लोग हंसेंगे, ... र हैं बलिदान, वन्देमातरम् !
विश्व हसे विश्वास हमें ... के पुत्र हैं,
. न ... हैं तुझे सन्मान, वन्देमातरम्
... त हर तरफ़से और दुनियासे जुदा,
कै ... है प्रकृत स्वाधीनताकी आन, वन्देमातरम् !
... खाकसे तेरी उठे है राम लक्ष्मणसे सपूत,
हो रहा जिनके गुणोंका गान, वन्देमातरम्

वीरवर सम्राट अकबर वीर वर राना प्रताप,

रत्न हैं, तेरे मुकुटकी शान, वन्देमातरम्!

गोदमें रखती खिलाती तू बड़े ही प्यारसे,

आर्य्य हो या मुसल्मि ईमान, वन्देमातरम्!

वार हम सर्वस्व देंगे तव चरण रजपर सहर्ष,

माल क्या, क्या जान, क्या ईमान, वन्देमातरम्।

प्राण सेवामें लगें फिर तव शरणमें जन्म लें,

और फिर हों शौकसे कुर्बान, वन्देमातरम्!

हे जननि! हम हो नहीं सकते उऋण ऋणसे कभी,

क्या नहीं तूने दिये हैं दान, वन्देमातरम्!

पुत्र तेरे मत्त हैं स्वाधीनताके प्रेममें,

भर दिये तूने बड़े अरमान, वन्देमातरम्!

सत्यकी तलवार तूने दी कसी शोधी हुई,

कर दिया निर्भीक रख दी शान वन्देमातरम्!

आज हैं तव पुत्र मिलकर एक एक ग्यारा हुए,

तो करेंगे आनमें मैदान, वन्देमातरम्!

हैं करोड़ो पुत्र तव बीड़ा उठानेको खड़े,

तू बढ़ाकर हौसला दे पान, वन्देमातरम्!

देशका हो राग चोखा रङ्ग तब आये "त्रिशूल",

प्रेमसे दे छेड़ तू भी तान: वन्देमातरम्!

—"त्रिशूल"

जननि

जननी सपूत तेरा यह वीर, दान देगा;

बलिदान प्राण अपने प्रिय देश हित करेगा।

सुकरात यह बनेगा प्याले जहरके पीकर;

प्रह्लाद बन रहेगा 'ध्रुव' धर्म हो रहेगा॥

राणा प्रताप सा ही स्वातन्त्र्य प्रेम धारे;

होगा यही शिवाजी वर राष्ट्र हित करेगा।

यह 'कर्मवीर' होगा, दृढ़ व्रत प्रतिज्ञ होगा;

जीवन सुमन चढ़ाकर जननी! प्रसन्न होगा॥

—"कर्मवीर"

रोओगे

[१]

काल चक्र चलता रहता है कौन रोकने वाला है;

गया विगत न फिर आ सकता इसका ढङ्ग निराला है;

जीवनमें अकर्मण्य होकर कब तक योंही सोओगे;

यदि सोओगे तो निश्चित समझो रोओगे॥

(२)

अन्याश्रयी पतित होता है स्वावलम्ब मुद दाता है;
स्वावलम्बके अवलम्बनसे सिंह, सिंह कहलाता है;
है यह नम्र निवेदन प्रियवर ! जुल्म कहां तक ढोओगे,
आगे बढ़ो स्वत्व निज ले लो पिछडोगे तो रोओगे ॥

[३]

शीतल सहज काष्ठ जड़ चन्दन संघर्षण जब पाता है;
अत्याचार असह्य देखकर स्वयं अग्नि बन जाता है;
वीर आर्य्य ! तूष्णीं बन कबतक व्यर्थ समयको खोओगे।
प्राप्त सुअवसर नष्ट करो मत निष्कारण फिर रोओगे ॥

(४)

दृढ़ निश्चित सिद्धान्त यही है हम स्वतंत्र हो जायेंगे,
तीस कोटि भाई मिलजुलकर राग स्वदेशी गायेंगे;
आत्मोन्नति हित बने आलसी कबतक परमुख जोओगे;
कबतक अत्याचार सहोगे कबतक दुखड़ा रोओगे !!!

— "पञ्चानन"

मुल्ककी खातिर मुझे बेकार रहने दीजिये

मुझको हिन्दुस्तांमे यह बेकार रहने दीजिये
पेरिसो लन्दनके पस अजकार रहने दीजिये

हैट मग़रबकी मुबारक आपको हो ऐ जनाब ।
मेरे सरपर मशरकी दस्तार रहने दीजिये ॥
टाई औ कालरके फन्दोंकी नहीं हाजत मुझे ।
अपनी गर्दनमें ये दोनो हार रहने दीजिये ॥
कीजिये हज़रत खुशीसे जेबेतन पतलून कोट ।
मेरे तनपर चोगओ शलवार रहने दीजिये ॥
बूट डासनका तुम्हारे पांवकी रौनक रहे ।
मेरे पैरो हिन्दकी पैजार रहने दीजिये ॥
आप चाये पीजिये होटलमें बिस्कुट खाइये ।
मुझको इन बातोंसे हैजो आर रहने दीजिये ॥
कीजिये हज़रत सवारी साइकलकी शौकसे ।
मेरी रानोंके तले रहवार रहने दीजिये ॥
आप अंग्रेजी फरासीसीमें गिट पिट कीजिये ।
मेरे लबपर देशकी गुफ्तार रहने दीजिये ॥
आप "इंग्लिश मैन" को पढ़िये बसद राहत जनाब ।
मेरी खातिर "पत्रिका" अखबार रहने दीजिये ॥
"पानियर" से औ "सिविल" से आप उल्फत कीजिये ।
"देश" औ "हिन्दू" से मेरा प्यार रहने दीजिये ॥
मुझको तुलसीदासके सादीके हैं नगमें पसन्द ।
होमरो गेटीके बस इशआर रहने दीजिये ॥
औरतोंके साथ मिलकर नाचना पीना शराब ।
ऐसी रस्मोंको समुन्दर पार रहने दीजिये ॥

आप बंगलोंमें किसीसे मिलके ग़ज़ल कीजिये ।
मुझको टूटे झोंपड़ेमें ख़्वार रहने दीजिये ॥
आप पैदा कीजिये हुक्कामसे गो रस्म राह ।
मुझको मुल्को कौमका ग़मख़्वार रहने दीजिये ॥
आप जाकर कीजिये सरकारकी सर्विस मगर ।
मुल्ककी ख़ातिर मुझे बेकार रहने दीजिये ॥
ज़िक्रे मुल्को कौमपर एक यारने मुझसे कहा ।
ऐसी बातोंका "फलक" इज़हार रहने दीजिये ॥

---"फलक"

सुनलो भय्या टेसूराय

[१]

हुत दिनोंमें आये राम, झुक झुककर हम करें सलाम ।
खूब खिजाया राह दिखाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[२]

ोगे हमने दुःख अपार, होते रहे अनेक प्रहार ।
कष्ट-कथाको कान लगाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

(३)

कभी मारशल लाका योग, रौलट बिलका कभी प्रयोग ।
कभी कैदमें दिये पठाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[४]

मुंहबन्दीका ताला ठोक, दिया सभामें जाना रोक।

ऊपरसे दर्प दिखाय दिखाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[५]

'खुफिया'वालोंका हुरदङ्ग, करता है जनताको तङ्ग।

फांसें झूंठी बात बनाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[६]

आथर, एडीटर हैरान, वक्ताओंकी बन्द जबान।

ऐसी सख्ती हमपर हाय! सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[७]

दूध, दहीको है मुहताज, मिलता नहीं पेटभर नाज।

बल पौरुख सब गये थकाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[८]

कपड़ोंकी कैसी भरमार, चिथड़ोंतकको है लाचार।

नङ्गा बूचा रहा न जाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[९]

पशुओंका होता बलिदान; बांय बांयकर त्यागे प्राण।

रोवें कृपक, रंभावें गाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[१०]

मार रहे हैं मारक रोग, वर्षाका है कुटिल कुयोग।

छप छप छपरा चूवा जाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[११]

पण्डित, मुन्शी, बाबू लोग, सबको है पैसेका रोग।
घर घर घूंस घुसी घराय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[१२]

पुलिस, प्लीडरोंका इकबाल, परचागोंका जमा जलाल।
मूंछ मड़ोरें पेट फुलाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[१३]

भारतकी दुर्दशा निहार, पिघलो इङ्गलिशया सरकार।
भेजे रीडिङ्ग वायसराय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[१४]

'न्यायसिन्धु'में उठा उफान, होने लगे बड़े अनुमान।
दमननीतिने दिये दबाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[१५]

बना 'सुधारो'का सुखसांग, 'लिबरल' मांग रहे हैं मांग।
बुझे न भूंख भीखको खाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[१६]

भारतकी पद्धति प्राचीन, असहयोग है हिंसाहीन।
गांधीजीने दिया बताय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[१७]

गवर्नमेण्टका कारागार, असहयोगियोंका घरद्वार।
भोगें जेल हिये हर्षाय, सुनलो भय्या टेसूराय ॥

[१८]

चरखे करघेका उद्धार, खद्दरका बढ़ रहा प्रचार।
वस्त्र विदेशी दिये जलाय, सुनलो भय्या टेसूराय॥

[१६]

रोना बहुत समय है नेक, घटना कई, जीभ है एक।
कहते है कुछ कहा न जाय, सुनलो भय्या टेसूराय॥

—"झांझर झिल्ल"।

सत्याग्रही चातक

(१)

चोंच मूंद चित रोक, चाहपर अड़ा हुआ है।
सत रखनेको, सरल, सात्विकी खड़ा हुआ है॥
सब सहनेको ज्ञान—ध्यानमें पड़ा हुआ है।
इष्ट वस्तुकी प्राप्ति—पन्थपर पड़ा हुआ है॥
अति रोष पूर्ण घन-घोष भी, चातकको न डरा सका।
फिर सत्याग्रह-संग्राममें, वज्र-पात न हरा सका।

(२)

स्वाति-सलिलको त्याग, अन्य जलको न पिऊंगा।
प्यासे मरना श्रेय अन्य पयसे न जिऊंगा।

जो चाहो सो करो जल्द ! वह देना होगा।
जिसकी जिसको चाह, उसे वह लेना होगा।
यह सीख-चीज है ना [illegible], [illegible] सबके [illegible]मे !
ए पक्षी भी कितना प्रौढ़ [illegible], सत्याग्रह संग्राममे ! ॥

"अमित्र"

देवी–दशक

उठो, भारतीयो बढ़े मातृ-भक्ति,
करो प्रार्थना तुष्ट हो आदि शक्ति।
हरे कष्ट वे चोभुजी मूर्तिवाली,
नमो देविकाली नमो देविकाली।
सुनो प्रार्थना हे भवानी हमारी,
करो यातना देशकी दूर सारा।
दिखाओ पुनः तू दशा पूर्ववाली,
नमो देविकाली, नमो देविकाली।
किया चण्ड औ मुण्डका मुण्डका खण्ड,
दिया दानवोंको यथायोग्य दण्ड।
खलोंके सिरोंकी गले माल डाली,
नमो देविकाली, नमो देविकाली।

तुम्हींने महादैत्य है शुम्भ मारा,
सुरोंका किया दूर है दुःख सारा।
पड़ी जो व्यथा सो सभी शीघ्र टाली,
नमो देविकाली, नमो देविकाली।
दुखी देशको भी दया दान दीजे,
प्रजा रो रही है कृपा कोर कीजे।
हुआ देश है द्रव्यसे हाय खाली,
नमो देविकाली, नमो देविकाली।
गिरीसी दशामें महा क्षीण दीन,
पड़ी है अहो, मातृभाषा मलीन।
नहीं ठीक है राष्ट्र शिक्षा प्रणाली,
नमो देविकाली, नमो देविकाली।
रही फैल सर्वत्र ही फूट भारी,
जहां देखिये रोग हैं प्राण हारी।
कहा हिन्दमें पूर्वसी आज लाली,
नमो देविकाली, नमो देविकाली।
हुआ झूंठका है अपार प्रचार,
सभी देखते स्वार्थ सर्व प्रकार।
बढ़ें नित्य ही क्रूर कामी कुचाली,
नमो देविकाली, नमो देविकाली।
दुराचार दुर्नीतिकी धूम छाई,
स्वराज्याधिकारी घने हीन भाई।

नहीं दीखती चित्तवाली खुशाली.
नमो देविकाली. नमो देविकाली।
अति पतित दशामें देश है आज माता,
तुम बिन इनका है और कोई न त्राता।
विनय सुन भवानी काटके कष्ट जाली,
धन, बल, सुख दीजे हे कृपा मूर्तिवाली।

—"अभिलाषी"

सत्याग्रह

मातृभूमिकी सेवाका अब व्रत भारी धरना होगा।
चलें तीर, तरवार, तोप भी तनिक नहीं डरना होगा॥
धर्महेतु बलिदान चढ़ेंगे, हंसी खुशी मरना होगा।
आज "दुराग्रह"से लड़नेको 'सत्याग्रह' करना होगा॥
'सहनशीलता' कवच हमारा, शान्त 'अहिंसा-व्रत, होगा।
ऐसे धर्मयुद्धसे जाना किसे नहीं अभिमत होगा॥
'आत्मिक बल' का पाठ जगत नरको हम सिखला देंगे।
दिव्यतेज' से 'असुर-शक्ति' को बस नीचा दिखला देंगे॥
हाथोंमें 'हथकड़ी पड़ी हो 'रखड़ी. उन्हें बतावेंगे।
पैरोंमें पड़ जावें 'बेड़ी' नेक नहीं घबरावेंगे॥

'तीर्थ' समझकर भक्ति भावसे 'कारागृह, में जावेंगे।
"जयमाला" की तरह गलेमे "फांसी भी लगवा लेंगे॥
मुंहसे उफतक नहीं करेंगे मालोपर चढ़ जावेंगे।
पीछे कदम नहीं रक्खेंगे, जीते जो जल जावेंगे॥
मातृभूमिके लिये हिमालयके हिममे गल जावेंगे।
पर प्यारे "सत्याग्रह-व्रत" से कभी नहीं टल जावेंगे॥
ज्वालामुखिसे क्षुब्ध हुई यह भूमि केन्द्रसे हट जावे।
क्रूर ग्रहसे दबकर दिनकरका प्रताप भी घट जावे॥
धूमकेतुके प्रबल कांपसे गगन भले ही फट जावे।
पर 'सत्याग्रह'से न टलेंगे, यह सिर चाहे कट जावे॥
मन्त्र जपेंगे हम 'स्वतन्त्रता' का, फिर रुह फुक जावेगी।
मुर्दोंसे भी वक्रकालकी कुटिल कला चुक जावेगी॥
कुण्ठित होकर अत्याचारी खड्ग स्वयं रुक जावेगी।
सुभग 'अहिंसा' के चरणोमे 'हिंसा' ही झुक जावेगी॥
'नौकरशाही' के घमण्डको जब कर देंगे चकनाचूर।
जन्मसिद्ध अधिकार, प्राप्तकर होंगे सब सुखसे भरपूर॥
जन्मभूमि-जननी'के दुस्सह दुःखोंका कर देंगे दूर।
जन्म सुफल तबही समझेंगे 'सत्याग्रही' समरके 'शूर'॥
उनपर सुरगण सुदित हृदय हो देव-कुसुम बरसावेंगे।
'विजय' दुन्दुभी बजा बजाकर वार वार हरसावेंगे॥
अन्तरिक्षमे शान्ति पताका भारतकी फहरावेंगे।
'जय सत्याग्रह' 'जय स्वतन्त्रता 'जय भारत' की गावेंगे॥

—वागीश्वरजी विद्यालङ्कार।

निवेदन

(१)

शोक विमोचन शोच हरो ।

प्रभो लोक लोचन अब लोचन खोलो विपुल करो ॥ शोच० ॥

जग जीवन अभिनय जीवन दो भले भावमें भरो ।

सकल कलामय हरो विकलता दूर कालिमा करो ॥ शोच० ॥

(२)

घन तन रुचि यह रुचि है मेरी ।

बरसो रुचिकर सलिल सदयता सरसो रसमय करो न देरी ॥घ

बार बार कर मधुर मधुर ध्वनि करते रहो सुखकर फेरी

गतिविहीन लोचन चातकको एक अगति गति है गति तेरी ॥घ

—"हरि औध"

राष्ट्रीय गीत

है यह हिन्दुस्तान हमारा ॥

उत्तर हिमालया है प्यारा—पूरब ब्रह्मपुत्रकी धारा,

खन सुन्दर सिन्धु किनारा, सारा हां, साराका सारा,

है यह हिन्दुस्तान हमारा

इसकी पत्ती इसकी डाली, प्यारी है इसकी हरियाली,
है यह बाग और हम माली, यह हमको प्राणोंसे प्यारा —
है यह हिन्दुस्तान हमारा ॥

गङ्गा प्यारी, जमुना प्यारी, इसकी शोभा सबसे न्यारी,
मलय हिमाचल पर्वत-धारी, देश हमारा जग उजियारा,
है यह हिन्दुस्तान हमारा ॥

इसकी मूरति मङ्गलकारी—छटा निराली, न्यारी न्यारी,
हमीं एक इसके अधिकारी, इसपर सब कुछ हमने वारा—
है यह हिन्दुस्तान हमारा ॥

मर जावें, परवाह नहीं है, कट जावें, पर आह नहीं है,
चाह यही है, चाह यही है, दिलसे यह आंखोंका तारा,
है यह हिन्दुस्तान हमारा ॥

यहां हुए हैं, यहीं रहेंगे—शान किसीकी नहीं सहेंगे,
जो जीमें है वही कहेंगे— है यह सत्य, मुक्तका द्वारा—
है यह हिन्दुस्तान हमारा ॥

तेरे पुत्र कहानेवाले, कभी नहीं डर जानेवाले,
सब कुछ कर दिखलानेवाले, तेरा हो गर कहीं इसारा,
है यह हिन्दुस्तान हमारा ॥

हिन्दू मुसलमान ईसाई, सिक्ख पारसी जैनी भाई,
सबके सब तेरे शैदाई, कहते हैं यह देश हमारा,
है यह हिन्दुस्तान हमारा

जय ईसा, मूसा, पैगम्बर, राम कृष्ण अल्ला हो अकबर,
जय जयकार मुसल्मानों का [illegible] रहे बुलन्द सितारा,
है यह हिन्दुस्तान हमारा।
—"वीर कवि"

स्वराज्य पा सुखी रहो

(१)

उठो ! स्वदेशके सपूत कर्मक्षेत्रमे बढ़ो ।
बिसार द्वेष दम्भ, पाठ प्रेमका सदा पढ़ो ॥
स्वराज्य-प्राप्तिके लिये विशेष यत्न कीजिये ।
स्वदेशके सुधारमे सहर्ष ध्यान दीजिये ॥
स्वजन्मभूमिके लिये अनन्त कष्ट भी सहो ।
बलिष्ठ धीर वीर हो, स्वराज्य पा सुखी रहो ॥

(२)

समस्त भेदभाव त्याग सत्यमार्गमे डटो ।
अनेक विघ्न हो समक्ष लक्ष्यसे नहीं हटो ॥
स्वतन्त्र वीरभाव बन्धुवर्गके हृदै भरो ।
सुविज्ञ धीर वीर हो, सुधार देशका करो ॥
विरोध त्याग सर्वदैव मित्र एकता चहो ।
बलिष्ठ धीर वीर हो, स्वराज्य पा सुखी रहो ॥

(३)

अनैक्यको नशाय ऐक्य प्रेममें सभी पगो ।
विकाशि कर्मवीरता चलो ! चलो !! उठो जगो ॥
समाधिकार स्वत्वका महत्व मित्र जानलो ।
स्वराज्य स्वत्वके लिये निशङ्क ठान ठानलो ॥
स्वजन्मभूमि कीर्तिकी ध्वजा सुवीर हो गहो ।
बलिष्ठ धीर वीर हो, स्वराज्य पा सुखी रहो ॥

(४)

स्वतन्त्र देश हो न दास, दैन्य दुःखको सहे ।
समृद्धियुक्त हो सभी न दीनता यहां रहे ॥
सदैव शान्ति सत्य शीलता प्रभा प्रकाश हो ।
परावलम्ब नाश हो स्वदेश श्रीनिवास हो ॥
अनन्य देश प्रेमकी तरङ्गमें सदा बहो ।
बलिष्ठ धीर वीर हो, स्वराज्य पा सुखी रहो ॥

(५)

मनुष्य-जन्म पा उदार योग्य साहसी बनो ।
अनीति अन्धकार वैरके विकारको हनो ॥
विपत्ति विघ्नव्यूह भीतिसे नहीं हृदै हिले ।
समस्त भारतीयवृन्द नित्य मोदसे मिलें ॥
विलुप्त भारतीय शक्ति विश्वमें पुनः लहो ।
बलिष्ठ धीर वीर हो, स्वराज्यपा सुखी रहो ॥

(६)

निरन्नवस्त्र हीन हैं दुखी किसान रो रहे।
विचारते न सभ्य नेत्र मूंद हाय सो रहे॥
दुकाल रोगशोक लूट घूस जी जला रहे।
बचाइये प्रभो, अनन्त कष्ट हैं सता रहे॥
दुखावसान हों स्वराज्यके संदेशको कहो।
बलिष्ठ धीर वीर हो, स्वराज्यपा सुखी रहो॥

-हरिश्चन्द्रदेव वर्म्मा।

आह्वान

हे घनश्याम! आते हो: हां, आओ।

(१)

मङ्गल-धाम, पूरण-काम, विकसित पद्मानन अभिराम।
रूप—ललाम, छवि अपरूप दिखाओ,
प्यारे, उजड़े भवन बसाओ॥

(२)

भाद्रव-मास, कृषकोल्लास, अद्भुत हरीतिमा-उद्भास,
तड़ित—विलास, मेघोंसे मिल जाओ,
प्यारे, शस्योंमे लहराओ॥

(३)

कुसुमित-कुञ्ज, नवल-निकुञ्ज, मुकुलित मञ्जु लता-द्रुम-पुञ्ज,

मधुकर—गुञ्ज, उपवन रुचिर सजाओ

प्यारे, गोधन विपुल चराओ ॥

(४)

रास— विहार, प्रेमाधार, हृदय मध्य वर—हृदय—प्रसार,

भावागार, नट—नागर बन जाओ,

प्यारे, मुरली मधुर बजाओ ॥

(५)

गीता—गान, आत्म—ज्ञान, सत्याग्रह—मय कर्म—प्रधान

प्राण—महान, अमर—तत्व बरसाओ

प्यारे, नव -जीवन—बल लाओ ॥

(६)

कारागार, शृङ्खल—भार, वेष्टित प्रहरी रोधित—द्वार

जगदुद्धार, अत्याचार मिटाओ

प्यारे, मुक्ति—मार्ग बतलाओ ॥

(७)

लोचन—नीर, आरत—गीर, पीड़ित-हृदयोच्छ्वास समीर

भय—भ्रम—भीर, अब अविलम्ब नसाओ

प्यारे, फिर हमको अपनाओ ॥

—मुकुटधर पाण्डेय ।

——

अपना ख्याल.

हमको अगर जरा भी अपना ख्याल होता ।
तो अपने घरका ऐसा अवतर न हाल होता ॥
इस दुष्ट फूटिनीका सत्कार जो न करते ।
प्यारा हमारा भारत क्यों पायमाल होता ॥
दुश्मन हमारे हमको नीचा न यों दिखाते ।
भाईका अपने भाई ही जो न काल होता ॥
रहती जो अपने करमें तलवार एकताकी ।
गैरोंका फिर मुकाबिल डटना मुहाल होता ॥
हम अपना आत्मगौरव दिलसे न जो भुलाते ।
हरगिज न इस तरहसे अपना जवाल होता ॥
दुर्भिक्ष और महंगी हमको न यों सताते ।
खपता स्वदेशमें ही अपना जो माल होता ॥
गोविन्दके तनयसे जो आर्यपुत्र होते ।
तो जगमें आज भारत फिर बेमिसाल होता ॥
बनता न एक बालक ईसाई और मुसल्मां
जो ऐसा ही तुकीकन घर घरमें लाल होता ॥
खिल उठता एकदमसे भारत ये फिर "कमल" सा ।
इसपर जो वह दयामय कुछ भी दयाल होता ।

—"कमल ।"

भावना

जीवन-रणमे फिर बजे विजयकी भेरी।

भारत, फिर भी हो सफल साधना तेरी॥

[१]

आत्माका अक्षय भाव जगाया तूने।

इस भांति मृत्यु-भय मार भगाया तूने॥

है पुनर्जन्मका पता लगाया तूने।

किस ज्ञेय तत्वका गीत न गाया तूने॥

चिरकाल चित्तसे रही चेतना चेरी।

भारत, फिर भी हो सफल साधना तेरी॥

(२)

तूने अनेकमें एक भाव उपजाया।

सीमामें रहकर भी असीमको पाया॥

उस परा प्रकृतिसे पुरुष मिलाप कराया।

पाकर यों परमानन्द मनाई माया॥

पाती है तुझमें प्रकृति पूर्णता मेरी।

भारत, फिर भी हो सफल साधना तेरी॥

[३]

शक, हूण, यवन इत्यादि कहां हैं अब वे।

आये जो तुझमें कौन कहे कब कब वे॥

तू मिला न उनमें मिले तुझीमें सब वे ।

रस चखके तुझे, हो गये आपको जन वे ॥

अपनाया सबको पीठ न तूने फेरी ।

भारत, फिर भी हो सफल साधना तेरी ॥

(४)

हे देश, धर्मके लिये धर्म है तेरा ।

फल ईश्वरका है और कर्म है तेरा ॥

चारित्र्य चर्म, विश्वास वर्म है तेरा ।

इस जीवनमें ही मुक्ति मर्म है तेरा ॥

तेरी आभासे मिटी अपार अंधेरी ।

भारत, फिर भी हो सफल साधना तेरी ॥

(५)

गिरि, मन्दिर, उपवन, विपिन, तपोवन तुझमें ।

द्रुम, गुल्म, लता, फल, फूल, धान्य, धन तुझमें ॥

निर्झर, नद, नदियां, सिन्धु, सुशोभन तुझमें ।

स्वर्णातप, सित चन्द्रिका, श्याम घन तुझमें ॥

तेरी धरतीमें धातु-रत्नकी ढेरी ।

भारत, फिर भी हो सफल साधना तेरी ॥

—"मधुप" ।

कृपा कीजिये ।

मङ्गलमय सुनिये इतनी विनय हमारी ।
कीजे निज अनुपम दया भक्त भय हारी ॥

(१)

यह जालो जग विद्रोह अनल बुझि जावै ।
सुख-शान्ति मधुर फल यह मानव कुल पावै ॥
सतपथमें नहिं दुर्नीति प्रपंच अड़ावै ।
सबके उर समता भाव पवित्र समावै ॥
हो नहिं वसुधा पै भार पापको भारी ।
कीजे निज अनुपम दया भक्त-भय हारी ॥

(२)

स्वारथ अरु स्वेच्छाचार यहां सों भागे ।
शुचि नवजीवनकी ज्योति हृदयमें जागे ॥
प्रिय बन्धु परस्पर पुण्यप्रेममें पागें ।
नित सदाचार व्यवहार करनमें लागें ॥
निज देश दशाको समझें लोग अनारी ।
कीजे निज अनुपम दया भक्त-भय हारी ॥

(३)

आतम गौरवको भाव जगत विस्तारै ।
वह सुमति प्रभा प्रगटाइ कुमतिको टारै ॥

शुभ भव्य-भविष्यत-आशा जियमें धारें ।
प्रिय हिन्द देश हिन्दी-भाषा उद्धारें ॥
घर घर नहिं छावें वैर-बदरिया कारी ।
कीजे निज अनुपम दया भक्त-भय हारी ॥

(४)

अपनी पूंजीसे हम व्यापार बढ़ावें ।
उपयोगी देशी सकल पदार्थ बनावें ॥
उन हीको वर्ते रुचिसे रुचिर जहावे ।
लखि और न कोऊ भृकुटी वृथा चढ़ावें ॥
बस हो कबहूं नहि यहां किसान दुखारी ।
कीजे निज अनुपम दया भक्त भय हारी ॥

(५)

लखिवे जो यहके पुत्र विदेसहिं जावें ।
उनसों मुख मोरि न कुलहि कलंक लगावें ॥
जग-रिपु-दल-बल हनि सकल न्याय दरसावें ।
नव भारत-कीरति लता विमल फहरावे ॥
भुवि वीर जायं जासो उनपर बलिहारी ।
कीजे निज अनुपम दया भक्त भय हारी ॥

(६)

हों उज्ज्वल उच्च उदार मंजु अभिलाखे ।
कबहूं नहिं अपनी हम मर्यादा नाखें ॥

सज-धज सब देशी वही हमेसी राखें।
सुन्दर सुराजको स्वाद निरन्तर चाखें॥
नस नस नव-जागृत-जोति सत्य संचारी।
कीजे निज अनुपम दया भक्त भय हारी॥
—"कवि भूषण"

निराश भारतकी आशा

देव-तुल्य यह कौन खड़ा है महा-सौम्यताका अवतार।
शान्ति-निधान, सरल बालकसा, पूज रहा जिसको संसार।
जिसके शब्दोंकी पवित्रता हिम-कणसे भी बढ़कर है।
जिसके हित खादीकी महिमा कनक मुकुटसे चढ़कर है।
पैदा हुआ मनुज-तनु पा, क्या कोई ईश्वरका आभास?
सत्याग्रहके आविष्कर्ता, ये हैं गांधी मोहनदास॥ १॥
दुष्टोंको भी गले लगाना धर्म-हेतु सङ्कट सहना।
प्राणों तकको तुच्छ समझना सदा सत्य मुखसे कहना।
हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य-वेलिको प्रेम सहित सिंचन करना।
दुर्व्यसनोंका त्याग कराना केवल ईश्वरसे डरना।
दुष्कर्मोंकी, सत्कर्मोंकी, जिसने सीमा बांधी है॥
विश्व-पूज्य, वह वही हमारा, पूज्य महात्मा गांधी है॥ २॥

शैतानी-शासनके सन्मुख इनकलाब आरम्भ किया ।
अन्यायोंका अन्त कराके राम-राज्य प्रारम्भ किया ।
पंजाबकी डायरशाही और खिलाफतका अन्याय ।
'पूर्ण स्वराज्य' सभी दुःखोंका बतलाया है एक उपाय ।
हिंसा-विरहित असहयोगकी चली नीति [illegible] आयी है ॥
सबके घट घटका वासी, यह नया महात्मा गांधी है ॥ ३ ॥
कारागृहको तपोभूमि कर जिसने मान बढ़ाया है ।
जिसने समता और शान्तिका सबको पाठ पढ़ाया है ।
अटल-स्वदेशी- व्रतको धारण करना हमें सिखाया है ।
चरखारूपी चक्र सुदर्शन जिसने पुनः चलाया है ।
शान्ति, समत्व, प्रेमकी-आत्मा, हां, निराश भारतकी आस ।
दीनोंका सच्चा-उद्धारक, है प्रिय गांधी मोहनदास ॥ ४ ॥

--एक भारतीय विद्यार्थी ।

नयी कौंसिलोंका उम्मेदवार ।

गलमें बैठेंगे हम सलतनके नशेमें कुर्सी पै खूब डटकर ।
चलेगी इज्जतके साथ दौलत इसीसे मेम्बर बने झपटकर ॥
इसी लिये तो हजारों खर्चे छपादे पर्चे बजार डटकर ।
कि जिससे वोटर वहूँ हमारे [illegible] ॥

अगरचे कांग्रेसमें यह हुआ तय कि बैठो कौंसिलसे दूर हटकर।
मगर यहां तो है स्वार्थ प्यारा गलेसे अपने गया लिपटकर॥
बलासे होवें गरीब गारत हो जाय भारत उलट पलटकर।
मगर भरे मुफलिसोंकी दौलत हमारे घरमें सिमट सिमटकर॥
है जूता उछलौवल आज बाहम किया है मतलबको याद रटकर।
दिखा रहे हैं कि हम खुदीमें किसीसे हरगिज नहीं हैं घटकर॥
है जाहिरा जोशेहुब्बेवतनी बघारें लक्चर डपट डपटकर।
'कमल'से बेकसको पर जो पावें तो उसको चुपकेसे जाय चटकर।

—"कमल"।

देश सेवा करो।

[१]

सभी हैं जगे हो तुम्हीं सो रहे।
वृथा नींदमें स्वत्व हो खो रहे॥
करो दूर आलस्य मानी वरो।
उठो भाइयो देश सेवा करो॥

[२]

तुम्हारी दशा है बुरा हो रहा।
पुरानी रही कीर्तिको धो रहा॥

बचाओ उसे नीति-मत्ता धरा।

उठो भाइयो देश सेवा करो॥

[३]

तुम्हारे घरोंमें असन्तोष है।

कुटुम्बी जनोंमें बड़ा रोष है॥

सुधारो उन्हें शास्त्र शिक्षा भरा।

उठो भाइयो देश सेवा करो॥

[४]

तुम्हारे यहां मूर्ख है नारियां।

न होतीं उन्हें बोध तैयारियां॥

उन्हे शिक्षिताएं बनाओ नरो।

उठो भाइयो देश सेवा करो॥

[५]

तुम्हारे यहां फूटका राज्य है।

सजा द्वेष ईर्षादिका साज है॥

उन्हे ज्ञान देके अविद्या हरो।

उठो भाइयो देश सेवा करो॥

[६]

तुम्हे न्याय का सर्वदा ध्यान हो।

कुचाले तजो आत्म सम्मान हो॥

सदा सत्यताके लिये ही मरो।

उठो भाइयो देश सेवा करो।

[७]

यहां वीर औ धीरका काम हो ।

न दुःखावलीका कहीं नाम हो ॥

जो मानुष्य हो धर्मको आचरो ।

उठो भाइयो देश सेवा करो ॥

[८]

स्वदेशी प्रथाको बढ़ाओ गहो ।

नयी सभ्यताका सदा ह्रास हो ॥

न अन्यायियोसे कभी भी डरो ।

उठो भाइयो देश सेवा करो ॥

— जगन्नारायणदेव शर्मा (कवि पुष्कर)

सच्चा असहयोगी

(१)

कारागृह गृह हुआ खेलने औ खानेका ।

तनिक नही भय कभी वहां आने जानेका ॥

वहां बडे आनन्द सहित हमतो जावेंगे ।

कार्य करेंगे नहीं भाग्यपर पछतावेंगे ॥

कायर बनकर करेंगे. क्षमा प्रार्थना हम नहीं ।

दृढ़ता मेरी बाहरसे, हो सकती है कम नहीं ॥

(२)

सद्विचारमें दिवस हमारे कट जावेंगे।
कष्ट हमारे सभी स्वयं ही हट जावेंगे॥
भार हमारे शिरपरके सब घट जावेंगे।
सच्चे बनकर कार्यक्षेत्रमें डट जावेंगे॥
इसी हेतु हम अड़ गये, ले लेंगे निज ध्येयको।
यच स्वराज्य उद्देश्यपर, देंगे सभी विधेयको॥
—सीताराम 'भ्रमर'

——

वानर निशाचर संग्राम

[१]

अब बजी जुझाऊ वीर ढोल, बंध गया तमीचर कोश गोल।
दोनों दलके सैनिक अपार, रण हेतु हुए आकर तयार॥

[२]

घिघिनड़ घिघिनड़का मचा शोर,धड़ धड़ धड़ धडका रव कठोर।
कर लगे मीसने सिद्ध शूर, डर गये हृदयमें कपट क्रूर॥

(३)

काले काले पर्वत समान, बहु मुख शिरवाले यातुधान।
नख रद कच नासा अति विशाल, अवगत होते हैं प्रकट काल॥

(४)

वहु भुज पदके राक्षस अनेक, युग उदर ग्रीवके है कितेक।
गिरि गुहा सदृश मुख वाय वाय, आनन्द मनाते गाय गाय ॥

(५)

पीकर मदिरा सब हुए चूर, अक वक गिरते पड़ते त्रिदूर।
वर्छी भाला करवाल शूल, वहु सजे उड़ाते अमित धूल ॥

(६)

मरकट भटका सज्जित समूह, कर रहा चतुर्दिक घूम हूह।
दूने दूने गिरि तुल्य कीश, नख पैने पैने वड़े वीस ॥

(७)

सब दांत पीसते वार वार, खुजलाते हैं रिससे कपार।
कौतुक करते अति कूद फांद, मनमें साहस वलका प्रमाद ॥

(८)

नल नील द्विविद गद जाम्बवान, सुग्रीव वालिसुत हनूमान।
चामुण्ड धर्ष विकराल शाक, कर्पट गङ्गाधर औ पृदाक ॥

(९)

वहु भालु कीशका घोर ठट्ट, केवल आज्ञाकी लगी रट्ट।
आज्ञा मिलते छिड़ गया युद्ध, दोनो सेना हो गयीं क्रुद्ध ॥

[१०]

शस्त्रास्त्र लगे छुटने अपार, भयको भी भय होता निहार।
शाखामृग शाखा तोड़ तोड़, कितनोंके डाले शीश फोड़ ॥

(११)

पत्थरके रोड़े मार मार, बहुतोंके डाले उर बिदार।
भिड़ गये कईसे धाय धाय, कर रहे पैतरे गाय गाय॥

(१२)

जय रामचन्द्र जय कीशराज, वानर कहके गा रहे गाज।
जय दशकन्धर लङ्का धिराज, राक्षस बकते हैं विजय आज॥

(१३)

कोई फैला करके लंगूर, गरदन लेता है फांस क्रूर।
कितने मर्कट हो पुच्छहीन, निशिचरके हैं कच रहे बीन॥

(१४)

वानर बहुतोंके रद उपार, उनके शिरपर करते प्रहार।
बहु नाक काटकर चले भाग, निशिचरने डाले तोड़ टांग॥

[१५]

निशिचर वानरगण धर अनेक, कन्दुक इव नभमें रहे फेंक।
भालोंपर उनको लोक लोक रण हैं करते होकर अशोक॥

[१६]

बहुतोंके शिर पै कूद कूद, शाखामृग लेते नेत्र मूंद।
वृक्षोंकी देकर प्रबल ओट, घनघोर गदाकी करें चोट॥

(१७)

गालोंपर थप्पड़ मार मार, उनके डाले चेहरे बिगार।
नाचर दलमें कर प्रवेश, कर दिये नाश निशिचर अशेष॥

(१८)

छा गयी घटा भारी तुरन्त, मानो होवेगा सृष्टि अन्त।
अति कांप रहे दिग औ दिगन्त, नश गया राक्षसी दल अनन्त॥

(१६)

युद्धस्थलका अति विकट रङ्ग, लखकर होते सब जीव दङ्ग।
धर मार मार धर रहे टेर, धड़ मुण्डोंकी हैं लगी ढेर॥

[२०]

शोणितकी निकली तीव्र धार, कट गिरे जहां सैनिक अपार।
अगणित पृथ्वीपर कटे हाथ, करवाल शिरोही लिये साथ॥

[२१]

कच्छपसी उतरा रही ढाल, हैं केश ज्ञात होते सेवाल।
पर्वतसे हाथी है उतान, कीचड़में टूटे धंसे आन॥

[२२]

बहु गिद्ध श्वान जुटकर निहाल, भेड़िये लोमड़ी औ शृगाल।
लोथोंपर कौए मार चोंच, खाते है बोटी नोच नोच॥

[२३]

रावण दलका हो गया नाश, कुछ भाग गये होकर निराश।
कट गये बहादुर शूर वीर, सुन हुआ दशानन अति अधीर॥

[२४]

जय जयति जयति श्रीरामचन्द्र, कह हुआ सांझको युद्ध बन्द॥
वानर गणको अति हुआ हर्ष, रघुकुलमणिवरके किये दर्श।

— जगन्नारायणदेव शर्म्मा।

मातममें जश्न.

जां बलब तुफ्ता जिगर जश्न मनायें क्योंकर,
हम सितमगार तेरे नाज उठायें क्योंकर।
जिनकी आंखोमें भरे अश्क वह गायें क्योंकर,
अपने अहबाब हमें याद न आयें क्योंकर।
कोई उम्मीद भी हो गमको दबायें क्योंकर॥

जो गिरफ्तारे बला उनको मसर्रत कैसी,
जिनके अहबाब जुदा उनको बशाशत कैसी।
जो दिये तल्ख बना उनको हलावत कैसी,
जो तहे दामे जफा उनको हो राहत कैसी!
हैफ! यक साथ गमो रञ्ज निभाये क्योंकर॥

दिलको थामे हुए और पकड़े जिगर बैठे हैं,
सामने अपने वही शामो सहर बैठे हैं।
हम दिये लख़्त जिगर नूरे नजर बैठे है.
आप बश्शाश वहां पाके जफर बैठे हैं।
जख्मे दिल आपको हम यांसे दिखाये क्योंकर॥

हम शबो रोज सितम सहते हैं दुःख भरते हैं,
होता है और गजब आह अगर करते है।
साफ गोईमें यह इन्साफ कि हम मरते है,
हाले दिल कैसे कहें! कहते हुए डरते है।
सरगुजश्त अपनी सद अफसोस! सुनायें क्योंकर।

कोई याकूबसे यूसुफका छुड़ाना पूछे;
भरतके दिलसे कोई 'राम' का जाना पूछे।
कोई इङ्गलैण्डसे किचनरका डुबाना पूछे,
कोई पञ्जाबका 'भारत' से फसाना पूछे।
सोगमे सानहे ऐसे न: बिठायें क्योंकर ॥

साहबे खेलो खुदम जाहो हशम आप हैं गो,
हम भी इन्सान हैं आखिरको खुदाके वन्दो।
किस तरह दर्दसे पुर दर्द न अपना दिल हो,
किस तरह गमका न महसूस असर हो हमको।
किस तरह गम न करें! ऐश उड़ायें क्योंकर ?

नश्तरे गम भी चुभे दर्द भी जल्लाद न हो,
गोलियां सर पै पड़ें आह भी शद्दाद न हो।
रोज ताज़ा हो सितम फिर वह हमे याद न हो,
शिकवेदाद भी ऐ! बानिये बेदाद न हो।
मुह से निकलें तेरे खञ्जरको दुआयें क्योंकर ॥

आज था वक्त गिरफ्तारोंकी गमख्वारीका,
आज था वक्त यतीमोंकी निगहदारीका।
आज था वक्त सिला मिलता वफादारीका,
आज था वक्त कही जश्नकी तैयारीका।
देखो यह सूझी है क्या इनको सुझायें क्योंकर ॥

यह रिफाकत! नही इसपर भी असर गर अपना,
तो चलाने दो उन्हें शौकसे खञ्जर अपना,

बैठे खामोश रहो जाय भी गर सर अपना।

कौले 'गांधो' ही बना रक्खा है रहबर अपना।

दिल पसन्द उनकी नसीहत हैं भुलायें क्योंकर।

--"चन्द रेगिस्तानी"

प्यारा हिन्दुस्तान।

(१)

परम प्राचीन कलाका कुञ्ज, बुद्धिबल शील पराक्रम पुञ्ज,
अनोखी नयी निराली शान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान॥

(२)

न पहली कीर्ति न पहला नाम, नहीं अब रहे यहां श्रीराम,
हृदयमें अबतक उनका ध्यान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान॥

(३)

बचा वीरोंका अब तक अंश, इन्हींका तीस कोटि यह वंश,
सहा दुख हुआ न अन्तर्धान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान॥

[४]

यहांपर आये कितने गैर, लूटने हमको लेने बैर,
मिटा था उनका नाम निशान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान॥

[५]

सताकर दिखा जुल्मकी धूम, बनाकर गये हमें महकूम,
कहांतक उनका करै बयान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान॥

[६]

आज तक रहे दुर्दशा भोग, लगे दिन रात अनगिनत रोग,
दबाते हमको मरी मसान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥

[७]

किन्तु अब करते निद्रा त्याग, लगी है देश प्रेमकी लाग,
मातृ-पूजाका विमल विधान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥

[८]

कलित कश्मीरी केसर रङ्ग, बम्बई अङ्ग बङ्ग सब सङ्ग,
चढ़ा देंगे तन मन धन प्रान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥

[९]

प्रेमका पुष्प, अश्रुका नीर, ताप त्रय तापित शुद्ध शरीर,
उच्च स्वर भुवन मोहिनी तान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।

[१०]

विश्वका बन्धु कर्म-पथ पथी, वही फिर होगा भारत रथी,
सिखाने आता गाता ज्ञान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥

[११]

विलपती माता आओ नाथ, बांसकी बंसी फिर हो हाथ,
सुना दे कुंवर कन्हैया गान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥

[१२]

नहीं अब लीलाका अवकाश, मचा है कैसा सत्यानाश,
नहीं गो रहे नहीं धन धान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥

[१३]

किया है हमने श्रुति पथ त्याग, कलङ्कित काशी पुरी प्रयाग,
कृष्ण अब कैसे हो उत्थान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान॥

[१४]

हृदयमे भक्ति, शक्ति करमें, देश सेवा व्रत घर घरमे,
यही दो वासुदेव वरदान। हमारा प्यारा हिन्दुस्तान॥

—चक्रसुदर्शन।

असहयोग कर दो।

(१)

कठिन है परीक्षा न रहने कसर दो;
न अन्यायके आगे तुम झुकने सर दो।
गंवाओ न गौरव नये भाव भर दो;
हुई जाति बेपर है तुम इसको पर दो।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो।

(२)

मनाते हो घर घर खिलाफतका मातम;
अभी दिलमें ताज़ा है पञ्जाबका ग़म।
वहे देखता है खुदा और आलम;

यही ऐसे ज़ख्मोंका है एक मरहम।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो।

[३]

किसीसे तुम्हारी जो पटती नहीं है;
उधर नींद उसकी उचटती नही है।
अहम्मन्यता उसकी घटती नहीं है;
रुदन सुनके भी छाती फटती नहीं है।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो।

(४)

बड़े नाज़ोंसे जिनको माओंने पाला;
बनाये गये मौतके वे निवाला।
नही याद क्या बाग़ जलियानवाला;
गये भूल क्या दाग़ जलियानवाला।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो।

(५)

गु़लामीमें क्यो वक्त़ तुम खो रहे हो;
ज़माना जगा हाय तुम सो रहे हो।
कभी क्या थे पर आज क्या हो रहे हो;
वही बेल हर बार क्यो बो रहे हो।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो।

(६)

हृदय चोट खाये दबाओगे कबतक?
बने नीच यो मार खाओगे कबतक?

तुम्हीं नाज़ बेजा उठाओगे कबतक ?
यं धे बन्दगी यो बजाओगे कबतक ?
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ।

(७)

नजूमीसे पूछो न आमिलसे पूछो;
रिहाईका रस्ता न कातिलसे पूछो ।
ये है अक्लकी बात आकिलसे पूछो;
"तुम्हे क्या मुनासिब है खुद दिलसे पूछो" ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ।

(८)

जियादा न जिल्लत गवारा करो तुम;
ठहर जाओ अब वारा न्यारा करो तुम ।
न शह दो, न कोई सहारा करो तुम;
फंसो पापमे मत कनारा करो तुम ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ।

(९)

न कुछ शोर गुलके मचानेसे मतलब;
किसीको न आखें दिखानेसे मतलब ।
किसीपर न त्योरी चढ़ानेसे मतलब;
हमे मान अपना बचानेसे मतलब ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ।

[१०]

नही त्याग इतना भी जो कर सकोगे;

नदी मोहकी जो नहीं तर सकोगे।

अमर होके जो तुम नही मर सकोगे;

तो फिर देशके क्लेश क्या हर सकोगे।

असहयोग कर दो असहयोग कर दो।

[११]

अगर चाहते हो कि स्वाधीन हों हम;

न हर बातमे यों पराधीन हो हम।

रहें दासतामे न अब दीन हों हम;

न मनुजत्वके तत्वसे हीन हों हम।

असहयोग कर दो असहयोग कर दो।

[१२]

न भोगा किसीने भी दुख-भोग ऐसा;

न छूटा लगा दास्यका रोग ऐसा।

मिले हिन्दू मुसलिम लगा योग ऐसा;

हुआ मुद्दतोंमें है संयोग ऐसा।

असहयोग कर दो असहयोग कर दो।

—"त्रिशूल"

बधाई और बिदाई

प्यारे भाई, आज बधाई और विदाई,
विजयादशमी विजय—सूचना देती आई।
दग्ध हो चुकी निशाचरी मायाकी लङ्का,
सिन्धु पार मिट गई भारत-श्रीकी शङ्का।
सुप्रभात है आज देशके लिये विजयका,
वह विभीषिका पूर्ण तिमिर रह गया न भयका।
चमक उठी स्वातन्त्र्य सूर्य्य-किरणे समुदयसे,
दमक उठा मुख दिव्य देशका दृढ़ निश्चयसे॥
सिद्धान्तोंके लिये जेल क्या, मरना कम है;
हमें मुक्तिदा मृत्यु मुक्तिमाता ही सम है।
बन्धन हिन्दू धर्म देहको भी कहता है,
साधनार्थ ही जिसे आर्य्य हिन्दू सहता है॥
हथकड़ियां कम तुम्हें नहीं होगी गहनेसे,
जेल नरक हैं क्रूर पापियोंके रहनेसे।
पर यदि त्यागी, देशभक्त जन उनमें जावे,
तो फिर वे ही क्यो न कृष्ण-मन्दिर कहलावे॥
जाते हो तुम आज उसी मन्दिरमे, जाओ,
प्रकट हुए प्रत्यक्ष जहां प्रभु, दर्शन पाओ।
अभिमान था कंस बन्दिगृह जिसे बताता,
बनी देवकी बनी जहां थी भारत माता॥

वैसी ही यह दशा वहुत दिन नहीं रहेगी।
उसी तरह फिर इसे न प्रभुकी दया सहेगी।
अधिकारोंकी शक्ति दिखा आओ जितनी है,
आत्माके उन्मुक्त भाव-सम्मुख कितनी है ?

जिस गौरवके साथ जा रहे हो, आओगे,
तुम स्वदेशकी दशा दूसरी ही पाओगे।
आज मारना छोड देशने मरना सीखा,
है कहनेके साथ साथ कुछ करना सीखा॥

षड़यन्त्रोंकी रही न अव आवश्यकता है,
करके वृथा प्रहार विपक्षी ही थकता है।
गुप्त समितियां वने यहां क्यों ? भय ही छूटा,
उलटा उनकी कूटनीतिका भण्डा फूटा !

युद्ध छिड़ा है किन्तु रक्तका पात न होगा,
आत्मघातसा किसी अन्यका घात न होगा।
आत्मा है यदि अमर समरमे हार न होगी,
पराधीनता हमें कभी स्वीकार न होगी॥
– मैथिलीशरण गुप्त।

डवल जेण्टिलमैन

हम स्वदेशी नहीं वनेंगेजी।
दूसरेके वया वाप दादेकी॥

आज डङ्केकी चोट कहते हैं।
प्रेम है देशका नहीं मुझमें ॥ १ ॥
क्या कहूँ मूढ़ उस विधाताको ?
जन्म मेरा दिया कुभारतमें ॥
भेट जो हो गयी वर्चार्जीसे।
कान धरके गरम करूंगा मैं ॥ २ ॥
देश सेवा बड़ी बुरी लत है।
पागलोंके लिये मुबारक हो ॥
धर्म धन धामको तिलाञ्जलि दे।
घूमते हैं वृथा निखट्टूसे ॥ ३ ॥
खद्दरोंको पहन अरे बाबा।
कौन अपना शरीर छिलवावे ॥
सूटको अग्निमें जला करके।
बांध लंगोट को बने नङ्गा ॥ ४ ॥
व्यर्थ टाइमका लास होवेगा।
यह निगोड़ा चला यहां चरखा ॥
लोग अपनी स्वतन्त्रता खोकर।
बेड़ियां डाल गेहमें बैठे ॥ ५ ॥
कौन देशी चने चबावेगा ?
जीभ वाइन औ बिस्कुटोंवाली ॥
स्वाद उसका मिला मजेका है।
अब भला छोड़ क्यों उसे सकते ॥ ६ ॥

एक हिन्दी जुबान है गन्दी।
देश इसपर बना हुआ लट्टू॥
अपनेको यह जरा नही भाती।
बोलनेमें कलेज दुखता है॥ ७॥
हो गया देशमे है नाको दम।
क्या करे वश जरा नही चलता॥
देश होता जो यार पञ्जेमे।
तोपदम वे कहे सुने करता॥ ८॥
लेक्चरोमें धरा नही कुछ है।
व्यर्थ ही लोग जाके सुनते हैं॥
जो हमारेसे विज्ञ काठ पुतले।
धन्य है वे नहीं समझते कुछ॥ ९॥
बढ़ रहे देशमें असहयोगी।
रोग है बढ़ रहा बड़े जोरो॥
न्यायके जो नगद नमूने है।
रोकना धर्म है परम उनका॥ १०॥
देशसे कौन है हमे नाता।
दूर देशोमे वास है अच्छा॥
चार दिनके लिये जमानेमे।
शान शौकत न टूटने पावे॥ ११॥
— जगन्नाराचपाण्डेव शर्मा

———

भारत-गीत

जय जय प्यारा भारत देश।

जय जय प्यारा, जगसे न्यारा, शोभित सारा, देश हमारा।
जगत-मुकुट, जगदीश-दुलारा, जग-सौभाग्य, सुदेश॥
जय जय प्यारा भारत देश।

२

प्यारा देश, जय देशेश, अजय अशेष, सदय-विशेष।
जहां न सम्भव, अघका लेश, सम्भव केवल, पुण्य प्रवेश॥
जय जय प्यारा भारत देश।

३

स्वर्गिक शीश फूल पृथिवीका, प्रेममूल, प्रिय लोक-त्रयीका
सुललित-प्रकृति-नटीका टीका, ज्यों निशिका राकेश॥
जय जय प्यारा भारत देश।

४

जय जय शुभ्र हिमाचल शृंगा, कल-रव-निरत कलोलिन गंगा
भानु प्रताप—चमत्कृत अंगा, तेज पुञ्ज तप-वेश॥
जय जय प्यारा भारत देश।

५

जगमे कोटि कोटि जुग जीवै जीवन सुलभ अमी-रस पीवै।
सुखद वितान सुकृतका सीवै, रहै स्वतन्त्र हमेश॥
जय जय प्यारा भारत देश।

—श्रीधर पाठक

अपने वतनपर मरना खेल है हमारा

सर मुल्कपर तसद्दुक मज़हब पे दिल फ़िदा है।
अल्लाह रास्त लाये ये अहद कर लिया है॥
हमसे न कोई पूछे दिलमे हमारे क्या है।
कुछ हसरते-वतन है कुछ दर्द कुछ वफ़ा है॥
भारतकी खिद्मतोमे जो लुत्फ़ मिल रहा है।
कुछ हम ही जानते हैं कुछ दिल ही जानता है॥
क़ौलो क़समके अपने पाबन्द हैं हम ऐसे।
जो कुछ कहा ज़ुबासे करके दिखा दिया है॥
अपने वतन पै मरना एक खेल है हमारा।
जब चाहो आज़मालो फिर सचको आंच क्या है॥
जांबाज़ियां हमारी वे मेहरियां तुम्हारी।
दुनियां भी जानती है अल्लाह जानता है॥
हिन्दोस्तांकी कौमें बेदार हो गयी हैं।
अब पर्दा गफ़लतोंका आंखोंसे उठ गया है॥
हम वह भी जानते हैं जो कुछ है होनेवाला।
हम ये भी देखते हैं जो कुछ कि, हो रहा है॥
खुद गर्ज़ियां तुम्हारी हर कौम जानती है।
वादा-खिलाफ़ियोंने बदनाम कर दिया है॥
आज़ादिये वतन और आज़ादिये-खिलाफ़त।
हर वक्तकी आरज़ू है ये अपना मुद्दआ है॥

तर्जे-अमल तुम्हारा हमको नहीं गवारा।
हम तुमसे कब फिरे हैं तुमको खयाल क्या है॥
इस जिन्दगीका "नश्तर" कुछ भी नही भरोसा।
जबतक भी आ रहा है ये सांस आ रहा है॥

—"नश्तर"।

स्वराज्य लेंगे

प्रण है यही हमारा, अब हम स्वराज्य लेंगे।
दुख विघ्न लाख आयें, पर हम स्वराज्य लेंगे॥
हम जानते हैं कितने, है शत्रु भी हमारे।
पर भय नहीं हमे है, लेंगे, स्वराज्य लेंगे॥
सोये रहे युगोंतक, अज्ञानमें पड़े हम।
पर जाग अब गये हैं, लेंगे, स्वराज्य लेंगे॥
अङ्गद समान पग अब, हमने जमा दिये है।
कुछ हो, नही हटेंगे, लेंगे, स्वराज्य लेंगे॥
हम भारतीय ही है, प्रह्लाद ध्रुव यहीं थे।
प्रणसे नही डिगेंगे, लेंगे, स्वराज्य लेंगे॥
अधिकार जन्मसे ही, हां, जो हमें मिला है।
उसको न पावेंगे क्यों, लेंगे, स्वराज्य लेंगे॥
सरकार भी हमारी, स्वातन्त्र्य प्रेमिणी है।
विश्वास है, "दिहाती", लेंगे, स्वराज्य लेंगे॥

"दिहाती"।

काया-पलट.

[१]

चलो ! चलो !! प्रिय उठो ! लखो, वह भारतमे सतयुग आया।
स्थान स्थानपर तपोनिरत ऋषि जन-कृत होम-धूम छाया॥
शिव ! शिव !! अरे गजबका धोखा ! सत्य सृष्टि या स्वप्न जगत्।
होय नही यह चिता धूम है ! कृताभास, कलिकाल महत्॥

(२)

प्रमुदित, हर्षोत्फुल्ल, सुखी जो किसी समय थे नर-नारी।
उदासीनता, भीति, निराशा छायी अब उनपर भारी॥
दुविधा, पापी पेट पूरनेको घर घर हा हा खाते !
नीच नौकरी भी न मिले हा ! बे-मौतो मारे जाते !!

[३]

तीव्र वायुका वेग न सहकर फल-दल ज्यो झड़ जाते हैं।
आधि व्याधि-उपाधि-स्पर्शतकसे ये झट् पड़ जाते है॥
दरिद्रता, निर्बलता घेरे, पराधीनतासे जकड़े॥
जैसा करुण-दृश्य है ! लखकर पिघले पत्थर कड़े कड़े॥

[४]

नर तो क्या, पशु-पक्षि पुञ्ज भी दुःख-दलित, चिन्ता-आक्रान्त !
रम्य प्रकृति, प्रसन्न-वनश्री दिखती है अति क्लान्त-श्रान्त !!
सतत स्मितिकर्ता पुष्पोकी पाति विषण्य, खिन्न अति दीन !
मानो जीवन-जाल तोड़कर मृत्यु-मन्त्र जपनेमे लीन !!

[५]

क्यों जी, क्या है यही आर्य्य-भू? धोखा तो फिर नहीं हुआ?
भारतके भ्रम अन्य देशमें तो न आगमन कहीं हुआ?
पूर्वोज्ज्वलता-चिन्ह नहीं है गौरव-गरिमा लुप्त हुई!
पवित्रता, औदार्य, सुजनता, दया-लीनता सुप्त हुई!!

[६]

कहां कहो, वे दिव्य तपोवन, पुण्यद उपवन, सुखकर याग?
स्वस्थ प्रसन्न, शान्त निर्भय जन, पुनि तन-मन-धनका वह त्याग!
इच्छा बलकी प्रबल प्रेरणा, उग्र तपो द्वारा वह सिद्धि—
"अष्ट सिद्धि नवनिधिके स्वामी, दासी थी उनकी वर ऋद्धि"!!

(७)

त्रिकालज्ञता, ध्यान-धारणा अद्भुत मनन शीलता, योग।
अचल आसमुद्रान्त राज्य वह विविध ऐश्वर्य्योंका भोग॥
मर्य्यादा पुरुषोत्तम रघुवर, योगेश्वर श्रीकृष्ण कहां?
पूर्ण विरक्त जनक पृथ्वीपति, धर्म्म-मूर्ति वह धर्म कहां?

(८)

कालिदासका प्रजा-पिता वह नृप दिलीप दिखता न कहीं?
होता तो यह प्रजा म्लान-मुख बुभुक्षिता होती न कहीं?
क्षत्रिय—सम्पन्ना भारत-भू क्षात्र-धर्म्मसे हीन हुई।
यह, कङ्कड़-कण्टक-ठूंठ भरित अति दीन हुई॥

—

[६]

धर्म्म कर्म्मकी रङ्ग भूमि यह प्रेत-पुरी हो रही महा।
तत्व ज्ञानकी जननी देखो, दास्य-ध्यानमें मग्न अहा !
हरिश्चन्द्रकी सत्य-धरापर कूट-कपट छल-बलका राज।
धन्य भाग्य ! जो सपनेमें भी लखा नहीं, सम्मुख है आज॥

[१०]

अमृतोत्पादक सुर-गणकी जो थी लीला-शाला अनुपम।
दुर्धर रोग-शोक-रिपु करते नृत्य वहीं अब हा ! हरदम॥
रक्त-मांस-बल-हीन हुई यह धन्वन्तरिकी प्रिय माता।
अस्थि-चर्म्म अवशिष्ट देह लख भय अति है उसमें आता॥

(११)

पूर्व्व-प्रीतिको छोड़ हुआ यह पश्चिम-मायासे मोहित।
पूर्व्व-उपेक्षा करके यद्यपि पश्चिम रोता है शोकित॥
पूर्व बिना पश्चिम नश्वर है, नेचरका यह सिद्ध नियम।
कर अवहेलना इसका कोई पा न कभी सकता है शम॥

(१२)

यह अध्यात्म-जगत्‌की देवी जड-मन्दिरमें बन्द हुई।
सत्य ज्ञानकी आंखें देखो, असद्ध्यानमे 'अन्ध हुई'॥
'सोऽहं' का अधिकार त्यागकर त्याज्य पदोंका करता लोभ।
उच्च, उदात्त, ध्येयकी विस्मृति ! क्षुद्र, तुच्छ बातोंका क्षोभ !!

(१३)

हन्त ! हन्त !! भारतका कैसा शोच्य, घृण्य अति रूपान्तर !
नहीं, घोर यह अधःपात है, सर्व्वनाश है बहु दुस्तर !!

कृष्ण, भीष्म, वर हरिश्चन्द्रके स्मारक या प्रतिनिधि,पण्डित ।
लोकमान्य, अति पूज्य महात्मा, धैर्य-वीर्य गुणसे मण्डित ॥

(१४)

नेता भी यदि हार गये तो भारतकी जीर्णा नौका ।
पार न होगी कभी, नहीं फिर आनेका ऐसा मौका ॥
चलो, चलो, अब लौट चलें परमात्मासे प्रार्थना करें ।
उनको प्रिय अवतार-भूमिकी दुःस्थितिकी सूचना करें—

(१५)

"परम पावनी भरत-भूमिपर नाथ ! कृपाकी कोर करो !
दया-दृष्टि इस सुर-दुर्लभ, पर-पतित: देशकी ओर करो !!
शीघ्र न संभले अगर, याद रखना पीछे पछताओगे !
घोर दुःख-दारिद्र्य जात, बस, नास्तिकता ही पाओगे !!

—हरिभाऊ उपाध्याय ।

राष्ट्र-गीत ।

मेरा देश मेरा देव, मेरा देव मेरा देश ।
उसकी धूल, सुखकी मूल,
उसकी सेवा, मञ्जुल मेवा,
उसकी पूजा प्रेम सहित कर, काटें उसके क्लेश ।

उसका मान, लाभ महान,

उसकी वृद्धि, सुखदा सिद्धि,

उसका गौरव सदा बढ़ाना, हो मेरा उद्देश ।

वह स्वाधीन, विघ्न -विहीन,

बल संयुक्त, वैर-विमुक्त,

नही परपक्षी करने पावें उसमे कभी प्रवेश ।

वह दिग्विजयी, ध्रुव-नय-निलयी,

जग—सम्राट, हो विभ्राट्;

गूंजे राष्ट्र गगनमे यह ध्वनि "जय भारत भुवनेश" ।

—गोकुलचन्द्र शर्म्मा

पीड़ित—पुकार

राघवेन्द्र शीघ्र आय जन्म-भूमि लो बचाय ।

दुःख दैन्यको नशाय राम-राज्य दो दिलाय ॥ १ ॥

वर्तमान राज्य-नीति हिन्दमे करै अनीति ॥

भ्रात भ्रातमें अप्रीति सैकड़ो रची कुरीति ॥ २ ॥

वैर-फूट फूल फूल देशमे फले अभूल ।

फल रहे सभी समूल कीजिये इन्हें अमूल ॥ ३ ॥

श्वेत-श्याम-रङ्ग-भेद न्यायमे धंसा सभेद ।

श्वेत-रङ्गका सुन्याय श्यामको मिले न हाय ॥ ४॥

काम-धेनुका संहार हो रहा बिना विचार ॥
जान-माल बे शुमार श्वेत-स्वार्थ पै निसार ॥ ५ ॥
सत्य-सीयको चुराय हिन्दसे दिया हुराय ।
रोग-शोकको पुराय है रही हमें भुराय ॥ ६ ॥
सोम-गानको सुनाय दाममें कभी फंसाय ।
दण्ड-देहसे डराय भूत-भेद दे चढ़ाय ॥ ७ ॥
भाव दुष्टको दंवार नाथ ! लोहमें उवार ।
कर्म-वीरकी पुकार दम्भका दलै पहार ॥ ८ ॥

— टीकाराम भट्ट

हमारी प्रतिज्ञा

संसारको देंगे दिखा हम देशपर कुरबान हैं ।
परवा नहीं कुछ भी हमे हम देशपर कुरबान हैं ॥
बलिदान होना हमने सीखा है पतङ्गोसे अहो ।
चिन्ता नहीं होवें भसम हम देशपर कुरबान हैं ॥
लड़ना पड़े यदि कालसे भी देश भारतके लिये ।
जीत लेगे उसको भी हम देशपर कुरबान हैं ॥
लाखो सहे हम आपदा पर मुख न मोड़ेंगे कभी ।
पिस पिसके चटनी होयगे हम देशपर कुरबान हैं ॥

मातृ-भूमीके लिये यदि जेलमें जाना पड़े ।
साबित वहां भी हम करेंगे देशपर कुरबान हैं ॥
तोपोकी तीक्ष्ण बाढ़से भय खा नहीं सकते कभी ।
हम रोक देंगे सीना अपना देशपर कुरबान हैं ॥
स्वराज्यके हम यज्ञमें, निर्भीक कूदेंगे प्रभो ।
हंसते हंसते हम जलेंगे देशपर कुरबान हैं ॥

—ब्रजेश

स्वदेशी

स्वदेशी प्रेम जनतामें अगर एक बार हो जाये ।
हमारा राज्य भारतमें बिना तलवार हो जाये ॥
वसन बनने लगें सुन्दर, हमारे हिन्दमे जिसदम ।
उसी दम मैनचेस्टरका, नरम बाजार हो जाये ॥
विदेशी वस्तु लेनेसे, जभी हम हाथ धो बैठे ।
तभी आधीन यह अपनी कड़ी सरकार हो जाये ॥
सुदर्शन चक्र चर्खेको अगर सब हाथमें लेलें ।
भयानक तोप भी उससे यहां बेकार हो जाये ॥
स्वदेशी प्रेम मिल गायें अगर श्रीराग भारतमें ।
बगीचा हिन्दका सूखा अभी गुलजार हो जाये ॥

न बेचे जो रुई अपनी कभी हम हाथ गैरोंके।
बनाना वस्त्रका उनको बहुत दुश्वार हो जाये॥
बचा ले द्रव्य जो अपना विदेशोंके लुटेरोंसे।
अभी निर्धन हमारा देश यह धनवान हो जाये॥

—'लाल'

कब तक ?

उठो उठो हे स्वदेशवासी, नशेमें डूबे रहोगे कबतक।
शराब पी पी खराब हो हो गुलाम   ी सहोगे कबतक॥
गरीब लोगो! तुम्हे हुआ क्या, अकलको ...ाखिर कहां गंवाया।
न सोचते हो विपत्तियोंको अथाह नदमें बहोगे कबतक॥
न पेट कटनेका खौफ तुमको, न नाक कटनेकी लाज तिलभर।
'हमारे हकमें जहरकी प्याली हुई है मदिरा' कहोगे कबतक
दबा रही है पराधीनता, सता रही है दरिद्रता भी।
अनीतियोंकी अगस्य दहमें पड़े किनारा गहोगे कबतक॥
विलासिताके अपूर्व भक्तो! तुम्हारी आंखे मुंदी है अबतक।
मनुष्यताका न मोल समझा कुकीर्ति जगमें लहोगे कबतक॥
सदा फलेगी न स्वार्थ-लतिका, सदा चलेगी न यह नवाबी।
संभलतो जाओ समय अभी है, सचेत 'निश्चल' न होगे कबतक॥

—"निश्चल"

मातृ-भाषा

(१)

परम धन्य, नर रत्न, प्रशंसा पात्र वही है ।
प्राप्त-जन्म-उत्कर्ष, मोक्षका छात्र वही है ॥
जिससे उन्नतिमूल, स्वभाषा उन्नति पाती ।
उसकी ही कल कीर्ति, विश्वमें गायी जाती ॥
तुमसे ही वीरेन्द्रका, हिन्दीको अभिमान है ।
हिन्दीसे ही हिन्दका निश्चय पुनरुत्थान है ॥

(२)

निज उन्नतिकी आश, तुम्हींसे वह रखती है ।
तुमको ही निजवीर, सहायक वह लखती है ॥
हिन्दीका उद्धार तुम्हींसे हो जावेगा ।
हिन्दी हितसे हिन्द, पूर्व गौरव पावेगा ॥
नम्र निवेदन है यही, हिन्दीका भगवानसे ।
शीघ्र [illegible] वह करे, तुमको शक्ति महानसे ॥

(३)

यद्यपि हिन्दी आज, [illegible] रोती है ।
तदपि उन्नति आस, तुम्हींपर धर जीती है ॥
तुलसी केशव सूर, तुम्हींमेंसे होवेंगे ।
वर्द्धितकर साहित्य, देशका दुख खोवेंगे ॥

हिन्द-हितैषी हिन्दुओ, हिन्दीकी जय बोल दो।
हिन्दी माताके लिये, उन्नति-द्वारा खोल दो॥

(४)

देखो-जग-इतिहास, तुम्हें क्या सिखलाता है।
उन्नतिका सोपान, साथ ही दिखलाता है॥
वही विश्वमें विजय, ज्ञान गौरव पावेगा।
निज भाषाका मान, जिसे करने आवेगा॥
भारतेन्दुकी युक्ति यह, सचमुच ही अनुकूल है।
निज भाषाकी उन्नति करो, जो सब उन्नति मूल है॥

(५)

हिन्दीका सम्मान हिन्दुओ, खूब बढ़ाओ।
हिन्दी हितका पाठ, बन्धुओ सबहिं पढ़ाओ॥
हिन्दू हिन्दी-ध्वजा, हिन्दमें उठो उड़ादो।
भाषाकी कर भक्ति, समुन्नति शिखर चढ़ा दो॥
ऋणसे हिन्दी मातके, भ्राताओ उऋणी बनो।
एकप्राण हो प्रेमसे, हिन्दी सेवामे सनो॥

(६)

माताके ही सरिस, मातृभाषा होती है।
दुर्बलता दारिद्र्य देशदुख्को खोती है॥
जो अपना साहित्य, अधोन्नत कर देते है।
वे स्वदेशको विविध दुखोसे भर देते हैं॥

अन्धकारमय देश वह, जहां नहीं आदित्य है।
शवसदृश वह देश है, "जहां नहीं साहित्य है" ॥

(७)

निज भाषाकी सभी आज, उन्नति करते हैं।
फिर क्यो हिन्दूवीर, पैर पीछे धरते है॥
हिन्दीका यह ह्रास, हिन्दुओ भ्राता-तुमको।
सोचो तो क्यो हुआ, अकीरत-दाता तुमको॥
धो डालो अपकीर्तिको, वीरो परिकरवद्ध हो।
सब गुणआगरि नागरी, की अभिलाषा सिद्ध हो॥

(८)

उठो, हिन्दुओ, शीघ्र, स्वभाषा उन्नत कर दो।
हिन्दीका भण्डार विविध रत्नोसे भर दो॥
हिन्दीका आशीस तुम्हे, मङ्गलदाता हो।
भारत-भाषा-राष्ट्र, "एक हिन्दी माता हो" ॥
"शोभा" की सर्वेशसे, यही विनय है प्रीतिसे।
शीघ्र विजय पावे प्रभो, भारत हिन्दी जीतिसे॥

—'धेनुसेवक'।

खँजरकी।

सुना है तेज़ करते हैं दुधारा धार खंजरको।
करेंगे क़त्लआम ऐसा मुकर्रर वह मेरे सरको॥
सबब पूछा तो यों बोले नहीं ज़ाहिर खता कोई।
मगर कुछ ढील पड़ती है शरारत दिलके अन्दरकी॥

उजाड़े घोंसले कितने चमन बरबाद कर डाले ।
शरारत उनकी नस नसमें भरी है खूब बन्दरकी ॥
चलेंगी कब तलक देखें ये बन्दर घुड़कियां उनकी ।
नचावेगी उन्हे भी एक दिन लकड़ी कलन्दरकी ॥
मेरे दर्दे जिगरमें आहमें नालेमें शीवनमें ।
नजर आती है हरसू सूरते जालिम सितमगरकी ।
खमीदा करके गर्दनका कहा तेगाजमाई हो ।
रहगयी आरजू कातिलमें लाली न हो खंजरकी ॥

"ईश्वर"

चल बसे ।

मक्रो फरेब ! चल बसे अब दिन शबाबके,
मड़राने लगी मौत भी सरपर जनाबके ।
जब वक्त था हुजूरका तब ऐश किया खूब,
सामान सजाये रहे दूलह नवाबके ।
जिनको न मयस्सर हुआ मांगा था ख्वाबमें,
उन तफने हाथ साफ किये खां पुलावके ॥
जिनको न थे नसीब कभी जामके दीदार,
लुढ़काये उनने शीशे हजारों शराबके ।
इस कौमकी शिकारका उनको जो हुआ शौक ॥

कटवाये गये बच्चे भी खानये खराबके,
पर अब है हवा और ज़माना भी और है।
खिलते हैं उजड़े बागमें गुल अब गुलाबके ॥
जब कौमके गममें हुए 'गुलजार' भी बेजार;
तब आपके भी आ गये दिन इज्तराबके।

—देवीप्रसाद गुप्त,
बी० ए०, एलएल० बी०

महालक्ष्मी-विनय

(१)

जय कमला, हरि-प्रिया, रमा, पद्मा कल्याणी!
सिन्धु-सुता; सुख-लता, जयति माता सर्वाणी!
विमुख हुईं क्यों? हाय! हुआ भारत गारत है!
पड़ा हुआ परतन्त्र, त्राहि करता आरत है!
दुख-दलित जननि! हो अब कृपा, सुखद पदार्पण कीजिये।
तज रोप दोष करके क्षमा, देश-कोष भर दीजिये ॥

(२)

भारत राज्येश्वरी! देख लो दशा हमारी।
बिना तुम्हारी कृपा विफल है आशा सारी।

कठिन प्रतीक्षा इधर हो रही जननि ! तुम्हारी।
उधर विदेशी-वायु लगी है तुमको प्यारी।
पर सत्य कहो इस देशसा आदर मिलता है कहीं ?
इससे ठुकराना छोड़कर देवि ! लौट आओ यहीं।

—"रसिकेन्द्र"।

असहयोग व्रत

असहयोग व्रत धारि जगतमें वीर कहाओ।
न्याय सत्यपर रहो डटे, निज मन न डिगाओ॥
अन्यायीका सङ्ग, जगतमें दुख देता है।
जो सहता चुपचाप, पाप शिरपर लेता है॥
मनसा वाचा कर्मणा असहयोग ध्याते रहो।
अन्यायीका साथ दें ? कभी नहीं, कहते रहो॥१॥
जो आया जग बीच, अवश उसको मरना है।
कर्म शुभाशुभ, अवश उसे जगमें करना है॥
फिर विचार कर कर्म नहीं क्यों करते भाई।
कर लो ऐसे कर्म कि जिनसे होय बड़ाई॥
असहयोग, अन्यायसे करना ही शुभ कर्म है।
हृदय बीच निज धार लो,मुख्य यही इक धर्म है॥२॥

—शुकदेवप्रसाद तिवारी।

क्या खूब देशोद्धार करते हैं।
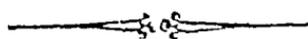
ड़े डरपोक हैं, अपना वतन बरबाद करते हैं"।
हमें ऐसा जो कहते हैं ग़लत इजहार करते हैं॥
में है चाह हिन्दुस्थानके, उद्धारकी पूरी।
गढ़ाया इस लिये ही, नित नये कानून करते हैं॥
सहयोग औ खिलाफत, हिन्दको गारत किये देते।
मगर हर्गिज न इन बातोंसे, हम इत्तिफाक करते हैं॥
ना सहयोग संघादिक, कराकर पास रौलट-बिल।
'सिडीशन' विप्लवादिकको वतनसे दूर करते हैं॥
क्त सरकारके पूरे, भरी है भक्ति नसनसमें।
इसीसे भूल डायर-ज़ुल्म हम सहयोग करते हैं॥
सल मशहूर यह जगमें, खुशामदसे खुदा राजी।
करें हां 'हां हुजूरी' गर, तो क्या अन्याय करते हैं॥
—कमलेश।

नालए बुलबुल।

देदे मुझे तू ज़ालिम मेरा ये आशियाना,
आराम गाह मेरी मेरा दहिश्तखाना।
देकर मुझे भुलावा घरबार छीनकर तू,
तलबों दबा रहा है मेरा ही ... दखाना।

उसके ही खाके टुकड़े बदख्वाह बन गया तू,
मुफलिस समझके जिसने दिलवाया आबोदाना।
मेहमां बना तू जिसका जिससे पनाह पायी,
अब कर दिया उसीको तूने यों बे-ठिकाना।
उसके ही बाग़में तू उसके कटाके बच्चे,
मुंसिफ भी बनके खुद ही तू कर चुका बहाना।
दर्दे जिगरसे लेकिन चीखूंगी जब मैं हरदम,
गुलची सुनेगा मेरा पुर दर्द यह फ़िसाना।
सोजेनिहांकी बिजली सरपर गिरेगी तेरे,
ज़ालिम तू मर मिटेगा बदलेगा यह ज़माना।
मुझको न इस तरहका तब कुछ मलाल होगा,
गुलज़ार फिर बनेगा अशारतका कारख़ाना।

—गुलज़ार।

रण-भेरीकी हुंकार।

(१)

यह महा भयङ्कर दशा देख हे माता!
सहसा मेरा मानस विह्वल हो जाता।
क्या करें, न कुछ भी करते हाय, बसाता।
आ जाता है वैराग्य न कुछ भी भाता॥

क्या बना रहेगा यों ही वेश तुम्हारा ?

हम भारतीय हैं, भारत देश हमारा ॥

[२]

बज रही, सुनो ! वह कान लगा रण-भेरी,

जुट रही जहांपर भट-मण्डली घनेरी।

तू भी प्रस्तुत हो जा, न लगा अब देरी,

चूके फिर रक्षा कौन करेगा तेरी ?

मत बना अभी भी रह कायर बेचारा।

हम भारतीय हैं, भारत देश हमारा ॥

(३)

अब डरनेका युग रहा न, नव युग आया,

कर कृपा ईशने अमर-भाव फैलाया।

सह पारतन्त्र्यका ताप देश अकुलाया,

अब उसे चाहिये स्वतन्त्रताकी छाया।

चाहेगा इसमे कौन न पतित उबारा ?

हम भारतीय हैं, भारत देश हमारा ॥

[४]

हम बने रहें अब दास न, नर-नायक हों,

सब भांति बापके हम बेटा लायक हों।

सर्वत्र देश-गुरु-गौरव परिचायक हो,

हों मित्र मित्रके, किन्तु शत्रु-शायक हों।

रक्खें हम ऊंचा सदा देश-हित प्यारा।

हम भारतीय हैं, भारत देश हमारा।

(५)

भटके सो भटके अब न कभी भटकेंगे,

अब होश ठीककर आगे बढ़े चलेंगे।

माई प्रतापसे भक्त सुशक्ति मिलेंगे,

हम बिना स्वराज्य लिये न कदापि टलेंगे।

करना वेदीपर आत्मोत्सर्ग विचारा।

हम भारतीय हैं, भारत देश हमारा॥

—"विभूति"

कौमी तराना

भारतके हाले जारकी किसको खबर नहीं।

पर हैफ! कि सैयादको अब भी सबर नहीं॥१॥

होते हैं रोज हम पे नये जुल्म औ सितम।

क्या हिन्द तेरी हायमें कुछ भी असर नहीं॥२॥

हम तो सहे मुसीबतें और तू हो शादमां।

जालिम तुझे खुदाका जरा भी तो डर नहीं॥३॥

गम खायें रञ्ज मनायें, सहें आफतें हजार।

पर नख्ले आरजूमे हमारे समर नहीं॥४॥

मर मरके हम तो काटते हैं जिन्दगीके दिन।
किस वास्ते इन्साफकी हमपर नजर नहीं ॥५॥
एक रोज था हरफनमें जब हमको कमाल था।
अफसोस! आज पहलासा इल्मो हुनर नहीं ॥६॥
जो जुल्म चाहे कर मगर इतना भी याद रख।
खौफे खिजां न हो जिसे कोई शजर नहीं ॥७॥
हम जेर हैं तो क्या हुआ, होंगे कभी जबर।
कोई भी शै नहीं है जो जेरो जबर नहीं ॥८॥
दिन रात कोशिशोंमें हैं "बेदिल" वतन परस्त।
पर माडरेट्सको तो जरा भी फिकर नहीं ॥९॥
—रामनाथ वर्मा 'बेदिल'।

भारतपर कुर्बान !

(१)

हमारा प्यारा भारतवर्ष; अपरिमित था जिसका उत्कर्ष।
विगत दुख क्लेश सञ्चरित हर्ष, निवासी हम उसके दुर्धर्ष॥
यही दिलने हो बस, भगवान!
'जान हो भारतपर कुर्बान'॥

(२)

मातृ-भू है जिसमें हम पले—और हम जिसमें फूले फले।
उसीपर तन, मन, धन, जन, भले—जांय सर्वस्व हमारे चले॥
न दिलमें बचे रहें अरमान।
'जान हो भारतपर कुर्बान'॥

[३]

कभी विचरे जिसपर प्रभु आप, बढ़ाते धर्म, हटाते पाप।
नष्ट करते सब दुख सन्ताप, आज वह दीन बना चुपचाप॥
करो, जो निज चाहो उत्थान—
'जान हो भारतपर कुर्बान'॥

(४)

धरापर था अपना आलोक कि हम थे चन्द्र—अन्य थे कोक।
ज्ञानके, उन्नतिके थे 'ओक', आज हम वही पतित, हा ! शोक॥
कहो, धर हृतमें प्रेम महान।
'जान हो भारतपर कुर्बान'॥

(५)

आज भी यह बन सके धरेन्द्र, आज भी हम हो सकें महेन्द्र।
आज भी भूके बने नरेन्द्र; आज भी हो सकते गुण--केन्द्र॥
किन्तु जो सब ही लें यह ठान।
'जान हा भारतपर कुर्बान,॥

(६)

सभी मिल जायें ईर्षा त्याग, प्रेमकी जले चतुर्दिक आग।
स्नेह-रंगका खेलें हम फाग, जाग तब फिर भी सकते भाग॥
कहें सब दीन, हीन, धनवान।
'जान हो भारतपर कुर्बान,॥

(७)

अविद्या गत हो फैले ज्ञान, लगे देशोन्नतिमें ही ध्यान।
करें सब मिथः प्रेम-पय-पान, गांय सब नित स्वोन्नतिका गान॥
स्वार्थका भारत हित बलिदान।
'जान भी भारतपर कुर्बान॥

—कन्हैयालाल जैन

अपनी हसरत

और सरपर नयी बला आयी, भेष बदले हुए क़ज़ा आयी।
बन्द यारो ज़ुबान होती है; सख्त आफ़तमें जान होती है।
दिल है और उसमें एक हसरत है; छुटती है है वतनकी ख़िदमत है
ग़म नहीं इसका ख़ाक होते हैं; मुफ़्तमें हम हलाक होते हैं।
अपने दुखड़ेका कुछ न रोना है; क़ल्ल हमको लहदका कोना है।
ग़म फ़क़त हां हमें वतनका है; दिलतो बुलबुल इसी चमनका है।
वलवले दिलके हाय! दिलमें हैं; हौसले दिलके हाय दिलमें हैं।
ख़ाक होती है हसरतें सारी, कर चुके क़ौमसे वफ़ादारी।

बुग्ज़ है, रश्क है, न कीना है, सोज़ है और अपना सीना है।
अपने ख़ादिमको मत भुला देना; याद आऊं तो याद कर लेना।
चार आंसू अगर बहाओगे; मेरे दिलकी लगी बुझाओगे!
भूलना तो हमें भुलाना तुम, पर वतनको न भूल जाना तुम।
मैं था यारों वतनका सौदाई; और 'सौदे' मे जानपर आई।
है तसल्ली कि आन बाकी है मिटने में हम पे शान बाकी है।

क्या भरोसा है दम रहे न रहे।
देखलो हमको हम रहे न रहे॥

—"त्रिशूल"

वतन आज़ाद मेरा हो।

खुदा या मेहरकी नजरोंसे गर इरशाद तेरा हो,
तो यह उजड़ा हुआ भारत अहा! आबाद मेरा हो।
हजारों सालसे बेदर्द लोगोंके हवाले है,
न यूं गैरोंके पंजेमें वतन बरबाद मेरा हो।
खुशी रखता है दुनियांको सभीका अन्नदता है,
मगर अफसोस फिर भी यह चमन नाशाद मेरा हो।
तमन्ना है कि यह शैतानियत उठ जावे दुनियांसे,

करूं कोशिश मिटानेकी अगर इमदाद मेरा हो।
कटे बेड़ी गुलामीकी तेरी नजरे इनायतसे,
यही फरयाद करता हूं वतन आजाद मेरा हो।
उठाते थे मुसीबतपर मुसीबत जिस तरहसे हम,
पड़ा पिंजरमें मेरी ही तरह सय्याद मेरा हो।

—चन्दूलाल वर्मा (चन्द्र)

हम भी कुछ कर जायेंगे.

(१)

मय न अब बातें गढ़नेका, देशबन्धुपर अघ मढ़नेका
बल्कि समुन्नतिगिरि चढ़नेका, कर्मठ हो आगे बढ़नेका ॥
तब ही गौरव पायेंगे, हम भी कुछ कर जयेंगे ॥

(२)

जीवनका उद्देश्य उदारा, है हमको प्राणोंसे प्यारा,
लग जावे सर्वस्व हमारा, पर हो भारतवर्ष सुखारा।
सुखी स्वदेश बनायेंगे। हम भी कुछ कर जायेंगे ॥

(३)

जय स्वदेशकी" सदा जपेंगे, हम स्वदेश हित ताप तपेंगे,
जगमें अक्षय कीर्ति धरेंगे. दृढ़ता लखकर विघ्न कपेंगे।
प्रतिपक्षी घबडायेंगे. हम भी कुछ कर जायेंगे ॥

[४]

जिस जननीने जन्म दिया है, पालन करके बड़ा किया है।

जिससे गौरव ज्ञान लिया है, जिसका निर्मल नीर पिया है।

उसका ध्यान लगायेंगे। हम भी कुछ कर जायेंगे॥

[५]

वही धन्य जो परहित करते, "जननी जन्मभूमिपर मरते"

दुख दारिद्र देशका हरते, सुख श्रीसे स्वदेशको भरते।

सुर उनका यश गांयगे। हम भी कुछ कर जायगे॥

[६]

जिन्हें देशका ध्यान नहीं है, निज गौरवका ज्ञान नहीं है।

उनको सुख सन्मान नहीं है, ना उनको उत्थान कहीं है।

वे भू-भार कहायेंगे। हम भी कुछ कर जायेंगे॥

[७]

जन्मभूमिपर प्यार करेंगे, अपना देशोद्धार करेंगे।

भारतका भण्डार भरेंगे, विजय शक्ति संचार करेंगे।

"शोभा" सुयश कमांयगे। हम भी कुछ कर जांयगे॥

—शोभाराम धेनुसेवक

शक्ति

[१]

जरासा देखो आंखें खोल, दिखाई देती सुन्दर मूर्ति।

मोहनी रूप, ज्योतिका धाम, स्वयं आ पहुंची मानो स्फूर्ति॥

यही है शक्ति, यही है भक्ति, यही है प्रेमपूर्ण अनुरक्ति।
इसीकी सेवा करना नित्य, यही देती सङ्कटसे मुक्ति॥
दिखाती है भीतरकी राह,
जलाती कण्टक, इसकी दाह।
उसीका होता है उपकार,
हृदयसे करता जो है चाह॥

[२]

यही करती है कुछ उपयोग, तन्तुमें रहता है जब याग।
इसीसे होता है अपयोग, गर्वका बढ़ जाता है रोग॥
रही है जिस जिसका यह ध्येय, किया है सदा उन्हींका श्रेय॥
किन्तु है जिसने दिया विसार, नहीं वह रहा जगतमें गेय॥
नष्ट हो भ्रष्ट हुआ बर्बाद,
बना केवल सशक्तका स्वाद।
काक-सा जीवन किया व्यतीत,
नहीं कोई भी 'करता याद!

[३]

झूठ मत मानो मेरी बात, शक्ति कहती है सुन लो तात!
'दबाई मैंने उसकी लाज, सही जिसने प्रभुताकी लात॥'
सहारा उसे हमारा मिला, नहीं था जिसका कुछ आधार।
घृणाकी थी जिसपर बौछार, प्यारके नाते मेरा प्यार॥

उदय होनेकी थी बस देर,
खिला वह नया पद्म ललाम।
तुहिनकी तुलनाके आघात,
सहे, पर देखो हैं अभिराम॥

[४]

हुई जिनमें मदान्धता व्याप्त, लगे करने मेरा अपमान।
सताया दीनोंको पर्याप्त, आहपर भी न दिया कुछ कान॥
जले पर हाय! लगाया लोन,कलेजा खोल खोल, दिल खोल।
धराशायी निर्बल थे मौन, बढ़ाया मैंने उनका मोल॥

सुखद फिर बहने लगा समीर,
शीघ्र फिर गया समयका चक्र।
स्यार बन चले सिंह बलवीर,
गिरे, जिनकी भृकुटी थी वक्र॥

(५)

जरा सुन लो उनका भी हाल,रहे 'अति' के जो थे नित भृत्य।
हुए मेरे कारण बेहाल, नचाया उनको कैसा नृत्य॥
मिली मेरे द्वारा जो वस्तु, मिलाया उसमें निज अन्याय।
किया मेरा अनुचित उपयोग, लगी तृष्णाकी खोटी हाय॥

कीचमें बोये करसे बीज,
खूब की मैंने इसकी जांच।
नष्ट कर दिया उन्हें बरजोर,
नहीं पर लगी सांचको आंच॥

(६)

साजकर सत्वर सारे साज, शक्तिका स्वागत कर लो आज।
यही है सुखमाओंकी खान, यही रख लेती आखिर लाज॥
चलो आओ, प्यारी नवशक्ति, दिखा जाओ अपनी शुभमूर्ति।
लगी जिसकी तुमपर है भक्ति, उसी बिगड़ेकी कर दो पूर्ति॥
गिरेका कर दो अब उत्थान,
तड़पने वाले होवें शान्त।
मृतकमें भर दो पूरी जान,
सजग हो जावें, जो है भ्रान्त॥

—"विदग्ध"

कैदीकी बिदा।

भाई रोको, तुम्हे आंसू नहीं शोभा देते।
आज वह दिन है खुशी विश्वमे बरसा देते॥
रोको बच्चोको न यों धूम मचायें आयें।
किसी दुश्मनका भी दे जी न जलाए आए॥
पिंजरेके द्वारसे कहता हूं मुझे याद रहो।
कौमको जिन्दा रखो जीते रहो शाद रहो॥
'फूलोंके हार'—नहीं हारसे हटना सीखूं।
प्यारे फांसीसे आगे दो लिपटना सीखूं॥

लेके हंगा मजेसे रस्सियां चटना सीखूं ।
थकके जाते हुए स्वच्छन्द हूं रटना सीखूं ॥
जाउं, मिट जाउं, वह मिटनेको है मैदान पड़ा ।
क्या है आजादी वह आ जानेको भगवान खड़ा ॥
जाते जाते भी सुना दो मुझे अल्लाहो अकबर ।
जिन्दा रक्खे मुझे इस युगमें भी जिसका असर ॥
बच्चो ! हंस हंसके वन्देमातरम् सुना तो दो ।
देशकी स्वतन्त्रताकी बांसुरी बजा तो दो ॥
पापके पर्वतोको तोड़नेवाली आंधी ।
आने दो, बोल दो जय जय महात्मा गांधी ॥
फकत ये कहना है मुझे तुम्हे जाते जाते ।
चार महीने हैं और दिन हैं यो जाते जाते ॥
मरके मिट जाना जो जीते जी गुलाम रहो ।
करके दिखलाना माता कहीं बदनाम न हो ॥
शान्त रहना न उभाड़ेसे उभड़ना हरगिज़ ।
एक हो तुम न बिगाड़ेसे बिगड़ना हरगिज़ ॥
सेवा करते हुए मैंने कई अपराध किये ।
बचते बचते भी मैंने भाई दिल दुखा ही दिये ॥
मानो तो जाकी एक अपनी और बात कहूं ।
देश ही याद रहे मैं न तुम्हे याद रहूं ॥
बस ठहर जाओ मेरे वज्र हियेसे छूटो ।
जोरको थाम लो अब और न मुझपर टूटो ॥

माया ममताएं हटा लो सुखी दीवानेसे ।
गम मनाना न कभी मेरे चले जानेसे ॥
मातृ वेदीपर थां बलिदान तो होने ही को था ।
आज या कल यहां महमान तो होने ही को था ॥

— माखनलाल चतुर्वेदी

राष्ट्रीय सैनिक ।

[१]

माताके कष्ट मिटानेको सैनिक अगणित तैयार खड़े ।
अकड़े है सारे रूठे हैं, स्वाधीन मार्गपर अचल अड़े ॥
खादीका खासा कुरता है उसकी ही गांधी टोपी है ।
मैयाको मुक्त करानेको धन-जान शौकसे सौंपी है ॥

[२]

'वन्देमातरम्'का घन-गर्जन वह राष्ट्र-ध्वजाका फहराना ।
'गांधीजी'की जय जय-ध्वनिसे रिपुओंके दिल दहलाना ॥
'साहबके प्यारे मन्दिर' में जा कष्ट झेल, मन बहलाना ।
[illegible] पर [illegible], वह वीर-केसरी कहलाना ॥

[३]

कुलियोंकी आह

याद पञ्जावकी दिलसे न भुलाने पाये।
अश्क आंखोंमें रहा हम न बहाने पाये॥
जख्म भरने भी न पाया था नमक डाल दिया।
आह ! ताजा था अभी हम न सुखाने पाये॥
नमक छिड़का गया हमपर मरहमे-जख्मके एवज।
गुलोंपर आब-सम डाला अबश शबनमके एवज॥१॥
जुल्म बेदादको सुन पीर फलक कांप उठा।
बहरमें आग लगी शोले उठे भाप उठा॥
मादरे-हिन्दने पाला था जिसे दूध पिला।
फन उठाये हुए आस्तीनका वह सांप हुआ॥
हजारों बेजबां बच्चे किये बे जान ठोकरने।
हमल बरबाद कर डाले इसी काफिर सितमगरने॥२॥
दिखा ले जोर तू मजलूमो पै अपना सैयाद।
हसरतें दिलमें छिपा करके न रखना सैयद॥
गर ऐ जालिमो कामतका तुम्हें ख्याल रहे।
पड़े न इसके लिये हश्रमें रोना सैयाद॥
कयामतमें जब होगी डिगरियां इजराह कुलियोंकी।
करेंगी आफतें बरपा ये तुमपर आह कुलियोंकी॥३॥

—"आजाद"।

मिट्टी मुबारक जेलखानेकी

हमें प्राणोंसे थी प्यारी मुसीबत जेलखानेकी।

खुदा बख्शे सबोंके दिलमें कूवत जेलखानेकी ॥

तुम आगे बढ़ रहे हो यह खबर मिलती न थी दुख था।

तरसती थी दरोदीवार इससे जेलखानेकी ॥

न कुछ था रञ्जोगम दिलमें न कोई फिक्र थी घरकी।

खुदा जांबाजोंसे भर दे वो बैठक जेलखानेकी ॥

वहां तो कृष्णके दर्शन हमें हर सबको होते थे।

बताता था हमें तो कद्रो-कीमत जेलखानेकी ॥

यह सन्देशा 'माधो' का मेरे प्यारोंसे कह देना।

हमें जन्नतसे थी मिट्टी मुबारक जेलखानेकी ॥

—माधव शुक्ल।

ध्येय

उठो ऐ भारती वीरो, जरा तो सोचकर देखो,

न लाजिम मीचना आंखे, जरा तो खोलकर देखो ॥

जो था भारत तुम्हारा ही, तुम्हें भी नाज था जिसपर,

वही है आज दुश्मनके, जरा तो सोचकर देखो ॥

हुए थे राम अर्जुनसे, जहांके देश-प्रिय नेता,
वहां है आज रौलट बिल, जरा तो सोचकर देखो ॥
जहांकि दस्स रैय्यतपर मेहरबानी ही करना था,
बजाये आज गोले हैं, जरा तो सोच कर देखो ॥
तुम्हारे ही जो थे बान्धव, जिन्हें टुकड़ोंसे पाला था,
वे ही दिखला रहे ऐंठे, जरा तो सोचकर देखो ॥
ये माना इस तरह गर्दिश, कुसंपीका नमूना है,
मगर गान्धीकी गीतापर, जरा तो सोचकर देखो ॥
विदेशी लोग आकर हां, सताते हैं भुलाते हैं,
नही जेबा ये हक तुम पर, जरा तो सोचकर देखो ॥

— देपणाव, "देव"

बंदीकी अभिलाषा

मरनेकी कुछ परवाह नहीं, धन दौलतकी भी चाह नहीं।
निर्धन हूं जगसे डाह नहीं, 'निर्बल'—हूं मनमें आह नहीं ॥
अभिलाषा, हां ! अभिलाषा है।
प्यारा भारत स्वाधीन रहे ॥
मैं अगर कमल तो वह दिनेश, मैं यदि चकोर तो वह निशेश।
मेरा प्यारा जीवन धनेश, कैसे देखूंगा सहे क्लेश —
मैं जीऊं वह आधीन दिखे ?
प्यारा भारत स्वाधीन दिखे ॥

उसपर तन, मन, धन, वार चुका, उसका उसको सब हार चुका।
उसपर सर उसका भार चुका, जाऊंगा नर-तन कार्य चुका—
पर, देखूंगा न मलीन दिखे।
प्यारा भारत स्वाधीन दिखे॥
क्या! रोग-मुझे-हां रोग सही, मरना ही मेरा भोग सही।
पर होगा उनसे योग नहीं, भारतका जिनसे योग नहीं॥
अभिलाषा है यह रोग तनै।
मेरा भारत स्वाधीन बनै॥

—निर्दल।

स्वदेशी।

[१]

जनमे स्वदेशमें स्वदेश ही में पाले गये;
ऋण मातृभूमिका 'स्वरूप' यों चुकायेंगे।
धाती जाति प्रेमकी संघाती जाति जीवनकी,
जातिके सजाती बन्धु छातीसे लगायेंगे।
तनको न मोह धनको है, तिनको है यह
आये आपदाएं सर आंखों पै बिठायेंगे।
'ध्यानमें स्वदेशी ज्ञान पानमें स्वदेशी, मन
मगनमें स्वदेशी है स्वदेशी गान गायेंगे।

[२]

दासताकी रस्सी है गलेमें जो हमारे पड़ी,

हाथ रखते भी गांठ खोलने न पायेंगे।

बसमें पराये है हराये है इसीके हम

सत्यकी छुरीसे छन्द छोलने न पायेंगे।

फैला विष फूटका विषैला हाय भारतमें,

सत्त सुधी प्रेम सुधा घोलने न पायेंगे।

डोलने न पायेंगे लगायेंगे वे ऐसा हुक्म,

मुहमें जबानपर, बोलने न पायेंगे।

(३)

तारो देश जातिको उबारो दुःख सागरसे

मारो मोह मदको विसारो ठाट बाटको।

क्षमाका कृपानका सम्हारो ललकारो रिपु,

शान्ति काट काटो दुतकारो मार काटका।

चारो फल पैहा हारो हिम्मत "स्वरूप" नाहीं:

शिल्प चातुरीसे खोलो कमला कपाटको।

प्यारो तुम्है देश तो उबारो यारो वारो प्राण;

धारो व्रत देशकी विदेशी बायकाटको।

—स्वरूपचंन्द "स्वरूप"।

— —

असहयोगी

(१)

यह 'आत्मशक्ति' 'सहयोगत्याग' 'अमरत्व' मिला तू मानव है !
इस समर-क्षेत्रमें विजयी हो तू देव बना, वह दानव है !!
रत्नाकरका मन मुका तू ! गङ्गाधर पाणि त्रिशूल स्वयं !
तू अग्नि विटपका डाल-पात, कांटोंपर बिखरा फूल स्वयं !!
तू योगी है, हां योगी है—तू असहयोगका भोगी है !
शक्ति पाणि कर जोड़ खड़ी, तीखे हृदयोंका रोगी है !!

(२)

तू रूठ उठा, तेरे बालक लो रूठ गये, हां मचल पड़े !
जग भरकी विपदाओंमें भी, केशरी वीरसे अचल खड़े !!
यह क्रान्ति मची जल मण्डल दलमें कीर्ति ध्वजा फहराने दे !
ये सत्य—बाण वाले बाड़ वे - उन शीशोंपर घहराने दे !!
'वे उज्ज्वल' - हां तू काला है, तू शेषनाग फुंकार लगा !
अन्यायी कुत्सित पशुतापर तू एक बार हुंकार लगा !!

(३)

कब अन्यायीका साथी है ? कब पद - पूजा तू करता है !
इन दीन हीनका घोट गला, कब स्वार्थ—सदन तू भरता है ?
जिवन्तु बना, तलवारोंसे, कब शोणित पी तू हंसता है ?
ये लाल सब्ज़, पीली परियों,-के फन्दोंमें कब फंसता है ?

शत कोटि-शस्त्र तू अस्त्र मन्त्र, तू मृत्युंजय वृन्दारक है !
तू हनूमान-उन ज्वालोंका काल-काल नव पालक है !!

[४]

कब टलता है, वे टाल रहे-हथियारों अत्याचारोंसे !
हथकड़ियों और बेड़ियोंसे-हुङ्कारोंसे घन-मारोंसे !!
गोलोंसे और गोलियोंसे 'एयर शिप' नव बौछारोंसे !
विकराल खड्ग तीखे खञ्जर, कोड़ोंसे कुटिल कुठारोंसे !!
निर्भय है, हां निर्भय है तू -परवाह नहीं, परवाह नहीं !
लख दमन नीति क्यों कांपेगा बर्छे तारोंसे आह नहीं !!

[५]

तेरे कर-कञ्जों झूल रही, जय माल भाल ऊंचा करती !
यशलता पताका फूल रही, 'गान्धी सन्देश' सुरभि भरती !!
बढ़ रहा ऐंठमें भरा हुआ, हथियार नहीं शृंगार नहीं !
औजार नहीं, भण्डार नहीं, तलवार नहीं, पर प्यार नहीं !!
तू है विजयी तू कर्मवीर अपना झण्डा फहराने दे !
माताके कारण शीश आज, बलि वेदीपर चढ़ जाने दे !!

—गुलाब ।

(१)

जेल तुम्हारा दृश्य हृदयमे भरता है आनन्द अपार ।
आत्म-शक्ति भूले मुर्दोंमे कर देता नव बल सञ्चार ॥

स्वेच्छाचारी खल शासक दल नरक कहे या कारागार।
पर सहिष्णुता-मूर्ति तुम्हीं हो पराधीन भारत-आधार॥

(२)

तुमसे ही मेरे माधवने वीर जन्म वह पाया था।
दीनोंकी रक्षा-हित जिसने निज सर्वस्व चढ़ाया था॥
लोकमान्य, हो गये तुम्हींको पाकर भारत-तिलक, महान।
कर्मवीर गांधी बन बैठे हुए जहां तुमपर कुर्बान॥

(३)

देश भक्तिकी सुदृढ़ कसौटी प्यारे जेल! नित्य आराध्य।
शस्त्रहीन भारतको तुमसे होगी स्वतन्त्रता आसाध्य॥
देना वह दृढ़-भक्ति कि निश्चय ही हों हम आजाद सभी।
जीवें हों स्वाधीन बनें या मातापर बर्बाद सभी॥
—"निर्बल"।

साम्यवाद

[१]

जग-अभिनयके महा, भयङ्कर दृश्य आज हैं।
प्रकृति-नटीके नाच, महा बीभत्स साज हैं॥
न्याय काटता जेल, हाय! अन्याय राज है!
दुःख ग्रस्त हैं सभी, शोकमय नर समाज है॥

शान्ति, स्वार्थकी गुहामें, सम्प्रति-अन्तर्धान है।

न काल, सुपात्र, न सौम्य है, जग श्मशान समान है॥

(२)

आर्थिक-जगसे ऐक्य धर्मका नाता छूटा।

ज्ञान-भावना-सन्निधि को स्पर्धाने लूटा॥

सत्य, असृतसे डका, साम्यका शृङ्खल टूटा।

जीवन बन्धन हुआ भाग्य, जगतीका फूटा॥

हाय! विषमता -निर्झरी नृत्य कर रही आज है।

तृष्णा-अग्नि धधक रही, अति संतप्त समाज है॥

[३]

धनी सुखी हैं -सदा, सेजपर अलसाते हैं।

रथपर चलते, कभी न मगपर पग लाते हैं॥

सध्या हुई कि सत्वर, मोटर मगवाते हैं।

बड़े ठाठसे दूर, हवा खाने जाते हैं॥

भोजनको बनते इधर, मूल्यवान पकवान हैं!

उधर आज जो मिल गया, कल दाता भगवान है!!

[४]

ग्रीष्म हुआ बस, खसकी टट्टी लगवाते हैं।

परिमल—पूरित—शीत, वातका सुख पाते है॥

बैठे रहते व्यर्थ, कामसे घबराते है।

हारमोनियम लिये गान, सुखके गाते है॥

अथवा ग्रामोफोनकी, सुनते सुमधुर तान हैं।
जो कुछ हैं, इस जगतमें, भाग्यवान धनवान हैं॥

(५)

इधर धनिक है मस्त, मर रहे दीन उधर हैं।
क्योंकि 'रमा' भी रुष्ट—इन्हीं बेचारोंपर है॥
गर्मी हो या शीत, काम करते दिनभर है।
इतनेपर भी भरने, पाते नहीं उदर है॥
श्रम-जीवी अन्यायसे, प्रतिदिन कुचले जा रहे।
नर्क यातना भोगते, विषम वेदना पा रहे॥

(६)

इनसे सड़क पिटाते, खानें खुदवाते है।
जीवनका सब भार, इन्हींसे उठवाते हैं॥
पुतली घरमें काम, यही करते बेचारे।
ऊपरसे कोड़ोंसे भी, जाते हैं मारे॥
इनके आरत-नादसे जगभर विह्वल आज है।
फिर भी क्यों इनके लिये, सोया सभ्य समाज है॥

(७)

दिनकरकी जब तप्त रश्मि. है मही जलाती।
दावानल सम लपट. लूहकी जब झुलसाती॥
करते तब भी काम. धन्य है इनकी छाती।
फिर भी इनके लिये, न करुणा अश्रु बहाती॥

शान्ति, स्वार्थकी गुहामें, सम्प्रति-अन्तर्धान है।
न काल, नृपाल, न सौख्य है, जग श्मशान समान ॥

(२)

आर्थिक-जगसे ऐक्य धर्मका नाता टूटा।
ज्ञान-भावना-सन्निधि को स्पर्धाने लूटा॥
सत्य, अमृतसे उगा, साम्यका शृङ्खल टूटा।
जीवन बन्धन हुआ भाग्य, जगतीका फूटा॥
हाय! विडम्बना निखरी, नृत्य कर रही आज है।
तृष्णा-अग्नि धधक रही, अति सन्तप्त समाज है॥

[३]

धनी सुखी हैं-सदा, सेजपर अलसाते हैं।
रथपर चलते, कभी न मगपर पग लाते हैं॥
संध्या हुई कि सत्वर, मोटर मगवाते हैं।
बड़े ठाठसे दूर, हवा खाने जाते हैं॥
भोजनको चलते इधर, मूल्यवान पकवान हैं!
उधर आज जो मिल गया, कल दाता भगवान हैं!

[४]

ग्रीष्म हुआ बस, खसकी टट्टी लगवाते हैं।
परिमल—पूरित—शीत, वातका सुख पाते हैं॥
बैठे रहते व्यर्थ, कामसे घबराते है।
हारमोनियम लिये गान, सुखके गाते है॥

अथवा ग्रामोफोनकी, सुनते सुमधुर तान हैं।
जो कुछ है, इस जगतमें, भाग्यवान धनवान हैं॥

(५)

इधर धनिक है मस्त, मर रहे दीन उधर हैं।
क्योंकि 'रमा' भी रुष्ट - इन्हीं बेचारोंपर है॥
गर्मी हो या शीत, काम करते दिनभर है।
इतनेपर भी भरने, पाते नहीं उदर है॥
श्रम-जीवी अन्यायसे, प्रतिदिन कुचले जा रहे।
नर्क यातना भोगते, विषम वेदना पा रहे॥

(६)

इनसे सड़क पिटाते, खानें खुदवाते है।
जीवनका सब भार, इन्हींसे उठवाते है॥
पुतली घरमें काम, यही करते बेचारे।
ऊपरसे कोड़ोंसे भी, जाते है मारे॥
इनके आरत-नादसे जगभर विह्वल आज है।
फिर भी क्यों इनके लिये, सोया सभ्य समाज है॥

(७)

दिनकरकी जब तप्त रश्मि, है मही जलाती।
दावानल सम लपट, लूहकी जब झुलसाती॥
करते तब भी काम, धन्य है इनकी छाती।
फिर भी इनके लिये, न करुणा अश्रु बहाती॥

अनुकम्पे ! यह देखकर, भी क्यों करुण न मौन है।
इन्हें देखकर रो न दे, ऐसा पत्थर कौन है॥

[८]

उनका है बाजार, जुल्म उन जिनके तार है।
महंगी, सस्ती, एकमात्र, उनके ऊपर है॥
इधर तड़प रहे अगणित, ये पुतली घरवाले।
निकल रहे जोरों धनिकोंके उधर दिवाले॥
पूंजीपतिके हाथमें, व्यापारिक- संसार है।
जैसे चाहें मोड़ दें, इनको सब अधिकार है॥

[९]

जोते खेत किसान, अन्न हो जमींदारका।
काम करें श्रमशील, माल हो साहुकारका॥
यही ढङ्ग है आज, सभ्यताके बजारका।
खूब हो रहा न्याय धर्मका - सदाचारका॥
साम्यवादके मूलपर, होता वज्र प्रहार है।
इसीलिये तो सब तरफ, हाहाकार प्रचार है॥

(१०)

ठीक इसी विधि, राज्य, बढ़े है पाप भित्तिपर।
पुत्र प्रजाके शक्ति--रक्तको चूस चूसकर॥
रक्तपातपर राज्यवादकी नींव पड़ी है।
इसके कारण बहुत, लड़ाई गयी लड़ी है॥

एकतन्त्रने प्रजाका, किया सभी विधि नाश है।
जिसका साक्षी आज भी, दुनियाका इतिहास है॥
—शिवदासगुप्त,'कुसुम'

डपोर शंख।

(१)

श्वेत वर्ण है अङ्ग हमारा,
अलग सभीसे ढङ्ग हमारा।
कहते हैं करते हम नहीं,
जग अपयशका है गम नहीं॥

(२)

ऊपर उज्वल भीतर काला,
हमे मिला है काम निराला।
दो मांगे तो देते चार,
वचन मानना है सत्कार॥

(३)

जलधि नीरसे हम हैं आये,
आकर अपना रङ्ग जमाये।
हैं डपोर शंखोंके भूप,
हृदय कुटिल है सुन्दर रूप॥

(४)

वचन हमारा जिनको भाया,

उसने निश्चय धोखा खाया।

पाप हमें है सबका कहना,

सजग सभीसे सब दिन रहना॥

(५)

भेद सभीके लेते हम,

अपने भेद न देते हम ॥

मिलकर भी अनमिल रहते हैं,

पग पगपर परिसव सहते हैं॥

(६)

जहां जहांपर हम जाते हैं,

सभी वहांपर दुख पाते हैं।

पूजा लेकर देते नाम।

सभी हमारे अद्भुत काम॥

[७]

आशेके लासेसे हम,

किसको नही फंसाते हम॥

निश दिन करते यही तमाशा,

किसे न हमसे हुई निराशा॥

(८)

थे अछूत हो गये पवित्र,

दिव्य चित्र है चरित विचित्र।

ऊंचा आसन हमे मिला है,
ज्यो जवास मणि भूमि खिला है ॥

[९]

चिन्तामणि है छोटा भाई,
किन्तु चतुरता उसे न आई ।
जो मांगे सो दे देता है,
हमसे मन्त्र नही लेता है ॥

[१०]

बातोके हम देते दान,
देते मूढ़ हमे सम्मान ।
किसने कब क्या हमसे पाया,
है दुर्ज्ञेय हमारी माया ॥

(११)

भड़कीला है ठाट हमारा,
मतलब लेना पाठ हमारा ।
हमे दयाका लेश नहीं है,
अन्य दुःखसे क्लेश नहीं है ॥

(१२)

धोखेका है धर्म हमारा,
कठिन क्रूर है कर्म हमारा ।
जिसका हमने पकड़ा हाथ,
लगी विपत्ति उसीके साथ ॥

—रामचरित उपाध्याय ।

हमारा भारत

(गजल)

न आस्मांपर न है जमीपर, सुगम सुहावन सुदेश पावन।

सुभग पुरन्दरपुरीसे बढ़कर, "हमारा भारत हमारा भारत" ॥

न कोई है नृन्दम जहांमें, करे जो इसका मुकाबिला भी।

सभी धरामें मुकुट मणी है, "हमारा भारत हमारा भारत" ॥

स्वधर्म्म-सिद्धान्तमें प्रबल है, कलाकुशलता सबल अटल है।

विवेक विज्ञानमें अचल है, "हमारा भारत हमारा भारत" ॥

हुए हजारों तैमूर, नादिर, महमूद गजनीके भारी हमले।

सभी दिया, पर न मान छोड़ा, "हमारा भारत हमारा भारत" ॥

कणाद, गौतम वो बुद्ध, शङ्कर, यतीन्द्र श्रीकृष्ण, व्यास राघव।

वशिष्ठ आदिकका वासस्थल है, "हमारा भारत हमारा भारत" ॥

बलिष्ठ भीष्म सुशील, अर्जुन, प्रताप, सांगा, सुकर्ण विक्रम।

सती सुकन्याकी जन्मभू है, "हमारा भारत हमारा भारत" ॥

उजड़ गये हैं सुदेश कितने, रहे नशाये गये हैं कितने।

पै आजलों फिर उठा रहा है, "हमारा भारत हमारा भारत" ॥

सुना दो सङ्गीत एकतानका, भुजा उठाकर सभी जगतमें।

"हमारा भारत हमारा भारत" "हमारा भारत" "हमारा भारत" ॥

—पाठक रामानन्दन शर्म्मा के० वी० तीर्थ।

— —

पूर्व-पुरुष

हे आर्य्य ! अपने पूर्वजोंका चरित कुछ सुन लीजिये ।
अनुकरण अपने पूर्व पुरुषोंकी सुकृतिका कीजिये ॥
वे धर्म पर करते निछावर तृण-समान शरीर थे ।
सुख, शान्ति-शिखरासीन थे, वे वीर थे, रणधीर थे ॥१॥
वे आर्य थे, जो जान देते थे परायेके लिये ।
थे कष्ट देते कुछ नहीं वे अन्यको अपने लिये ॥
वे विलग रहते थे सदा विद्वेष-विषकी शान्तिसे ।
जीवन बिताते थे सदा निर्विघ्नता-युत शान्तिसे ॥ २॥
उपकार करनेके लिये सब जन्म लेते थे अहो ।
थे बैठ सकते किस तरह निश्चेष्ट होकर वे कहो ॥
है चरित उनके शान्ति कारक औ निवारक शोकके ।
कुछ स्वार्थता उनमें न थी वे थे हितैषी लोकके ॥ ३ ॥
है कीर्ति उनकी दूर देशोंमें बखानी जा रही ।
है जन्म-तिथि भी आज तक उनकी मनायी जा रही ॥
वे थे नहीं कायर कभी दुख-दाहसे डरते न थे ।
सत्कार्य करनेमें कभी भी विघ्नसे डरते न थे ॥ ४ ॥
स्वीकारते निज-सुत मरण पर वचन थे न विसारते ।
वे शब्दवेधी वाणसे थे रिपु दलोंको मारते ॥
ऐसे सुकृत संसारमें इतने कहां किसने किया ।
बलि, भीष्म, अर्जुन, कर्णसे किस भूमिने पैदा किया ॥

नीचे गिरेको प्रेमसे ऊपर चढ़ाते थे वही।
पीछे रहेको धैर्य दे आगे बढ़ाते थे वही ॥
वे दूर करते थे दुखोंका कष्ट अपना जानके।
शासन यहां करते रहे वे प्रजाको सुत मानके ॥ ६ ॥
अनभिज्ञ थे सब देश कृषिसे, मांस खा जीते रहे।
सब उस समय भी आर्य सुखसे सोमरस पीते रहे।
विज्ञानकी कुछ विज्ञतासे आज भी सुख पा रहे।
उनके शुभाविष्कारका गुण आजतक हैं गा रहे ॥ ७ ॥
वैदिक-नियम-अवहेलना वे तो कभी करते न थे।
पर कर्म करते थे सदा फलकामना करते न थे ॥
इस भूमितलमें वे सुकृतके बीज बोते थे सभी।
इस भरत-खण्डअखण्डकी शोभा बढ़ाते थे सभी ॥८॥
अज्ञान तो सब देश थे, बल-बुद्धिमें भी हीन थे।
पर उस समय भी आर्य ज्ञानानन्द-नदके मीन थे ॥
वे पुरुष ही केवल न थे जिनका जगतको गर्व था।
उन पूर्वजोंकी गृहिणियां थीं देवियां ही सर्वथा ॥ ९ ॥
किस देशमे गम्भीरतासे धर्मके पालक हुए।
किस देशमें थे वीरवर अभिमन्युसे बालक हुए ॥
स्वाधीनताका गर्व था पर दम्भसे वे दूर थे।
जातीय धर्म निबाहनेमे भी बड़े ही शूर थे ॥ १० ॥
वे मन वचनसे, कर्मसे, भगवद्भजनमे लीन थे।
वे मोह-माया-मुक्त थे, स्वच्छन्द थे, स्वाधीन थे ॥

आदर्श-जन थे इस जगतमें कब कहां कितने हुए।
इस भव्य-भारतवर्षमें थे आर्यगण जितने हुए॥ ११ ॥
थे सत्य-भाव प्रकाश करते दीन दुखियोंपर सदा।
पर कष्ट देख दयार्द्र चित होते सभी थे सर्वदा॥
जिनके सदा सद्भावसे हृत्-पद्म रहते थे खिले।
जिनके प्रताप सुगन्धिसे इन्द्रिय-मधुपगण थे हिले।१२।
वर्णन किया था जिस विषयका था उसे पूरा किया।
मानो स्वयं भगवानने साहित्य उनका रच दिया॥
वे देशकाल विचार करके कार्य करते थे यहीं।
अपने सुदृढ़ सिद्धान्तसे विचलित न होते थे कहीं ॥१३॥
—बच्चे मिश्र।

जगाने दो।

[१]

कमर कसकर तुले हैं वे सताते हैं सताने दो।
हमारा नामतक जगसे मिटाते हैं मिटाने दो॥
बुझायी आग उनके घर लगी जब दौड़कर हमने।
हमारी ज्योति जीवन वे बुझाते हैं बुझाने दो॥

[२]

गलेको रेतते हैं आहतक करने नहीं देते।
मुहर मुंहपर हमारे वे लगाते हैं लगाने दो॥
न होते हम, सभी ये शेखियां तो किरकिरी जातीं।
हमें वे आज मिट्टीसे मिलाते हैं मिलाने दो॥

[३]

लगेगा मोरचा परतन्त्रताकी बेड़ियोमें अब।
रुधिरमें हर घड़ी उनका निल्हाते हैं निल्हाने दो॥
पड़ी सिरपर कहा, सब कुछ सुनेंगे तुम हमारे हो।
मगर अब देख लो चरका बताते हैं बताने दो॥

[४]

बचाते यदि नहीं हम तो कभी नकशा बिगड़ जाता।
हमारी नेकियां अब वे भुलाते है भुलाने दो॥
उधर तो एड़ियोसे दिल हमारा रगड़ते जाते।
इधर क्या कर रहे हंसकर सुनाते हैं सुनाने दो॥

[५]

घुटे हम मर मिटे अब हड्डियां हैं उठ नहीं सकते।
नयी जञ्जीर फिर भी वे गढ़ाते हैं गढ़ाने दो॥
उठायी जोखिमें फल शान्तिके उनको खिलाये है।
हमें तलवारके फल वे खिलाते हैं खिलाने दो॥

[६]

यहाँ है न्याय जगका देख आखो सब चुके अबतो ।
हमें है मौत प्यारी जी गंवाते हैं गंवाने दो ॥
हमारे हाथ यो हीं अन्ततक रीते रहेंगे वे—
जगत्को क्रूरता अपनी दिखाते है दिखाने दो ॥

[७]

न मानेंगे हिमालय खोद वे सागर बना देंगे ।
मजा सरके उठानेका चखाते है चखाने दो ॥
कहां भगकर बचोगे गगन तारो वायुयानोसे ।
अभी ऊपर पहुंच वे बम गिराते है गिराने दो ॥

[८]

गये सिरजे गगनमें चमकनेको मानते है हम ।
खुशी उनको अन्धेरा नभ बनाते हैं बनाने दो ॥
प्रकृतिको रौंद्कर वे ईशको देते चुनौती हैं ।
बली है आज अपना बल दिखाते है दिखाने दो ॥

] ६]

नहीं तुम समझते अपनी भलाई हम समझते हैं ।
यहीं दिनरात वे पट्टी पढ़ाते है पढ़ाने दो ॥
उमडना चाहता ज्वालामुखी जब फाड़कर धरती ।
दबेगा कब तलक पर: वे दबाते हैं दबाने दो ॥

[१०]

सिंचेगी भूमि लोहूसे तभी तो लाल जन्मेंगे।
हमारे रक्तकी नदियां बहाते हैं बहाने दो॥
बनेंगी गन मशीनें भड़ककर चिनगारियां ठहरो।
हमारे आत्मकी ज्वाला जगाते हैं जगाने दो॥

—"क्षुब्ध"

कर्म-क्षेत्र

कूप, बावली, झील और कितने ही सर हैं;
सरिताएं सैकड़ों बहुत झरते निर्झर हैं।
जिनका पय कर पान सभीके तालू तर हैं;
चातक है चिर तृषित, नहीं देखते उधर हैं॥
सुधा-वृष्टि ही क्यों न हो उनको क्या परवाह है।
है उनका सङ्कल्प दृढ़ स्वाति बुन्दकी चाह है॥ १॥
हंसोंने कब दीन मीनपर चोंच चलाई;
मरे क्षुधासे पर न घास सिंहोंने खाई।
रवि कब शीतल हुआ, ताप शशिमें कब आई;
तेजस्वी सङ्कल्प नहीं तजते हैं भाई॥
कभी छोड़ते हैं नहीं कर्म्मवीर निज आनको।
अधिक जानसे जानते स्वाभिमान--सम्मानको॥ २॥
उनकी इच्छा शक्ति जिधरको मुड़ जाती है।
आके दैवी शक्ति उधर ही जुड़ जाती है।

चौपट होते क्लेश, भीति भी शुड़ जाती है;
धज्जी धज्जी विघ्न-वृन्दकी उड़ जाती है॥
झंझापवन झकोरसे गिरिवर-गण झुकते नही।
तृण-समूहकी रोकके रोके नद रुकते नहीं॥ ३॥
कर लें जो सङ्कल्प पूर्ण ही करके छोड़ें;
निज करणीसे कीर्ति भुवनमें भरके छोड़ें।
लहें सफलता या कि कामको मरके छोड़ें,
वीर नहीं जो टेक धरें फिर धरके छोड़ें॥
अपने दृढ़ विश्वाससे अपनी अविचल भक्तिसे।
कर सकते वे क्या नही अपनी इच्छा-शक्तिसे॥ ४॥
होता भयसे नही कलेजा उनका धक धक;
सम्मुख उच्चादर्श उसीके हैं आराधक।
ठान लिया जो मन्त्र उसीके रहते साधक;
डिगा न सकते उन्हें विघ्न-गण बनकर बाधक।
कुछ दिनमे प्रतिकूल भी हो जाते अनुकूल हैं।
कांटे उनके मार्गके बिछते बनकर फूल हैं॥ ५॥
हल विवेकका लिये, बैल निज बलके जोड़े।
देह गेहका मोह नही मानो मुंह मोड़े।
साधन हैं किस कदर बहुत है-या हैं थोड़े।
इसकी चिन्ता नहीं, भीतियां भवकी छोड़े॥
साहस रक्खे हृदयमे विमल ज्योति युग नेत्रमे।
फल आशा बलवती रख आते कर्म्म-क्षेत्रमे॥ ६॥

सम करते हैं विषम भूमिको अपने करसे,
पुण्य बीज बो लाभ उठाते हैं अवसरसे।
दया श्याम घन करें सलिल बरसे फिर बरसे,
अगर न बरसे स्वयं सींचते खूने-जिगरसे॥
पनप नहीं सकते जहां तेरी ओर बबूल हैं।
कर्म्मवीर लेते वहीं अमृत भरे फल फूल हैं॥ ७॥

भारत-भू उर्वरा बनी ऊसर बंजर है
वह हरियाली कहां, धूल उड़ती घर घर है।
आओ वीरो बढ़ो कामका यह अवसर है:
कहते हैं सब, कुछ वसन्तकी तुम्हें खबर है॥
फूल फल रहे आज कल सकल देश संसारके।
यह बेचारा रह गया मानो पाला मारके॥ ८॥

भोले ऐसे हुए शक्ति अपनी भूले हैं:
भय झोंकोंसे हृदय फिरे झूले झूले हैं।
रङ्ग रूप है ठीक, नहीं लंगड़े लूले हैं·
पर है नही सुवास विरस किंशुक फूले हैं।
इनके हृदयोंसे अगर सुदृढ़ आत्म-विश्वास हो।
आयें कर्म्म-क्षेत्रमें उन्नति और विकास हो॥ ८॥

आर्य्य अवनिके पुत्र, दृढ़ व्रत होकर आओ:
जीवनका उद्देश कुछ न कुछ तो ठहराओ।
कर्म्म करो अब कर्म्म, कर्म्म ही के गुण गाओ,
ठोको नहीं कपाल, भाग्य निज स्वयं बनाओ।
जीवन है तो आइये नहीं शक्तियां घुन गयीं।
फिर पछताना क्या कि जब खेती चिड़ियां चुन गयीं॥ १०॥

—"त्रशूल"

भारतका अभिनन्दन ।
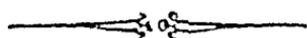
वीर भारत तुम्हारी, है निश्चय विजय ॥ टेक ॥

सत्य सौजन्य समर शूर कहानेवाले ।
कर्म करवाल कठिनतामें उठानेवाले ॥
धर्मके नित्य नगारेको बजानेवाले ।
और साफल्य सुभग साज सजानेवाले ॥
थे, रहोगे, रहो, सर्वदा ही अभय, ॥ वीर० ॥

विश्वके बीच विजय केतु उड़ानेवाले ।
साधु सन्तोष सहित मेल मिलानेवाले ॥
पाप पाखण्ड जनित ताप घटानेवाले ।
काल कौटिल्य कलह कूट हटानेवाले ॥
किन्तु तो भी सभी, भांतिसे हो सदय ॥ वीर० ॥

मुक्तिके मौलि मुकुट रत्नवर कहाते हो ।
कष्ट सहकर भी नहीं कष्ट तुम सहाते हो ॥
मूल मर्याद निभाये अभी निभाते हो ।
अन्यके द्वार कभी याचने न जाते हो ॥
प्रेमके पुञ्ज हो, शान्तिके हो निलय ॥ वीर० ॥

सर्व स्वाधीन सदाचार सद्विचार सुमत ।
भक्ति भगवान दया दान धैर्य ध्यान निरत ॥
आदि आतिथ्य विविध कार्य श्लाघनीय सतत ।
क्रोध मद लोभ तथा मोह दुराचार विरत ॥

योगके योग्य हो, नाशते हो अनय ॥ वीर० ॥

ज्ञान विज्ञान विमल भारती भवन भर्त्ता।

नीति निष्णात निरन्तर निरीह सत्कर्त्ता ॥

न्यायनिधि प्रेम प्रजा पुण्य प्रथाके नेता ॥

आर्य आध्यात्म अलख तत्वकलाके हेता ॥

कल्पना कोष हो, है ऋणी भूतलय ॥ वीर० ॥

राज राजेश सुखद वेश आत्म सम्मानी।

उच्च उद्देश सफल देश दशाके ज्ञानी ॥

हानि अत्यन्त हुई पर न जरासी ग्लानी।

शत्रु भी देख तुम्हें हो गये पानी पानी ॥

शुद्ध हो बुद्ध हो, है तुम्हारी विनय ॥ वीर० ॥

वेद वेदाङ्ग सकल शास्त्रके प्रचारक हो।

सिद्ध सर्वज्ञ सभीके तुम्ही सुधारक हो।

दुःख अन्याय क्षोभ दर्पके निवारक हो।

रीति सद्भाव सखा शुद्धि शोध कारक हो।

विश्वके विष्णु हो, जानते सब विषय ॥ वीर० ॥

देव देवेश मनुज वेष धार आते हैं।

शारदा शेष सुयश ज्ञेय गान गाते हैं ॥

ऋषीश औ मुनीश मोद महा पाते हैं।

पाद पद्मोंको शीश मुग्ध हो नवाते हैं ॥

धन्य हो धन्य हो, जय तुम्हारी सुजय ॥ वीर० ॥

— जगन्नारायणदेव शर्मा (कविपुष्कर)

भारत वसुन्धरा।

महती विमुग्धतामय, मधुरा मनोहरा है।

वसुधा विभूति, पूता, भारत वसुन्धरा है॥ १॥

बहु वंशमे यहां ही बुध वृन्द है विलसते।

वर वीर धीरका भी वंधता यहीं परा है॥ २॥

पाये गये कहांपर ऐसे पुनीत मानव?

पाहन अपूत जिनका पग-पूत छू तरा है॥ ३॥

तन मन सहित सकल धन कर कन्तपर निछावर।

मुखड़ा कुलांगनाका होता यही हरा है॥ ४॥

पतिदेवता कहांपर ऐसी किसे मिली है?

यम आप देख जिनकी तेजस्विता डरा है॥ ५॥

विद्या पराऽपराकी गुरुता गरीयसीका।

सिरपर यही मनुजके सेहरा गया धरा है॥ ६॥

अब भी सुरुचि सरलता शुचिता सुशीलताका।

फहरा रहा यहींपर कमनीय फरहरा है॥ ७॥

लोकोपकार अथवा उद्धार धर्मके हित —

मरना समुझ अमरता मानव यही मरा है॥ ८॥

विधि साधकर यहींपर सब कामना समर्पित।

संसार सार विभुको वर भक्तिने वरा है॥ ९॥

आलोक मग्न बनाके मानवसमूह-मानस।

नरलोक-तम यहींके आलोकने हरा है॥ १०॥

—अयोध्या सिंह उपाध्याय।

राष्ट्रीय शूर ।

(१)

जीवन दीप हथेलीपर धर झंझावात सामने देख,
आगेको बढ़ते जाते है कैसे पूर्ण करें उल्लेख।
रहना शान्त शान है इनकी शुचि सन्तोष तीव्र असिधार,
कवच क्षमाका धारण करके रोकेंगे प्रचण्ड रिपुवार ॥

(२)

शौर्य्य धैर्य्य रथ-युगल चक्र हैं सत्य शील ध्वज प्रबल विवेक,
अश्व प्रभृति सब सज्जा रखते साम्य दया उपकार अनेक।
शक्ति अचूक बुद्धिकी लेकर विरतिमयी सर्वोत्तम ढाल,
संयमादि अष्टाङ्ग योगके प्रचुर शस्त्र हैं बाण कराल ॥

[३]

अक्षयतूण स्वच्छ निर्मल मन सद्गुण सैनिक विविध प्रकार,
चतुरङ्गिनी अभेद्य व्यूह रच लेंगे विजय उच्च व्रत धार।
बिन्दुमात्र भी रक्तपात ये, करना समझ रहे है पाप,
शान्तरूपसे युद्ध ठनेगा, अश्रुतपूर्व देख लें आप ॥

[४]

बांधे हुए कृपाण वही निज प्राण दानपर हैं तय्यार,
भौमिक दुर्ग ध्वंस कर देंगे, मार मारकर अपनी मार।
विजय दौड़ती पीछे पीछे इन वीरोंके, सच है बात,
प्रतिद्वन्द्वी करते हैं यद्यपि कोटि कोटि उत्पात ॥

(५)

अमृत बरसाती अरिपर भी इनकी सुधा सनी असिधार,
पर अधर्मरत पापी अपने पातक वश जाते यम द्वार।
सच्चा शौर्य्य वीर्य्य धमनीमें धावमान है सतत अजस्र,
रणक्षेत्र प्रिय मातृ अङ्कसे, समझे है ये गुणित सहस्र॥

(६)

सन्मुख मरना मातृभूमि हित, बन्धनसे होना निर्मुक्त,
हैं: रविमण्डल भेदी होकर करना ईश्वरत्व उपभुक्त।
पावन निज उद्देश्य सिद्धि हित निर्भय तथा हुए निर्द्वन्द,
सत्य धर्मके परम भक्त हैं नहीं जानते कुछ छल छन्द॥

(७)

मर्य्यादा ये ही रक्खेंगे- भारतीय दृढ़ है विश्वास,
अत्याचारी उच्छृङ्खलता सत्वर कर देवेंगे नाश।
कृलङ्कण कलुषको धारा ये अवश्य देवेंगे पाट,
ऐतर्हिक रावण भी रो रो जायेंगे रावणके घाट॥

[८]

अहिंसात्मक अस्त्र शस्त्रसे भारत तरणी होगी पार,
अहोभाग्य! है अनुपम ज्ञानी कर्णधारपर आया भार।
भौतिक बलसे अकड़ २ जो विश्व विजयका करते गर्व,
रक्तपिपासु जिघांसु सभी वे होंगे भग्न मनोरथ खर्व॥

[९]

दानव दैत्य यक्ष राक्षसगण इस अवनीपर बारम्बार,
हुए वुभुक्षित नर मांसाशी हत्या करते अमित प्रकार।
हिरण्याक्ष, घटकर्ण, हिडिम्बक, प्रमुख अजेय महा बलवान,
हुआ दुष्टगण कोटि २ का यथा समय भुविसे अवसान॥

(१०)

हा हा !! करती प्रजा नित्य थी, शासन करता था नृप कंस,
पास किया कानून बनाकर "हो शिशुवृन्द शीघ्र विध्वंस"।
भौम, नरक, शिशुपाल आदि खल उत्थित थे भूपति अवतंस,
कहां गये वे चिन्ह न मिलता, है निश्शेष भूमिसे शंस॥

(११)

आशा है; हां दृढ़ आशा है: सच्चे नेतासे कल्याण—
होवेगा; निष्कपट भावसे ये हैं तुले करेंगे त्राण।
ऊब उठे थे भारतवासी तनसे निकल रहा था प्राण,
तब राष्ट्रीय शूर मण्डलने दिया देशको जीवन दान॥

(१२)

"पराधीनता शून्यप्रायकर रखना है भारत-सम्मान"
यही लालसा--प्रबल उठी है यही हृदयमें है अरमान।
तोड़ शृङ्खला पारतंत्र्यमय अब स्वदेश होगा स्वाधीन,
[illegible] नहीं रहेगा नहीं वचन बोलेगा दीन॥

(१३)

शूर मण्डली कर्म्मवीरने अच्छे समय दिया है ध्यान,
दव विदग्ध !! पल्लवित हरित हो लहरायेगा फिर उद्यान।
राम, कृष्ण, अर्जुन शारद्वत, भीष्मपितामह तुल्य महान,
पीते थे जिस माताका पय अब भी वह होता है पान॥

[१४]

भारत वही पूर्वका उन्नत उन्नत रक्खेगा निज नाम,
भोग लिया अनुताप वहुत कुछ, सह रिपुओंके अनुचित काम।
छलक उठा प्रत्येक व्यक्तिमें दिव्य स्वदेशी प्रेम ललाम,
वस्तु विदेशजातसे सारी, किया देशने आज प्रणाम॥

[१५]

सत्याग्रही निरत सत्याग्रह विजय शीघ्रतर करके प्राप्त,
ऋषि निर्म्मित सभ्यता शान्तिमय कर देवेंगे घर २ व्याप्त।
सज्जन-रक्तपायिनी अत्याचारीके करसे करवाल--
छीन, म्यानमें बन्द कराके तोड़ेंगे पातकका जाल॥

[१६]

सबकी सच्ची उन्नति होगी सबमें होगा सच्चा प्रेम,
इन राष्ट्रीय शूर वारिदसे बरसेगा उर्वीपर क्षेम।
प्रादुर्भूत साम्यताद्वारा आच्छादित होगा संसार,
न्याय्य यथार्थ स्वत्व लब निज २ भोग करेंगे धर्म्म प्रचार॥

—"बुद्धिसागर पञ्चानन"

उस जेलमें हम भी जायेंगे

जो जीवन—ज्योति प्रकाश करे, उस जेलमे हम भी जायेंगे।
जिस जेलमे सङ्कट व्याधि कटें, उस जेलमें हम भी जायेंगे ॥१॥
जिस जेलमे 'तिलक' समान गये, जिस जेलमें हैं 'घनश्याम' भये।
जिस जेलमे 'गांधी' 'लाल' रहे, उस जेलमे हम भी जायेंगे ॥२॥
जिस जेल 'गोपाल' निवास किया, जिस जेल 'सेकसनी' देह दिया
जिस जेलमें 'सुन्दरलाल' हैं अब, उस जेलमे हम भी जायेंगे ॥३॥
जिस जेलमें 'अर्जुन' 'माखन' है, जिस जेलमें 'दीन' प्रवीण रहें
जिस जेलको हैं असहयोगी गहैं, उस जेलमें हम भी जायेंगे ॥४॥
उन जेलोमे जो रहकर आये, वे विश्वमे निर्मल कहलाये।
अभिलाषा यही 'वर्मन'की हृदय, उस जेलमे हम भी जायेंगे ॥५॥

—लक्ष्मीनारायण वर्मन।

स्वागत

आओ, आओ, यहां केसरी आओ आओ।
इन मदांध गजगणको कृपया जल्द भगाओ ॥
अथवा कर कुछ युक्ति इन्हे तुम हमसे टालो।
या अपना कर ग्रास इन्हें तुम भूख बुझा लो।
हा! सही न जाती क्रूरता जो कुछ करते ये अभी।
सच! संभव है हम-पक्षका मूल नाश होवे कभी॥१॥

ये मदांध अरु कुटिल स्वार्थी यों घुस आये।
मानो मूषक-कृत्य छिद्रमे भुजङ्ग धाये॥
माता जलको छिन्न भिन्न कर ऊधम कीन्हा।
बन्धु भ्रमरको खींच लोभमें वश कर लीन्हा।
लो! जहां न हम-जल-मातृका कहीं ठिकाना है नहीं।
तो तुम्हीं बताओ जलजका कभी ठिकाना हो कहीं॥२
होकरके मदमत्त शीघ्र ही ये घुस आये।
तोड़ पत्र-कर हम सबको घरहीन बनाये॥
कलियां सन्तति तोड़ी जातीं निर्दयपनसे।
पुष्प-पंखुड़ियां-खून बहाया जाता तनसे॥
बस तन, धन, घर सब हारके हुए महा बेज़ार हैं।
अब स्वागत! स्वागत! केसरी तुमपर आशा-भार है।३

—"बाल"

दमन-नीतिका स्वागत

दमन-नीतिके भूत-भयङ्कर!
तू हमको होवेगा शं-कर॥
प्रकटित होगा तुझसे ही सत—
स्वागत! स्वागत!!

चल देंगी हमको हथकड़ियां,
तेरी जंज़ीरोंकी कड़ियां॥
सिरपर गोले होंगे सक्षत!
स्वागत! स्वागत!!

कारागार स्वर्ग सम जाना,
अत्याचार सहेंगे,——ठाना॥
इनसे दूनी होगी ताक़त!
स्वागत! स्वागत!!

"मुहं वन्दी" पर मुसकायेंगे,
कोड़ोंपर बलि बलि जायेंगे॥
कौड़ी देंगे नहीं जमानत।
स्वागत! स्वागत!!

कङ्कड़दार दाल खायेंगे,
सूखे टुकड़े अपनायेंगे॥
हैं आश्रमी, हमें वह न्यामत!
स्वागत! स्वागत!!

—"उग्र"

हिन्दका चमन

देशपर प्राण निछावरका ज़माना आया;
चमनमें हिन्दके दिल्शाह ज़माना आया।

बुलबुलें चहकतीं सय्यादके पिञ्जड़ेसे रिहा;
खिज़ांसे सुरझे गुलिस्तांमें ज़माना आया।
चमनमें अब तो नया रङ्ग आज छाया है;
गुलचीं गांधीसा गुलिस्तानमें जबसे आया।
हमको बरबादए गुलशनका गो है रङ्ग बहुत;
पर हमारे लिये यह खूब ज़माना आया।
प्यारे बरबाद चमन! आज कुछ तसल्ली है;
बुलबुलोंको भी याद अब अपना तराना आया।
—ब्रह्मदत्त दीक्षित 'कर्मवीर'।

चेतावनी

परवशतामें पड़कर तुमने भोगे अगणित क्लेश।
बैठ रहे छटपटा अन्तमें पायी एक न पेश ॥ १ ॥
बड़े भाग्यसे मिला सुअवसर, सानुकूल परमेश।
व्यर्थ न खोओ इसे, उठो अब, करो पूर्ण उद्देश ॥ २ ॥
करो सङ्गठन राष्ट्र शक्तिका, हो सदस्य कांग्रेस।
कोटि जनोंसे कम न जुटाओ मिलकर सभी प्रदेश ॥३॥
अधिक न एक कोटि मुद्रा हैं, करो प्रचार विशेष।
घूम २ घर २ पहुंचाओ शुभ स्वराज्य सन्देश ॥ ४ ॥

निर्धन धनी सभीसे मांगो, रहे न कोई शेष।
देंगे प्रेमीजन प्रसन्न हो, कष्ट न होगा लेश ॥ ५ ॥
चरखेका सम्मान वढ़ाओ चरखारूप धनेश।
वीस लाख क्या तीस कोटिमें कातेंगे न हमेश ॥ ५ ॥
ऊर जी तोड़ परिश्रम निशिदिन शीघ्र छुड़ाओ केश।
'निश्चल' हो स्वाधीन हमारा वने निराला वेष ॥ ७ ॥

—निश्चल।

तैयार हैं।

(१)

तैयार हैं हम जेलमें चक्की चलानेके लिये।
तैयार हैं हम मूजकी रस्सी वनानेके लिये ॥
मंजूर सुर्खी कूटना कोल्हू चलाना है हमें।
तैयार हैं हम अधभुना दाना चवानेके लिये ॥

(२)

कम्बल बिछौना ओढ़नेमें कष्ट ही है क्या हमें।
तैयार हैं हम भूमिको विस्तर वनानेके लिये ॥
जांघिया कुर्ता कड़ेमें शर्म कुछ भी है नहीं ॥
तैयार हैं नंगे बदन जीवन वितानेके लिये ॥

(३)

निज धर्म पालनके लिये डर तोप गोलेका कहां।
तैयार हैं आनन्दपूर्वक मृत्यु पानेके लिये॥
जबतक नहीं स्वाधीन भारत स्वर्गमें भी सुख नहीं
तैयार है हम नर्कका ही कष्ट पानेके लिये॥

—गयादत्त 'आदर्श'

विजयोल्लास

बहुत दिन बाद गांधीने, मधुर बीणा बजायी है।
कि जिसने देश भारतको, नयी आभा दिखायी है॥
पड़ा अज्ञानमें यह देश, निशिदिन भटकता रहता।
मगर इस सन्त-भेरीने, डगर सबको बतायी है॥
नहीं हिन्दू मुसलमा आजतक, मिलनेसे मिल पाये।
मगर अब आज ग[illegible] औ, जमुनने मेल खायी है॥
नया लङ्गम हुआ पैदा, जगत भरके नहानेका।
यही है राष्ट्रका तीरथ, इसीमें मुक्ति आयी है॥
लगाया जिस मनोरम, वाटिकाको बाल गङ्गाधर।
उसीमें कोकिलाओंने, झाड़ी अपनी लगायी है॥
करेंगे स्व[illegible]हित अर्पित, सभी कुछ मालोजर अपना।
न हिचकेंगे कभी रणसे, यही देता सुनायी है॥

है होती राष्ट्रकी ही, वन्दना राष्ट्रीय मन्दिरमें।
"विपिन" स्वाधीनता लेनेकी, वारी आज आयी है॥
—"विपिनविहारी लाल श्रीवास्तव।"

भक्तकी भावना
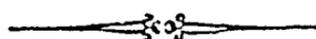
देश-हितपैदा हुए है देशपर मर जायंगे।
मरते मरते देशको जिन्दा मगर कर जायंगे।
हमको पीसेगा फलक चक्कीमे अपनी कब तलक।
खाक बनकर आंखमें उसकी बसर कर जायंगे॥
कर रही बर्गेखिजांको बादे सरसर दूर क्यों?
पेशवाए फस्ले गुल हैं खुद सफर कर जायंगे॥
खाकमें हमको मिलानेका तमाशा देखना।
तुख्म रेजीसे नये पैदा शजर कर जायंगे॥
नौ नौ आंसू जो रुलाते हैं हमें उनके लिये।
अश्कके सैलाबसे बरपा हश्र कर जायंगे॥
गर्दिशे गिरदाबमें डूबे तो कुछ पर्वा नहीं।
बहरे हस्तीमें नयी पैदा लहर कर जायंगे॥
क्या कुचलते हैं समझकर वह हमें बर्गे हिना।
अपने खूंसे हाथ उनके तर बतर कर जायंगे॥

नकशे पा हैं क्या मिटाता तू हमें पीरे फलक।
रहवरीका काम देंगे जो गुजर कर जायंगे॥
—"ईश्वर"

मनस्विता

मनुष्य-जन्म-रत्नका-प्रकाश है मनस्विता।
स्वतन्त्र-साध्य शक्तिका--विकास है मनस्विता।
मनुष्य-जन्म व्यर्थ है-रही न जो मनस्विता।
मनुष्य क्या मनुष्य है? कभी विना मनस्विता॥ १॥
अदम्य शक्ति चित्तकी विशुद्ध-बोधसे भरी।
हृदन्तराल-शैलकी-विशाल-धैर्य निर्झरी।
हटें न पैर जो बढ़े-स्वलक्ष्य-सिद्धिके लिये।
अजेद ध्येय धारते—प्रबन्ध-साधना किये॥ २॥
प्रमाण लक्ष्य-सिद्धिका-बड़ा प्रयत्नयुक्त है।
न क्रोध है न भीति है-विषादसे विमुक्त है॥
न स्वार्थकी सुगन्ध है-नही प्रलोभ गन्ध है।
अदम्यशक्ति स्रोत है -प्रबन्ध-सत्य-सन्ध है॥ ३॥
यहाँ मनस्विताधिकार-वीरने कहीं कहीं।
दिखा रहा लिखा रहा - समान है सभी नहीं॥

हृदन्तराल वज्रसा-कड़ा किया बड़ा किया।

पड़े हुए स्वदेशको-स्वलक्ष्यमें खड़ा किया ॥ ४ ॥

समस्त-विश्व-चक्रके विचार-सार छानके।

स्वलक्ष्य-सिद्धिको यही- प्रधान मन्त्र मानके।

समस्त-सौख्य छोड़के—स्वदेश-भक्ति भूति है।

अनल्प-सौख्य-सिद्धिकी -यही धरा प्रसूति है ॥ ५ ॥

मनस्विता न बाह्य-शक्ति—अन्तरङ्ग-तत्व है।

बढ़ा चढ़ा त्रिलोकमें—मनस्विता-महत्व है॥

समस्त-सत्य-शक्तियाँ—कभी न न्यूनतो गहे।

समान-भव्य भाव हो—यथार्थमें बनी रहे ॥ ६ ॥

न अग्नि शीत हो कभी -चहे घटे चहे बढ़े।

बुझे चहे स्वभस्म हो-तथापि शीश पे चढ़े।

मनस्विता मनुष्य-हेतु—ब्रह्म-दत्त-शक्ति है।

अनल्प-कल्प-कीर्तिकी भरी विभूति भक्ति है ॥ ७ ॥

शिखाग्र अग्निका कभी—अधःप्रयाण क्या हुआ।

सदैव-उर्ध्व गामिता—रही बढ़ा चढ़ा हुआ।

वही अदम्य तेज है—कभी न जो हटे कहीं।

वही अखण्ड-शक्ति है—कभी न जो घटे कहीं ॥ ८ ॥

समस्त-पञ्चतत्वकी—समष्टि आत्मशक्ति है।

मनस्विता-विकाशसे—प्रमाण-पूर्ण भक्ति है।

अनेक वीर विश्वमें—मनस्विता दिखा गये।

सुनो सुनो मनस्वियो! यही तुम्हें सिखा गये ॥ ९ ॥

सदैव तेज शक्तिका- विकाश व्याप्त आप है।
कभी कहीं न जो रुके- महत्वका प्रताप है।
न वाड़वाग्नि-शक्तिको—जलौघने घटा दिया।
न विद्युदंक तेजको—दिनेशने हटा दिया ॥ १० ॥
समस्त-तेज शक्तियाँ अखण्डनीय भावसे।
अजेय हैं अमेय हैं- अदृश्य हैं स्वभावसे।
मनस्वि वृत्ति वीरमें—महा-प्रचण्ड शक्ति है।
मनुष्य-दिव्य दूतकी अमूल्य भाव-भक्ति है ॥ ११ ॥
मनस्विता भरे हुए—प्रतापसिंह वीर थे।
हिमाद्रि-तुल्य धीर थे—जलेशसे गंभीर थे।
स्वलक्ष्य-सिद्धिके लिये समस्त सौख्य छोड़के।
डटा रहा स्वपक्षमें - समस्त-भक्ति जोड़के ॥ १२ ॥
मनस्विता प्रतापमें अवर्णनीय थी रही।
"स्वतन्त्र-शक्ति सिद्ध हो - किसी प्रकारसे मही"।
यही विचार चित्तमें—प्रतापके सदा रहा।
इसीलिये डटे रहे—कठोर कष्ट भी सहा ॥ १३ ॥
महानुभाव-राम भी - मनस्वि-वीर-रत्न थे।
स्वतन्त्र-शक्ति—सिद्धिके किये सभी प्रयत्न थे।
अनीतिका विनाश ही समस्त-जन्म था किया।
प्रजानुराग राज्यका प्रबन्ध था दिखा दिया ॥ १४ ॥

"द विकुमार" महेश्वरप्रसादशास्त्री साहित्याचार्य।

चरखा

चरखा भारतको रखवारो ।
विधि वनि कै व्यापार सृजन नित जैसो कुछ विसतारो ॥
विष्णुरूप अगनित धन दै दै पालत देस हमारो ।
हर ह्वै हरत कलेस रावरे करत खलन मुंह कारो ॥
तागाधारी गुनगन मण्डित पण्डित गयो विचारो ।
परम पुनीत सरस सुर मानो वटुकन वेद उचारो ॥
चक्र सुदरसन जैसो दरसन करसन चलत संभारो ।
दुस्सासन पीड़ित पाञ्चाली जव हरिको हिय धारो ॥
वसन दये अरु लाज निवारी असरन कौन सहारो ।
देस चीर औरनके धारत नांगो निपट विचारो ॥
कब लौं लाज पराये बल सों निबहैगी निरधारो ।
ध्यान धरहु याते चरखाको हरि सम ताहि पुकारो ॥
पति राखहिगो वसन देहिगो उतपीड़न निरवारो ।
घर घर याको घर घर कलरव सव मिलि अवसि प्रचारो ॥
है अमोघ यह शस्त्र अपूरव गान्धी जूको प्यारो ।
लहहु स्वराज याहि बल भाई भारत भाग सुधारो ॥

—कविवर कृष्णविहारी मिश्र ।

षट्पदोक्ति

एरे गोरे कमल; सभ्यता यह तेरी है !
सौंप दिया सर्वस्व; तुझे नहिं सुधि मेरी है !!
बन्धनमें हूं फंसा; पड़े प्राणोंके लाले !
हा ! स्वतन्त्रता गयी; पड़े अब तेरे पाले !
हूं न अकेला एक मैं; वरन् अनेकों साथ हैं।
पड़े तुम्हारे फेरमें; मींज रहे अब हाथ हैं ॥१॥
हो प्रभातमें तुम पराग थोड़ासा देते,
करके कुछ सम्मान हृदय वशमें कर लेते।
इस विधि हम बन्धनसे मुक्त न होने पाते,
भूल हिताहित-ज्ञान दुःखपर दुःख उठाते ॥
कुटिल तुम्हारी नीति है; हम परागकी आशमें।
दुःख अनेको पा लिये; पङ्कज ! इस विश्वासमें ॥ २ ॥
यह है प्रायश्चित्त हुआ जो पाप है हमसे ।
एल पुष्पोंको छोड़ लगाया मन जो तुमसे ॥
जिनके नित सहवास विपद्के साथी सच्चे ।
वे निज प्रणपर रहे; हुए हम कैसे कच्चे ? ॥
हा ! विलासिता स्वार्थ वश, दूरदर्शिता छोड़कर ।
भूल करी हमने पड़ी; तुमसे नाता जोड़कर ॥३॥
हम हैं काले; हृदय हमारा पर है उज्वल ।
नहीं जानते हम कपट; और क्या होता है छल ॥

फंसे इसीसे रहे किन्तु हैं सावधान अब।
देते नाता तोड़ सूर्यका उदय हुआ जब॥
हे सुन्दर यह रूप पर, हृदय तुम्हारा श्याम है।
काले 'भ्रमर' प्रसिद्ध हम: शुद्ध हमारा काम है॥४॥
—भगवान स्वरूप शर्मा न्यायभूषण।

जेलखाना

घर बार छोड़ करके जावेंगे जेलखाना।
यह डर नहीं है तुझको, पावेंगे जेलखाना॥
जिस जेलमें महाप्रभु श्रीकृष्ण जन्म पाये।
मेरे लिये तो प्यारा मन्दिर है जेलखाना॥
कहते हैं लोग होती है जेलमें फजीहत।
गर वाकईमें पूछो जन्नत है जेलखाना॥
गान्धी महात्माने जिसमें उमर गमाई।
वह सौख्य—गृह हमारा प्यारा है जेलखाना॥
आत्मा वलिष्ट होती है जेलमें गयेसे।
सत्याग्रही जनोंका खञ्जर है जेलखाना॥
ये हथकड़ी औ बेड़ी हैं जेवरात सुन्दर।
हुब्बे वतन पै करता कुरबान जेलखाना॥

गृह—कार्य्यमें अनेकों जंजाल दीख पड़ते ।
चित शान्तिका सुसाधन है एक जेलखाना ॥
दर दर 'विपिन' गुफामें धूनी रमायगे क्यों ।
यदि मुक्ति मार्ग मैने पाया तो जेलखाना ॥
—विपिनजी श्रीवास्तव ।

चर्खा महिमा ।

चाहते यदि भारत उत्थान ।
उठो अब कर्मवीर संतान ॥
चलाओ चर्खा घर घर अब । मिटेंगे दुःख तुम्हारे सब ।
कतेगा सूत स्वदेशी जब । लहोगे होमरूल भी तब ।
रखेगा चर्खा ही सम्मान ।
उठो अब कर्मवीर संतान ॥
कभी चर्खे ही चलते थे । स्वदेशी कपड़े बनते थे ।
एकसे एक निराला था । सभी आलासे आला था ॥
तभी होते थे हम धनवान ।
उठो अब कर्मवीर संतान ॥
हुआ परदेशी जबसे राज । छुड़ाया सब कपड़ेका काज ।
विदेशी कपड़े देते है । द्रव्य सब हा! हर लेते हैं ।

मिटावे चर्खा इनकी शान।
उठो अब कर्म वीर संतान॥
चलाओ चर्खा, बनो स्वतन्त्र! रहो मत अब अन्योंके तन्त्र।
मिटावे चर्खा दुःख कलेश। रहे नहिं आफत तुमपर शेष॥
हृदयमे चर्खाकी लो ठान।
उठो अब कर्म वीर संतान॥
दिलाये गान्धी तुम्हें स्वराज्य। करो यदि चर्खेका तुम काज।
छोड़ दो सभी विदेशी साज। रहेगी तब ही भारत लाज॥
गाओ सब चर्खे ही की तान।
उठो अब कर्म वीर संतान॥

—श्री 'भवनाथ'

किसीसे भय क्यों खाऊंगा।

छल-बल-कौशल छली बलीके, चलें चुटीली चाल।
जटिल कालके वक्र चक्र भी, लावें कुटिल कुचाल॥
अचञ्चल चित हो जाऊंगा।
किसीसे भय क्यों खाऊंगा?
विघ्न वाण हो बाधा व्याधा, विपदाकी हो जाल।
पीछे फिर भी नहीं हटूं मैं, हूं निर्भीक विशाल॥

सत्य, क्या वस्तु सुनाऊंगा।
किसीसे भय क्यों खाऊंगा?
कोड़ोंकी फटकार, श्रद्धासे होवे सत्कार।
गांधी ईसा सदृश शान्त हो, सह लूंगा दुख-भार॥
सहन सीमा दिखलाऊंगा।
किसीसे भय क्यों खाऊंगा?
प्रतियोगी दलसे हो हमपर, अगणित अत्याचार।
रुष्ट नहीं उनसे होंगे, यह सत्याग्रही विचार॥
किसीको नहीं सताऊंगा।
किसीसे भय क्यों खाऊंगा?
भेद भावके झगड़े रगड़े, होंगे सारे नाश।
व्यथा विश्वकी दूर करूंगा, होगा सत्य-प्रकाश॥
प्रेम पीयूष पिलाऊंगा।
किसीसे भय क्यों खाऊंगा?
जीना मरना लगा हुआ है, इसका क्या है ध्यान।
तन मन धन पावन जीवनपर, कर दूंगा बलिदान॥
सत्य सेवा सिखलाऊंगा।
किसीसे भय क्यों खाऊंगा?

—रामानुजदास (बी० ए०)

अधिकारी और असहयोगी

अधिकारी- (१)

अधिकारी कहते हैं हमसे; तुम हमसे सहयोग करो।
सदा हमारी छायामें रह भारतीय सुख भोग करो॥
ईश्वरने ही हमें तुम्हारा, शुभचिन्तक कर भेजा है।
तब हमसे सम्बन्ध त्यागना, सोचो कितना बेजा है॥

[२]

तुम थे पूर्ण असभ्य, सभ्यता तुम्हें सिखाने आये हैं।
तुम्हें अशिक्षित समझ, दयावश विज्ञ बनाने आये हैं॥
तुम्हें योग्य कर, स्वावलम्बका पाठ पढ़ाने आये हैं।
तुम्हें पतनसे उठा, समुन्नति शिखर चढ़ाने आये हैं॥

(३)

तुम हमपर विश्वास करो, अब मत मानों तुम गांधीको
देकर हमें सहाय मिटाओ, सत्वर तुम इस आंधीको॥
सोचा भी है असहयोगका, क्या होगा भीषण परिणाम।
उससे सदा सचेत बनाना, तुम्हे, हमारा है यह काम॥

[४]

हो जाओगे जहां योग्य तुम, दे देंगे हम तुम्हें स्वराज्य।
सोचो समझो भारतवासी, क्या अब भी हम होंगे त्याज्य॥

समझानेसे नहीं सुनोगे तो, फिर तुम्हें हमारी शक्ति।
समझाकर लावेगी पथपर भूलोगे तव भारत भक्ति॥

असहयोगी- [५]

सुनकर इसे असहयोगी, तब बोला मुझको कहने दो।
नहीं चाहिये हमें सभ्यता, बस असभ्य ही रहने दो॥
बस रहने दो हमें मूर्ख ही, उस जहरीली शिक्षासे।
कब स्वतन्त्रता मिली किसीको तुम्हीं बताओ भिक्षासे॥

[६]

खूब कहा, जो स्वावलम्बका पाठ पढ़ाने आते आप।
तो उन्नत वाणिज्य हमारा, आकर नहीं नशाते आप॥
कब किसने आधीन देशको, स्वावलम्ब सिखलाया है।
करना तृप्तमधुर वचनोंसे; कूटनीतिकी माया है॥

[७]

बरस डेढ़सौमें भी जब तुम, हमें योग्य नहिं बना सके।
स्वावलम्बका पाठ पढ़ाकर, अवनतिसे नहिं उठा सके॥
तब क्या आशा करें हमें तुम, आगे योग्य बनाओगे।
हमें उठाओगे अवनतिसे, अथवा और गिराओगे॥

[८]

सच तो यह है तुमसे पहिले हम थे अपने पदो खड़े।
गिरने लगे दिनों दिन जबसे, चरण आपके यहां पड़े॥
कर डाला हा आर्य योग्यता-को आकर तुमने ही नष्ट।
हमको योग्य बनानेका क्यों, ढोंग दिखाते हो स्पष्ट॥

[६]

तुम हमपर विश्वास धरो मत, हम तुमपर विश्वास धरें।
करो घृणा तुम हमसे हरदम, हम तुमसे सहयोग करें॥
पशु पक्षिनसे अलग मूल्य जब नहीं हमारी जानोंका।
तुम गिनते हो, लक्ष्य बनाने, सहजहिं उन्हें निशानोंका॥

(१०)

इसपर भी हम ब्रिटिश न्यायको गुनते थे मनमें बेजोड़!
पर पञ्जाब कांडने सहसा, दिया न्यायका भण्डा फोड़॥
मालुम हुआ पक्षपातोंने ब्रिटिश न्यायका किया विनास।
हमें हटाना पड़ा बाध्य होकर, तब तुमपरसे विश्वास॥

(११)

है अधिकार आपको समझो, असहयोगको भीषण भूल।
सारी शक्ति लगादो सुखसे, करनेको इसको निर्मूल॥
लेकिन भारतवर्ष निवासी, होंगे इसके नहीं विरुद्ध।
इसे जानते हैं वे समुचित, आत्मशुद्धिका सच्चा युद्ध॥

(१२)

जिस उरसे यह निकला उसमें नहीं द्वेष अघका लवलेश।
नत मस्तक हो भारतीय नित, "मानेंगे गान्धी आदेश"॥
पशुबल, हिंसा, उत्पातोंको, इसमें नहीं कहीं स्थान।
प्रेम, अहिंसा आतम बलसे, यह पावेगा विजय महान॥

(१३)

अत्याचार, निरंकुशता अब रहे देशमें ना लवलेश।
, न्याय शान्ति-स्थापन, असहयोगका है उद्देश॥

मांगा बहुत भिखारी बनकर, दे दो हमें हमारे स्वत्व ।
लेकिन मिले न अबतक, सच है रखती है क्या भीख महत्व ॥

[१४]

अपने बलपर निज स्वतन्त्रता, प्राप्त करेंगे अपने आप ।
नत मस्तक हो स्वत्व मागनेका अब नहीं करेंगे पाप ॥
मांगेसे मिलता स्वराज्य है, ऐसा कहीं नहीं दृष्टान्त ।
प्राप्त किया जाता शक्तीसे यह स्वराज्यका सत सिद्धान्त ॥

(१५)

अपने हितके हेतु अगर हम, करते है कुछ उचित उपाय ।
तुम्हीं बताओ तो इसमें हम, करते हैं क्या अघ अन्याय ॥
कोई किसीका शुभचिन्तक बन, नहीं स्वर्गसे आता है ।
दीनजनोंके लिये दयामय, स्वयं दया दरशाता है ॥

[१६]

ले सकते हो हमें दबानेके हित पशु बलसे तुम काम ।
क्या कर सकता है भक्षक तब होता है जब रक्षक राम ॥
तुम्हें स्वत्व है कर सकते हो, सुखसे हम पर शस्त्र प्रहार ।
"शिर अनीतिपर नहीं झुकाना" मिला हमें भी यह अधिकार ॥

—शोभाराम धेनुसेवक ।

करुणा-क्रन्दन

हुई दशा है बुरी हमारी,
बचाओ भगवन् बचाओ भगवन्।
स्वदेश प्यारा गिरा है जाता,
बचाओ भगवन् बचाओ भगवन्।
नहीं है भरपेट नाज मिलता,
कि जिससे जीवन बचें हमारे।
बस अब तुम्हारी है आश बाकी,
बचाओ भगवन् बचाओ भगवन्।
नहीं कहीं है सुशान्ति मिलती,
अनेक दुखदल सता रहे हैं।
है मेरे हृदयोंसे आह जारी,
बचाओ भगवन् बचाओ भगवन्।
कभी थे हम रत्नवान बेशक,
बने हैं पर आज हम भिखारी।
है कानी कौड़ी न पास मेरे,
दशा सुधारा बचाओ भगवन्।
बहुत हुई दुर्दशा हमारी,
सभीसे हम नीचे गिर गये है।
न देश गारत हो अब हमारा,
बचाओ भगवन् बचाओ भगवन्।

स्वदेशकी वस्तु है न प्यारी,
विदेशी चीजों पै मर रहे हैं।
हमें ज़रा अब तो बुद्धि देकर,
बचाओ भगवन् बचाओ भगवन्।
विचारे सारे किसानगणकी,
न दुःख-गाथा है कोई सुनता।
जरा तो इनपर दयार्द्र होकर,
बचाओ भगवन् बचाओ भगवन्।
लिखें भला क्यों दशा हम अपनी,
न आपसे कुछ छिपा हुआ है।
बस आपसे अब यही विनय है,
बचाओ भगवन् बचाओ भगवन्।

नवनीतमिश्र वैद्य और ऋषिनारायण वाजपेयी।

किश्ती पार होती है।

ये क्यों बेड़ीकी चारो ओरसे झङ्कार होती है।
नये सरसे हमारे सर पै क्यों तलवार होती है॥
अजब यह वक्त आया है कि बच्चे मुसकुराते हैं।
धड़ाधड़ गोलियोंकी उन पै जब बौछार होती है॥

अजब गांधीका यह मन्तर सभीके दिलमें बैठा है।
गुलामोंकी जहांमें जिन्दगी बेकार होती है॥
वो ज्यों ज्यों राहमें कांटे बिछाते जाते हैं उनके।
अजब हैरत है उनकी तेज ही रफ्तार होतीहैं॥
वहम ऐसा समाया है टटोला करते हैं चर्खे।
कहां तकुवेमें ऐसी वैसी कोई धार होती है॥
नजर दुनियामे ऐसे ही नजारे आने लगते हैं।
कौम जब जालिमोंके जुलमसे बेजार होती है॥
कहां ईमान? खुदगर्जीके बादल छाये रहते हैं।
किसीके मुल्कमें जब गैरकी सरकार होती है॥
अरे तूफान जोरो जुल्मके तू देखते रहना।
दिसम्बरतक ये किश्ती हिन्दकी अब पार होती है॥
—"हरिप्रसाद सिंह"।

हम चाहते स्वाधीनता

[१]

देशमें निज वेषमें हम चाहते स्वाधीनता।
कर्ममें औ धर्ममें हम चाहते स्वाधीनता॥
ज्ञानमें विज्ञानमें हम चाहते स्वाधीनता।
जातिमें सब पांतिमें हम चाहते स्वाधीनता॥

२)

धाममें वस दाममें हम चाहते स्वाधीनता ।
कालमें हर चालमें हम चाहते स्वाधीनता ॥
ग्राममें सब ठाममें हम चाहते स्वाधीनता ।
योगमे सहयोगमें हम चाहते स्वाधीनता ॥

[३]

मेलमे सब खेलमें हम चाहते स्वाधीनता ।
पत्रमे औ छत्रमें हम चाहते स्वाधीनता ॥
देहमें निज गेहमे हम चाहते स्वाधीनता ।
प्रेममें औ नेममें हम चाहते स्वाधीनता ॥

[४]

कोर्तिमें शुभ गीतिमें हम चाहते स्वाधीनता ।
बोलनेमें चालनेमें चाहते स्वाधीनता ॥
बस हृदयमें लग रही है सुखमयी स्वाधीनता ।
हम चाहते स्वाधीनता हम चाहते स्वाधीनता ॥

—संकठाप्रसाद पाठक (खड्ग)

न समझो

हम भी मनुष्य ही है, कुछ हमको कम न समझो ।
कण्टक है चुभ न जाये, हमको कुसुम न समझो ।

तुम बढ़ते जा रहे हो, हम बोलते नहीं हैं।
देखो, इसीसे हमको—कातर कहीं न समझो।
जिसको मृतक हो समझे, वह बोल भी उठेगा;
वह मन्त्र जानता हूं, मिथ्या वचन न समझो।
रोनेमें वह असर है, जो मेरुको हिला दे;
यह आहका धुआं है, इसको गगन न समझो।
ज्वालामुखीसी आंखें, जब लाल लाल होंगी।
होगा प्रलयका वर्षण, कुछ भी कठिन न समझो।
ऋषि—रक्त है उबलकर, सोता गरम बनेगा;
विषमें बुझे हुए हैं, जीवन नरम न समझो।

—"जीवन"

—·—

सत्यव्रती

[१]

निर्भय विजयी वीर साहसी धीर प्रतापी।
तेजस्वी द्युति-मूर्ति, विनाशक अघ-सन्तापी॥
पुण्य-प्रतिभावान, प्रेम-प्रतिमा निष्पापी।
स्नेह-सुधाके श्रोत, दया करुणामय वापी॥
तू स्वार्थ-हीन स्वाधीन है, निर्मल जीवनमुक्त है।
स्वेच्छाचार विनाशके लिये शक्ति उपयुक्त है॥

(२)

कोड़ोसे निज कुटिल क्रूरता दिखलाते है।
वन्दी कर अन्याय-वन्दना सिखलाते है॥
छली प्रलोभन दिखा, मुझे जब ललचाते हैं।
क्या वे तुझको कभी, विकल, चञ्चल पाते हैं॥
तू कभी व्यथासे व्यस्त हो, होता नहीं अधीर है।
तू सत्य-शक्ति सम्पन्न है, दृढ़व्रती रणधीर है॥

—रामानुजदास बी० ए०

कबतक ?

[१]

प्रभो ! अब, कबतक धैर्य धरें ?
कबतक इस मनकी ज्वालाको दावे हुए फिरे ?
टूट रहे हैं जगके बन्धन
छूट रहा बलका अभिनन्दन,
हम कबतक स्वातन्त्र्य-पन्थपर चलते हुए डरें ?

[२]

धैर्य, त्यागकी भी है सीमा
जीवनका भी होता बीमा,
हम इस अवधि-हीन दुख-निधिमें कबतक सड़ा करें ?

[३]

जिसके लिये अवधि विनिमय है
उसको आशाका आश्रय है,
हमें न अवधि, न आश्रय-फिर कबतक बेमौत मरें ?

[४]

ग्रन्थिहीन विश्वास—सूत्रपर
रह सकता है कोई निर्भर—
जर्जर, जीर्ण वचन-डोरीपर हम कबतक ठहरें ?

—"राष्ट्रीय पथिक" ।

समझे हैं।

वतनपर जान देनेमें हम अपनी शान समझे हैं।
इसे ही दीन समझे हैं यही ईमान समझे हैं ॥१॥
गये वह दिन कि जब ठोकर लगा ठुकराये जाते थे,
अब अपने आपको हम भी अहले इन्सान समझे हैं ॥२॥
जरा यह लुत्फ तो देखो अजब तर्जे हुकूमत है,
कि टुकड़े खोर नौकर खुदको ही सुलतान समझे हैं ॥३॥
भले ही वह समझते हों यहां रहना कयामत तक।
हम चार दिनका ही उन्हें मिहमान समझे है ॥४॥

हमींपर बम गिराकर जो हमारे दोस्त बनते हैं।
हम उनको साफ लफजोंमे ही बेईमान समझे हैं ॥५॥
सिकोड़े नाक भौं लेकिन "स्वराज्य" हरगिज न छोड़ेंगे,
समझते हैं उसे हक हम जिसे वह दान समझे हैं ॥६॥
— "बेनीमाधव तिवारी"।

भारत सुधार देंगे

बरलाभ बुद्धिदात्री, जय जन्मभूमि प्यारी,
मान्यामहा मही तू, सर्वस्व है हमारी।
तेरे चरण कमल पे, तन मन सभी चढ़ाऊं।
ऐ मातृभूमि तेरे, गुण गण सदैव गाऊं॥
अधिकार जो हमारे, उनको अवश्य लेंगे।
दृढ़ व्रत यही कहेंगे, भारत सुधार देंगे॥ १॥
भोगेंगे सत्य ही हम, निज जन्म स्वत्व प्यारा,
परतन्त्रता करेगी, इस देशसे किनारा।
शासन स्वयम् करेंगे, नय नीतिके सहारे,
स्वाधीन कौम होंगे, तब फिर सभी हमारे॥
वह काम कौनसा है, जिसको न कर सकेंगे।
दृढ़ व्रत यही कहेंगे, भारत सुधार देंगे॥ २॥

बस ध्येय एक ही है, सुखमय स्वराज्य पायें,
कानून देश हितकर, अपने यहां बनायें।
सब भांति योग्य हैं हम, हैं वीरवर विजेता,
गान्धी तिलक सदृश हैं, धीमान विज्ञनेता॥
देवी स्वतन्त्रताके, शुभ साज अब सजेंगे।
दृढ़ व्रत यही कहेंगे, भारत सुधार देंगे॥ ३॥

सच्ची स्वतन्त्रतासे, जोड़ें सहर्ष नाता,
स्वाधीनसौख्य भोगें, यह है किसे न भाता॥
छोड़ो न स्वत्व अपना, सिद्धान्त यह निभाओ,
जीवन समरमें प्यारों, आगे कदम उठाओ॥
शुचि ऐक्य मन्त्र बलसे, दुख देशके टलेंगे।
दृढ़ व्रत यही कहेंगे, भारत सुधार देंगे॥ ४॥

उत्साहकी उमंगे, नूतन झलक दिखातीं,
सोये सुआत्मबलको, हृद्धाममें जगातीं॥
विच्छेद भेद करके, सहयोगिता बढ़ाती,
हैं कर्म—क्षेत्रमें वे, सादर हमें बुलाती॥
प्रहलादकी तरह हम, प्रणपर अटल रहेंगे।
दृढ़ व्रत यही कहेंगे, भारत सुधार देंगे॥ ५॥

आधीन हम किसीके, रहना नहीं चहेंगे,
अपमान मातृ भूका, पलभर नहीं सहेंगे॥
कसकर कमर जगतमें, स्वातंत्र्य सुख लहेंगे।
परमेश क्या कभी भी, हमपर सदय न होंगे॥

मानेंगे अब नहीं हम, लेंगे स्वराज्य लेंगे।
दृढ़ व्रत यही कहेंगे, भारत सुधार देंगे ॥ ६ ॥
प्यारे स्वदेश हितमें, रहना हमें अटल है,
संसारमें हमारा; विख्यात सत्य बल है ॥
बाधा विपत्तियोका, हम शीश फोड़ देंगे ॥
डरकर कभी न करसे, अधिकार छोड़ देंगे ॥
निर्भय निशङ्क होके, निज स्वत्व फल चखेंगे।
दृढ़ व्रत यही कहेंगे, भारत सुधार देंगे ॥ ७ ॥
राणा प्रतापके सम, हम घासतक चबेंगे।
प्यारी स्वतन्त्रताको, पर हम नहीं तजेंगे ॥
बन देशभक्त भामा, सर्वस्व अर्प देंगे,
अन्याय दम्भ दलका, हम दर्प तोड़ देंगे ॥
"प्रण है यही हमारा" सतसे नहीं हटेंगे,
दृढ़ व्रत यही करेंगे, भारत सुधार देंगे ॥
—हरिश्चन्द्रदेव विद्यार्थी।

भारत-गीत

जय जय भुवि—भार हरन, भारत हितकारी ॥
भारत - भुवि—भार - हरन, भारत—उद्धार-करन।
जय जय संसार सरन, असरन - ... ॥

जय जय भुवि—भार—हरन, भारत—हितकारी ॥ १ ॥

प्रथमहिं वसुदेव सुअन, त्रिभुवन—गति—जान-भुअन।

गोपी—जन—प्रान—रमन, वृन्दावन—चारी॥

नट-वर वपु, केशि—सुदन, केशव, भव—क्लेश-कदन।

निज-जन-दुख-द्वेष-निधन, बुध-जन-बलिहारी॥

जय जय भुवि—भार—हरन, भारत—हितकारी॥ २॥

तदुपरि मर्याद—धाम, रघुकुल—शोभाभिराम॥

पावन—गुन—ग्राम, राम, रावन—संहारी।

तैसे श्रीबुद्धदेव, बहु-विधि-कृत-जगत-सेव॥

भगवत—अवतार एव, दया—धर्म—धारी॥

जय जय भुवि भार—हरन, भारत—हितकारी॥ ३॥

त्यों नृप विक्रम अलोक, कीरति—सुरभित त्रिलोक॥

दीने अघ-पुञ्ज रोकि, पुण्य-डोर डारी।

शङ्कर नानक जुगिन्द, त्यों ही श्रीगुरु गुविन्द॥

अन्तिम मुनि दयानन्द, सुमिरत सुख भारी।

जय जय भुवि—भार हरन, भारत हितकारी॥ ४॥

—श्रीधर पाठक।

हे प्यारे भारत सन्तान

साहस शौर्य शुचित्व सिखाओ, अघ आलस्य नहीं अपनाओ।
उन्नति पथपर कदम बढ़ाओ, उन्नत उत्तम उच्च कहाओ॥
नही सहो सुखसे अपमान।
हे प्यारे भारत सन्तान॥१॥

अवधि अनलकी आंच न होगी, कोई लम्बी जांच न होगी।
केवल किस्सा साफ सुनाओ, नरम गरमका भेद मिटाओ॥
तुम भी पाओगे सम्मान।
हे प्यारे भारत सन्तान॥२॥

अपने तनको मनको धनको, बेचारे निर्बल निर्धनको।
स्नेह सहित सब भेंट चढ़ाओ, नहीं किसीको दोष लगाओ॥
बन जाओगे क्यों न महान।
हे प्यारे भारत सन्तान॥३॥

सत्य अहिंसाको फैलाकर, आत्मिक बलको प्रबल दिखाकर।
विश्व विजेता फिर बन जाओ, क्रांति शान्तिरसमें सन जाओ॥
स्नेह सृष्टिस्तम्भ समान।
हे प्यारे भारत सन्तान॥४॥

वस्त्र गजी गाढ़ा धारणकर, एवं दरिद्रता वारणकर।
गाढ़ा देश प्रेम दिखलाओ, ढाकेकी फिर धाक जमाओ॥
बने हिन्द फिर कला निधान।
हे प्यारे भारत सन्तान॥५॥

सारे हिन्दू, यवन, ईसाई, एक देशके भाई भाई।
एक चित्त हो करो भलाई, जननीकी हो नहीं हंसाई॥
जगत चकित हो लख उत्थान
हे प्यारे भारत सन्तान ॥६॥

जो पञ्चहिं मत लागहि नीका, देहु हरषि हिय रामहिं टीका।
जन सत्तात्मक ऐसा ठीका, रहा किसीको यहां न फीका॥
जान बूझ मत बनो अजान।
हे प्यारे भारत सन्तान ॥७॥

गया समय फिर हाथ न आता; धब्बा अपयश जनित न जाता।
नहीं व्यथाएं देंगी फेरी, क्यों न सम्पदा होगी चेरी?
बस रक्खो गौरवका ज्ञान।
हे प्यारे भारत सन्तान ॥८॥

—रामानुजदास (बी० ए० एल० एल बी०)

———

गर्वित है आज माता गान्धीसा पुत्र पाकर।
भारतके राजनैतिक आकाशका दिवाकर॥
वह स्वर्णका दिवस था जीवनमें हिन्द तेरे।
जब जन्म लेके आया था देव सद्गुणाकर ॥ १ ॥

सब छोड़कर ग्रहण की जिसने स्वदेश सेवा।
वह दीन दुःखितोंका है स्वार्थहीन चाकर ॥ २ ॥
पीड़ित प्रवासियोंके कष्टोंसे होके कातर।
झेलीं विपत्तियां सब जेलोंके मध्य जाकर ॥ ३ ॥
ध्रुव धीर वीर बनकर संकल्प निज निवाहा।
जागृत हमें किया है सत्याग्रही बनाकर ॥ ४ ॥
निर्भीकतासे जिसने यह धर्म-युद्ध छेड़ा।
सहयोग छोड़नेका कर्त्तव्य पथ सुझाकर ॥ ५ ॥
वह घोर शत्रु है तो शासन निशाचरीका।
अन्यायको हरेगा सत् नीतिसे दबाकर ॥ ६ ॥
हिन्दू व मुस्लिमोंका है मित्र एकसा वह।
अस्पर्श्य जातियां भी हैं मुग्ध प्रेम पाकर ॥ ७ ॥

—"निश्चल"

चेतावनी

भाइयो अब उठो, भारतीयो सुनो,
सो चुके खो चुके हो सभी मानको।
चेत जाओ! बचालो बचालो सही,
पूर्वजोंके विमल कीर्ति सम्मानको ॥ १ ॥
शुभ समय हाथसे यह निकलने न दो,
बन्धुओ! इस समय मेलसे काम लो।

कर्मवीरत्वका ध्यान भूलो नहीं,
पापिनी फूटका मत कभी नाम लो ॥ २ ॥
सत्य साहस हृदयमें भरो मत डरो;
सङ्कटोंका करो धैर्यसे सामना ।
प्रेम निश्चल करो देशसे नित्य हो,
देश-हितकी हृदयमें भरो भावना ॥ ३ ॥
बांध सबके हृदय ऐक्यके सूत्रमें,
द्वेष ईर्षा मिटा मातृ-प्रेमी बनो ।
आत्मबलका जपो मन्त्र मिलके सभी,
स्वार्थके पङ्कमें मत हृदयको सनो ॥ ४ ॥
शिल्प साहित्य विद्या प्रचारो यहां ।
शत्रु आलस्यको पास आने न दो ।
देश फूले फले मानवी स्वत्व पा,
स्वत्वको हाथसे मित्र जाने न दो ॥ ५ ॥
भीरुता दीनतासे न नाता रखो,
भाइयो मातृभूके दुखोंको हरो ।
देशकी वस्तुएं देशहीमें बना,
मत विदेशीमें धन हा लुटाया करो ॥ ६ ॥
नष्ट दुर्भाव हों दूर नैराश्य हो,
बन्धुओंमें सदा प्रेमकी वृद्धि हो ।
कर्मठी हों सभी शान्ति सुखको लहें,
शीघ्र ही हे प्रभो इष्टकी सिद्धि हो ॥ ७ ॥

—हरिश्चन्द्रदेव वर्मा ।

स्वराज्य मिले

[१]

हो चूर हम वतनकी मुहब्बतमें प्यारमे।
तन मन वो धन लगायें स्वदेशी प्रचारमें ॥
स्वामी न कोई रहने दें वाकी सुधारमें।
दावे हुए हैं जोश वो लायें उभारमें ॥

(२)

हाथ खींचें न अब हम हाथ बढ़ाना सीखें।
लाजिमी है हमे चर्खेका चलाना सीखें ॥
जैसे हो वैसे इसी धुनका तराना सीखें।
काम बन जाय जरा करके दिखाना सीखें ॥

(३)

कपड़े बुनेंगे घरमें ही चर्खा चलायंगे।
पहनेंगे गजी गाढ़ा न रेशम मंगायंगे ॥
ये तमन्ना हि नहीं तख्त मिले ताज मिले।
जीमें अरमां है यही कब हमें स्वराज्य मिले ॥

—श्रीराम

चरखेकी शान.

क्या आन बान शानसे चरखा है चल रहा;
हलचल नयी मचायी है कुटिलोंको खल रहा।
मल मलके कान, ऐंठता था खूब हिन्दका;
मैंचेस्टर है आज वही हाथ मल रहा। क्या आन०
गाढ़े समयमें काम खूब गाढ़ेने किया;
आशाका वृक्ष सींच दिया फूल फल रहा। क्या आन०
करते रहे थे दूर दूर ऐंठसे जिसे --
उसकी ही आज तानसे सीना उछल रहा। क्या०
इसके सुशब्दने किया क्या खूब ही असर;
जिससे कि छिन्न भिन्न हो पत्थर पिघल रहा। क्या०
अनुराग फागका बढ़ा सहयोग त्यागसे;
नापाक दर्प ताग है होलीमें जल रहा। क्या आन०
आजाद हिन्द होनेमें सन्देह कुछ नहीं;
'अभिलाषी' देशबन्धुओंका बल उबल रहा। क्या०

—"अभिलाषी"

भारत-भक्त

प्रभो मुझको यही वर दो, कहाऊं भक्त भारतका।
मरकर जिऊं तोभी, कहाऊं भक्त भारतका ॥ १ ॥

मुसीबत लाख आवे गर दिलेरी आज़मानेको ।
नहीं तेवर ज़रा बदलूं, यही प्रण भक्त भारतका ॥२॥
किया है जानो सर हाजिर, हवाले आज कातिलके ।
करेगा फैसला फैसल, जफ़ासे भक्त भारतका ॥३॥
मुबारक जेलमें बन्दी, बना सिजदा करूंगा मैं ।
यही हो हौसला कायमये, दिलमें भक्त भारतका ॥४॥
मेरे जख्मे जिगरसे जो, गिरेगा खून मक्तलमें ।
कहेगा साफ लफ्जोंमें, कि था मैं भक्त भारतका ॥५॥
बजेगी बाद्य बन करके, मेरी जब हथकड़ी बेड़ी ।
सुरीले रागमें धुरपद, कहूंगा भक्त भारतका ॥६॥
बनाकर वेष योगीका, रमाऊं देशकी धूनी ।
किसी योनीमें पैदा हूं, कहाऊं भक्त भारतका ॥७॥
—प्रभाकर श्रीखण्डे ।

—·—

लो० तिलकका स्वर्गीय सन्देश.
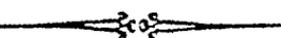
दुस्सह दुःख हरूंगा ।

(१)

शूर-साहसी-धीर बनूंगा, भोग विलास तजूंगा ।
निर्भय निज कर्त्तव्य करूंगा, सुखके साज सजूंगा ॥
सब विघ्नोंकी शैल-श्रेणिको, चूर्ण विचूर्ण करूंगा ।
प्राणाधिक प्रिय जननी तेरा, दुस्सह दुःख हरूंगा ।

(२)

सत्पथका ही अवलम्बन ले, कर्म-भूमिमें आऊं।
कीर्ति-पताका फिर फहराऊं, उन्नत तुझे बनाऊं॥
ब्रह्मचर्यसे सदा रहूंगा, प्रबलित अङ्ग करूंगा।
प्राणाधिक प्रिय जननी तेरा, दुस्सह दुःख हरूंगा॥

(३)

प्रथम सिद्धिके पाठ पढ़ूंगा, आगे तभी बढ़ूंगा।
विक्रमके गढ़ गहन गढ़ूंगा, गौरव-शिखर चढ़ूंगा॥
तन, मन, धनसे, निश्चय पूर्वक, ज्ञान प्रसार करूंगा।
प्राणाधिक प्रिय जननी तेरा, दुस्सह दुःख हरूंगा॥

[४]

दुःशासन-सम कोई खल जो, तेरा वस्त्र हरेगा।
पाप-बुद्धिसे तुझे लखेगा, रावण-चाल चलेगा॥
दण्ड उचित ही उसे करूंगा, पीछे नहीं हटूंगा।
प्राणाधिक प्रिय जननी तेरा, दुस्सह दुःख हरूंगा॥

(५)

सङ्कटसे अब प्रयत्न-पूर्वक, होगा नित संघर्ष।
जीवन-रणमें योग्य शस्त्रका, लूंगा योग सहर्ष॥
प्राणोंको तो तुच्छ समझकर, तनु बलिदान करूंगा।
[illegible] प्रिय जननी तेरा, दुस्सह दुःख हरूंगा॥

(६)

देह निहत होकर भी जो दुखका लवलेश रहेगा।
कभी न होना व्याकुल माता! वह भी शीघ्र मिटेगा॥
फिरसे भूपर तेरे कारण, धारण जन्म करूंगा।
प्राणाधिक प्रिय जननी तेरा, दुस्सह दुःख हरूंगा॥

(७)

जब तू होगी पूर्ण सुखी, जब वैभव बहुत बढ़ेगा।
पूरा जब स्वातन्त्र्य फलेगा, यश-रवि पूर्ण चढ़ेगा॥
माता! इस जगमें सब विधि मैं, असली तभी मरूंगा।
प्राणाधिक प्रिय जननी तेरा, दुस्स दुःख हरूंगा॥

—संकल्पसे उद्धृत

खुशामदी टट्टू

सुनिये प्रेम समेत आप सिद्धान्त हमारा —
अति अद्भुत है और वृहत, वृत्तान्त हमारा।
हम हैं परम प्रसिद्ध खुशामदवाले टट्टू;
लिखे पढ़े हम नहीं, रहे बस अक्षरचट्टू॥ १॥
जिससे कुछ मिल जाय उसीका गुण गाते हैं;
निन्दासे हम तनिक न मनमें भय खाते हैं।

चिन्ता करके अशुभ स्वामि-शुभचिन्तक बनते;
होकर भी अति अधम अकड़कर हम हैं चलते ॥२॥

भरते हैं निज पेट अन्यके घरको भरके,
घरपर हैं पर बने हुए हम परके घरके।
जाति हमारी दुखी न हो यदि होय हमारे,
पक्षपातका पङ्क लगे तो माथ हमारे॥ ३ ॥

देश रसातल चला जाय पर हमें न ग़म है;
हमें तरक्की मिले देहमें जबतक दम है।
अपने सुखसे सुखी जानते हैं हम सबको;
अपने दुखसे दुखी जानते हैं हम सबको ॥ ४ ॥

वेदोंके भी भेद खोलकर हम धर देते;
शास्त्रोंकी भी कठिन समस्या हल कर देते।
कवि, कोविद, वर विज्ञ लगे कहलाने हम हैं;
मन्त्र तन्त्रसे कभी खुशामद क्या कुछ कम है॥ ५ ॥

जिससे निकले काम बड़ाई उसकी करते;
उसके मुखपर विविध बुराई सबकी करते।
अपने कुलसे मेल बाहरी हम रखते हैं;
पर उसका अपकार सदा छिपकर करते हैं ॥ ६ ॥

हमें वही है वन्द्य, निन्द्य कहता जग जिसको;
स्तवन सुनाकर तुष्ट किया करते हैं उसको।
चाहें तो हम तुच्छ काचको रत्न बना दें;
चाहें तो हम निशा-तिमिरमें मिहिर दिखा दें ॥ ७ ॥

निर्गुणियोंको गुणी वनाते फिरते हैं हम;
जान बूझकर पाप-गर्तमें गिरते है हम।
वालमीकिने असुर वनाया था ब्राह्मणको;
हमने सुरसे श्रेष्ठ वनाया राक्षस-गणको ॥ ८ ॥
पर कुरसीपर गये न अवतक हम वैठाये;
किसी तरह यदि वैठ गये, तो गये उठाये।
सवसे वढ़कर नाम हमारा हुआ न अवतक;
किसकी २ करें खुशामद हा हम कवतक ॥ ९ ॥
एक दिवस हम खड़े हुए निज प्रभुके आगे;
पूर्व-जन्मके कर्म हमारे मानो जागे।
ईश्वरसे भी अधिक उन्हें हम लगे वनाने;
और ऊपरी भक्ति दिखा, जय लगे मनाने ॥ १० ॥
प्रभुसे वढ़कर और नहीं है कोई जगमें;
श्रीश ईशसे वीस आप होंगे पग पगमें।
प्रभुसे ऊंचा अधिक ताड़ भी कभी न होगा;
वली आपसे अधिक सांड़ भी कभी न होगा ॥ ११ ॥
चतुर्वर्गको आप लुटा देते हैं मुखसे;
सदा आपके दास जेव भरते हैं सुखसे।
वना रहे सरकार! सदा दरवार तुम्हारा;
कारवार भी वना रहे वरवार तुम्हारा ॥ १२ ॥
देश, वेश, धन, धर्म रिहन है पास आपके;
देह, गेह, सत्कर्म रिहन है पास आपके।

कठपुतलीके तुल्य नचाते रहिये हमको;
जो जी चाहे आप डाटकर कहिये हमको ॥ १३ ॥
पीट दीजिये आप, हमें परवाह नहीं है;
बने रहें हम दास चित्तमें चाह यही है।
सत्तू देकर हमें, आप मृदु मेवा चखिये;
तो भी हम हैं मस्त नाथ ! यदि भूखे रखिये ॥ १४ ॥
चन्द्र सूर्य मिट जाँय मिटे रत्नाकर खारा;
सारा जग जल जाय जले सर्वस्व हमारा।
बने रहें पर आप ताप चाहे हमको हो;
जो कहिये हम करें पाप चाहे हमको हो ॥ १५ ॥
जबसे प्रभुका चरण-कमल अवनीपर आया—
तबसे ही देवत्व सभी मनुजोंने पाया।
विरसा थी यह भूमि तुरत सरसा हो आयी;
सूख गयी थी शस्य-पंक्ति झटपट हरियायी ॥ १६ ॥
लोहा भी हो गया कनक, छूकर प्रभु पगको;
झट जीवित कर दिया आपने मुर्दा जगको।
कल्पवृक्ष तृण किया, किया हीरा कङ्कड़को;
किया निशाको दिवस, किया अति चेतन जड़को॥१७
यदि गुलाब-जल-जलधि बीच स्नान करें हम;
और यत्नकर सुधा-सरोवर पान करें हम।
वाणीपर भी जीभ हमारी करे चढ़ाई;
कर सकते हम नहीं आपकी तदपि बड़ाई ॥ १८ ॥

पत्थरपर भी कमल खिलानेवाले तुम हो;
नभमें भी उद्यान लगानेवाले तुम हो।
यदि चाहे तो आप जलधिमें आग लगा दें;
भाग्य जगा दें, और देशके दुःख भगा दें॥ १६ ॥
आप करे अपकार, हमीं उपकार करेंगे;
अपमानित हों क्यो न, तदपि सत्कार करेंगे।
सुखद स्वत्व सर्वस्व निछावर हम कर देंगे;
नाथ! मानिये सत्य अन्न मुट्ठीभर लेंगे॥ २० ॥
सदा बढ़े नाथ! प्रताप आपका;
मुझे न होवे डर झूठ पापका।
तुम्हें मिले कीर्ति-लता हरी भरी;
मुझे मिले उत्तम उच्च नौकरी॥ २१ ॥
—रामचरित उपाध्याय।

— —

सफेद टोपी।

अगर इसको लगाते हम तो इसमें आपका क्या है।
हमारी खुदकी चीजोमे किसीके बापका क्या है॥
तुम्हें नहिं शर्म है इसकी कि तुम क्या बात करते हो।
उलझते आप हो औ दोष मेरे सिर पै धरते हो॥

हमारे घरकी थी इससे इसे हमने लगायी है।
नहीं इसको कहीं साहब विलायतसे मंगायी है॥
हमारी शान इज्जतका चमकता जो सितारा है।
जमाना जानता सरपर सदा रहता हमारा है॥
न पाओगे इसे दिखलाके आंखे झिड़कियां देकर।
न पाओगे इसे गर आओगे शमशीर भी लेकर॥
ये सीना सामने होगा चुभें गर आके तलवारें।
निभाऊंगा इसे तब भी वहें जब खूनकी धारें॥

सिरपर है जबतक रखी,
छीनी जा सकती नहीं।
सिर जावे तो जाय पर,
टोपी जा सकती नहीं॥

—रतन।

बलिदान।

(१)

आर्तनादोंसे फटा जाता गगन, पर उन्हें कोई यहां सुनता नही।
हैं यद्पि निर्दोष,पर जगमें अहो,दुर्बलोंको शरण कब मिलती कहीं॥

(२)

नर-पिशाचोंने दबाया आ,गला, वज्र या पत्थर बना जिनका हिया!
गयी चण्डालकी पैनी छुरी,रो कलपकर कूच बकरेने किया!!

[३]

पाशवेच्छा पूर्ण करनेके लिये, शक्तिकी अभ्यर्चना यों की गयी।
जगत-प्राणी-मात्र जिसके पुत्र हैं,जगन्माता यों कलङ्कित की गयी॥

[४]

हिंसकोका खूब करते हो विरोध,क्या तुम्हें लज्जा स्वयं आती नहीं।
"है अहिंसा धर्म्म" सुन,तुमसे भला,मूर्खताकी,हद हो जाती यहीं॥

(५)

कानपर जूं तक नहीं है रेंगती, देश जाता है रसातलको चला।
बेकसोकी आह निकली है जहां, देश भी वह क्या कभी फूला फला

—"उपासक"।

म्युनिसिपल मेम्बरी।

क्या वक्त है कि शाने इमारत है मेम्बरी,
पब्लिकमें एक जरीये शोहरत है मेम्बरी,
हां, बे जरोंके वास्ते दौलत है मेम्बरी,
बे-इज्जतोंके वास्ते इज्जत है मेम्बरी,
सच पूछिये तो काबिले नफरत है मेम्बरी।
इस मेम्बरीको दूरसे बस कीजिये सलाम,
मेम्बर वह हो खुशामदी टट्टू का जो दे काम,

दाना है और न घास, खरैरा है सुबहो शाम,
बेगारी अहल-शहरका हुक्कामका गुलाम,
बैठे बिठाये मुफ्तकी मेहनत है मेम्बरी

तुर्रा यह है कि इस पे है सारा जमाना लोट,
चलती मुखालिफोंमें है बाहम गजबकी चोट,
हरएक चाहता है कि हो जाय अपना वोट,
परवा नही बलासे जो बिक जाय हेट कोट,
फाकासे गर मिले तो गनीमत है मेम्बरी।

अय्यामे इंतखावके आये करीब जब,
होने लगीं खुशामदें वोटरकी रोजो-शब,
भाई चचाका फिर उन्हें देने लगे लकब,
कहने लगे तुम्हीं पै है दारोमदार सब,
अपनी तो बस तुम्हारी बदौलत है मेम्बरी

मोटर फिटनकी डाक है अक्सर लगी हुई,
एक एकके सवारी है घर घर खड़ी हुई,
है वोटरोंकी जान बलामें पड़ी हुई,
यारोंकी भीड़ जिनके है दर पै अड़ी हुई,
जंजाल है बवाल है आफत है मेम्बरी।

मेम्बर जो हो गये कहीं फूटे नसीबसे,
फिरते हैं पेंठते हुए शकले अजीबसे,
गुजरा जो राहमें कोई वोटर करीबसे,

लेते नही सलाम भी अब उस गरीबसे,
नाजो गरूर किब्रो रऊनत है मेम्बरी।
— "आजाद"

व्यंग्योक्ति

(१)

सदा अकारण दहिने बायें होते रहते।
निशि दिन पर-अपकार प्रेमसे करते रहते॥
देख जगतको सुखी शोकसे रोते रहते।
लोगोंको लख दुखी आप वे हंसते रहते॥
करना द्रोह प्रचार ही जिसका दैनिक काम है।
वन्दनीय उस पुरुषको मेरा कोटि प्रणाम है॥

(२)

बन्धु बन्धुसे लड़ा भिड़ा सब सुख हर लेते।
पिता पुत्रमें भेद भाव जल्दी भर देते॥
करते चुगली कभी नहीं जो हैं शरमाते।
सदा इधरकी उधर कहा करते सुख पाते॥
नारदीय वर मन्त्रसे जिसका जगमें नाम है।
वन्दनीय उस पुरुषको मेरा कोटि प्रणाम है।

(३)

अपनी भाषा छोड औरसे प्रेम लगाते।
धरनेमें निज देश वेष जो हैं शरमाते॥
गिरी दशाको देख बन्धुको नहीं उठाते।
शिरपर फैशन भूत विमल जो नित्य नचाते॥
लोभ मोह परिपूर्ण जो सिर्फ स्वार्थका धाम है।
वन्दनीय उस पुरुषको मेरा कोटि प्रणाम है॥

(४)

दया नहीं है हया दूर भी जिससे रहती।
राजभक्ति अरु देशभक्ति नहिं पास फटकती॥
विषय-वासना रिक्त देह जिनका कर देती।
पेटभक्ति ही शक्तिहीन कर वल ले लेती॥
अपने सुखसे जो सुखी रहता आठो याम है।
वन्दनीय उस पुरुषको मेरा कोटि प्रणाम है॥

[५]

कपट भेद पाखण्डपना जिसका धन-वल है।
घोर अविद्या दम्भ मोह मात्सर्य प्रवल है॥
अपने घरको छोड़ परायेका जो वल है।
उद्योगोंसे रहित कलामें नहीं कुशल है॥
कह भद्दी निज चीजको करता जो वद्नाम है।
वन्दनीय उस पुरुषको मेरा कोटि प्रणाम है॥

(६)

घर घर खाता कठिन झिड़कियां सहता रहता।
कौड़ीके भी लिये हाथ फैलाता रहता ॥
सहता गाली खीज जरा भी नहीं लजाता।
जो हुजूरकी ठकुरसुहाती सदा सुनाता ॥
न्धु बीच रह दीन हो जो सहता अपमान है।
न्दनीय उस पुरुषको मेरा कोटि प्रणाम है ॥

(७)

प्रभुता पाकर करता अत्याचार सताता।
गुरुजनको दे कष्ट औरका और सुनाता ॥
धन अरु बलसे हीनजनोंको धूल मिलाता।
शेखीमें रह मस्त औरको आँख दिखाता ॥
पने घरमें भी नहीं जिसका कुछ सम्मान है।
वन्दनीय उस पुरुषको मेरा कोटि प्रणाम है ॥

—"विमल"।

यादे वतन

सख्तियां ऐ फलके पीर! बहुत झेल चुके:
खेल जो तुमको खिलाने थे वे सब खेल चुके।
बैठो पाबन्दीमें हम चाट बहुत झेल चुके:
ठेलनेवाले भी पापड़ हैं बहुत बेल चुके ॥ १ ॥

लाखों सदमे सहे, आवारः वो बरबाद रहे;
नीमवहशी रहे, नादां रहे, नाशाद रहे।
गर्दिशे वक्तने क्या क्या न दिखाये सदमे;
नित नये दाममें फंसकर हैं उठाये सदमे ॥ २ ॥
राहतें हमने दीं पर बदलेमें पाये सदमे;
कद्र की हमने कलेजेसे लगाये सदमे।
चहचहाते रहे फरियादो फुगाके बदले;
मौसमे गुल ही समझ रक्खा खजांके बदले ॥ ३ ॥
बागे जन्नतसे भी पुरलुत्फ चमन अपना है;
खुल्द अपना है ये गुलजारे अदन अपना है।
हमसरे अर्श मुअल्ला ये वतन अपना है;
जान अपनी है यही और यही तन अपना है ॥ ४ ॥
गैरमुमकिन है कि हम अपना वतन भूल सकें;
और गर भूलें तो मुमकिन नहीं फल फूल सकें।
शाद हो किस तरह जबतक कि वतन शाद न हो;
कैसे आजाद हों जबतक वतन आजाद न हो ॥ ५ ॥
या खुदा ! इस तरह कोई कहीं बरबाद न हो;
अपनी अजमत भी वह अगली जिसे अब याद न हो।
डाल नैरंगे जहां आंखोंमे यों धूल गये।
सूझ हमको न पड़ा अपना वतन भूल गये ॥ ६ ॥
शुक्र सद शुक्र कि गुलशनमें बहार आई है;
यक नये ढबसे हुई फिर चमन आराई है।

बात फिर तहको बड़ी फिक्रसे यह पाई है;

साहिबे होश है जो कोमका सौदाई है ॥ ७ ॥

सर वह सर ही नहीं जिसमें नहीं सौदाय वतन ।

दिल वह दिल ही नहीं जिसमे कि नहीं जाय वतन ।

हमने आलममें तमद्दुनकी विना रक्खी है:

कोई ईजाद किसीसे न छिपा रक्खी है ॥ ८ ॥

बात कोई न भलाईकी उठा रक्खी है;

उलफते गैर भी माईसे सिवा रक्खी है ।

हुक्मरां हम रहे दुनियांमें कि महकूम रहे;

यक दिलावर रहे, सच्चे रहे, मासूम रहे ॥ ९ ॥

होश फिर हमने संभाला है संभलनेके लिये;

है कमरबस्ता नये दौरमें चलनेके लिये ।

पैर आगे नहीं रक्खे गये टलनेके लिये;

दिलमें बेचैन थे अरमान निकलने लिये ॥ १० ॥

माल अपना रहे काबूमें हो दौलत अपनी;

है वतन अपना तो उसमें हो हुकूमत अपनी ।

आम हो रंगे वफा जोरों जफाके बदले:

दिलमे तसकीन हो फिर हिर्सो हवाके बदले ॥ ११ ॥

हम पियें आबे वफा जामे फनाके बदले;

ताजका साया रहे जिल्ले हुमाके बदले ।

रात दिन कौमकी खिदमत करें दिल शाद रहें.

इस गुलामीके गमो रञ्जसे आजाद रहें ॥ १२ ॥

कौमके हाथोंमें जो कौमकी तालीम रहे;
सबके हक, यकसां रहें हकको वह तकसीम रहे।
कायदे वह हो न फिर हाजते तरमीम रहे;
हो न तखसीस तकस्सुबसे वह तामीम रहे ॥१३॥
कुछ निहत्ते न हों और कुछ लिये हथियार न हों;
एकसे खुश न हों और एकसे बेजार न हों।
फर्ज अपना है यही हम न वतनको भूलें;
शर्मकी जा है जो अगलोंके चलनको भूलें ॥१४॥
अब न दम भरके लिये इल्मको फनको भूलें;
है तअज्जुब जो चमनजाद चमनको भूलें।
मुल्कके वास्ते हो जोशो मुहब्बत हममें;
जान भी जाये तो बस जाये वतनकी गममें ॥१५॥
— "त्रिशूल"।

महात्माजीका स्वागत

मातरम् वन्देकी हर सिम्त सदायें आये;
प्रेमके जोशकी घनघोर घटायें आयें।
मादरे हिन्दकी कुल याद वफायें आये;
इस गुलामीसे हमे आके छुड़ाये आयें॥
चश्म बद दूर, रहें दूर बलायें, आयें।
कौमकी रूहे रवाँ, गांधीजी, आये आयें॥

आरज़ू पूरी हुई, क्यों न फ़िदा जान करें ;
किस तरह पूरे दिलोमें भरे अरमान करें।
कैदो इफलासमें हम और क्या सामान करें ;
दिल निछावर करें और जानको कुरबान करें ॥

मादरे हिन्दका पैग़ाम सुनानेवाले !
ओ, अड़े वक्त पै काम आनेको आनेवाले !

एक आलममे है मशहूर सफाई तेरी ;
रास्ती रह्म, अदा कौन न भाई तेरी।
ख़लक़की ख़लक़ हुई आज फिदाई तेरी ;
तू खुदाका हुआ, है सारी खुदाई तेरी ॥

अब जबरदस्त हुए जेर, हैं तेरे बसमें।
हिन्दके शेर, हुए शेर हैं तेरे बसमें ॥

उस पै यह लुत्फ कि तू उन पै ग़ज़बनाक नहीं ;
रञ्ज पहुंचाये किसीको तुझे यह ताक नहीं।
जोर सहजोरोंका, पर तुझसे चला ख़ाक नहीं ;
जख्म आये है हजारों पै जिगर चाक नहीं ॥

दोस्त सक्तेमें हैं, दुश्मनको भी हैरानी है।
तेगे गुजरातसे भी बढ़के तेरा पानी है ॥

आज हम लोगोंका सौभाग्य सितारा चमका ;
आते ही तेरे हुआ कूच है रञ्जोगमका।
"रहनुमा आया यहां आज है यक आलमका"
हमको भी है जो भरोसा तो है तेरे दमका ॥

और क्या अपनी ही अब जानको भारी हम हैं।
ज़ुल्मसे तङ्ग है तद्बीरसे आरी हम हैं॥

सरते दार यहां भी हैं जमींदार बहुत :
तङ्ग लोगोंको किया करती है बेगार बहुत।
नामको भी नहीं गमख्वार हैं खूंखार बहुत :
है मसीहा नहीं यां और हैं बीमार बहुत॥
ज़ुल्म पै ज़ुल्म रिआयाको है सहते देखा।
एक भी आंखसे आँसू नहीं बहते देखा॥

कोई हमदर्द नहीं कोई मददगार नहीं;
कौमका मुल्कका गोया कि यहां प्यार नहीं।
होशमें आयें कभी ऐसे ये मैख्वार नहीं:
हश्र बरपा है पै यह ख्वाबसे बेदार नहीं॥
एक भी ऐसा नहीं हाथमे पतवार करे।
बेड़ा इस खित्तेका, हिम्मतसे बढ़े पार करे॥

मेल कैसा यहां आपसमे लड़े मरते हैं;
खौफ क्या उनको खुदासे भी नहीं डरते हैं।
तीर्थ समझे हैं कचहरीको वहीं तरते है;
कोई गङ्गा कोई कुरानको सर धरते हैं॥
लुटते खुद भी हैं बिरादरको भी लुटवाते हैं।
योंहीं लड़ भिड़के जमानेसे गुजर जाते है॥

आप आये है दया इतनी दिखाते जायें;
बेतरह सोये है हम हमको जगाते जायें।

धूलमें लोटनेवालोंको उठाते जायें;
एक गमख्वार यहां ऐसा बनाते जायें॥
होके बेखौफ 'असहयोग' का जो काम करे।
कौमकी फिक्र ही जो सुबहसे ताशाम करे॥
जान डालेगा यहां आपका आना अब तो;
लोग देखेंगे कि बदला है जमाना अब तो॥
गैरमुमकिन है गरीबोंका सताना अब तो;
सुनके शहजोर हुए कौमी तराना अब तो॥
आप आये हैं यहां जान ही आयी समझो।
गोया गोरखने धुनी फिर है रमायी समझो॥
—"त्रिशूल"

वज्रपात!

[१]

वज्रपात! मर मिटे हाय हम!-रोने दो, संहार हुआ!
कसक कलेजे फाड़, दुखी हैं, बुरे समयपर वार हुआ।
नभ कम्पित हो उठा, करोड़ोमे यह हा! हा! कार हुआ,
नहीं हाथसे गिरा भंवरमें, जो मेरा पतवार हुआ।
मैं ही हूं, मुझ इकलौतीने, अपना जीवन धन खोया,
रोने दो, मुझ हतभागिनने, अपना मनमोहन खोया।

(२)

आधी रात, करोड़ों बन्धन, अन्यायोंसे झुकी हुई,
पराधीनताके चरणोंपर, आंसू ढाले रुकी हुई।
अकुलाते, अकुलाते, मैंने, एक लाल उपजाया था,
था पञ्चानन बाल खलोंका, एक काल उपजाया था।
जिसने टूटे हुए देशके विमल प्रेम बन्धन जोड़े।
कसे हुए मेरे अङ्गोंके कुटिल काल बन्धन तोड़े॥

[३]

खड़ा हुआ निःशंक शिवाजीपर बलि होना सिखलाया,
जहां सताया गया, वहां वह शीश उठा आगे आया।
बागी, दागी कहलाके पर, जरा न मनमें मुरझाया,
अगणित कंसोंने सन्मुख ही सहसा श्रीकृष्ण खड़ा पाया।
जहां प्रचारा गया, वीर रण करनेको तैयार रहा,
मातृभूमिके लिये, लड़ाका मरनेको तैयार रहा॥

[४]

"तू अपराधी है, तूने क्यों भारतके गाये गीत वृथा।
तू ढोंगी है, बकता फिरता है तुच्छ देशकी कीर्ति कथा।
तुझसोंका रहना ठीक नहीं, ले देता हूं कालापानी,"
हे वृद्ध महर्षि हिला न सकी कायर जजकी कुटिलत वाणी।
तू सहसा निर्भय गर्ज उठा, "कालापानी सह जाऊं मैं,
कष्टोंसे भारत मांके बन्धन टूटे पाऊं मैं॥"

(५)

मै, 'मुंहवन्दो'का हार लिये, 'मत लिखो, कठिन कंकण धारे,
'भारतरक्षा' के शूलोंकी पावोंमें वेड़ी झनकारे,
'हथियार न लो'की हथकड़ियां, रौलटका हियमें घाव लिये,
डायरसे अपने लाल कटा, कहती थी अञ्चल लाल किये,
ये टूट पड़ेंगे, जरा केसरी कम्पित कर हुंकार उठें।
हां, आन्दोलनके धन्वाको, तू करमें ले टंकार उठे॥

[६]

काश्मीर कुमारी सुनते थे,—"भारत मेरा अविभाज्य रहे,
"धन वैभवकी,सुखसाधनकी धुन,जीवनमें सब त्याज्य रहे,
"वलि होनेकी परवाह नहीं, मैं हूं, :कष्टोंका राज्य रहे,
"मै जीता, जीतो, जीता हूं, माताके हाथ स्वराज्य रहे,
"दहला दूं सात समुद्रोंको, कहला लूं हां, वल जान लिया,
लो, अपनो अपना राज्य करो, अधिकार तुम्हारा मान लिया"

[७]

"मैं बूढ़ा हूं, दिन थोड़े है, चल वसने ही की वारी है,
जवतक भारत स्वाधीन न हो,तवतक न मरूं तैयारी है"।
मजवूत कलेजोंको लेकर, इस न्याय दुर्गपर चढ़ो चलो,
माताके प्राण पुकार रहे, संगठन करो वस बढ़ो चलो,
वह धन लाओ, जीवन लाओ, सब आओ,लाओ दृढ़ डोर लगे
प्यारा स्वराज्य कुछ दूर नहीं वस तीस कोटिका जोर लगे।

[८]

हां, दूर नहीं, यह वज्र गिरा ! लाखों ममताएं चूर चले।
सदियों बन्धनमें बंधी हुई, मांकी आखोंके नूर चले।
क्या भारतका पथ भूल गये, या होकर यों मजबूर चले,
भैया, नैया भंवरोंमें है बलवन्त अचानक दूर चले।
तुमपर सब बलि बलि जायेंगे, हे दानव बालक लौट पड़ो,
भावोंके फूल चढ़ावेंगे, हे भारत पालक लौट पड़ो।

] ६]

क्यों चल बसना स्वीकार हुआ, बोलो-बोलो किस ओर चले,
ये तीस करोड़ किसे पाये, क्यो इन सबके शिरमौर चले ?
क्यों आर्य देशके तिलक चले, क्यों कमजोरोंके जोर चले ?
तुम तो सहसा उस ओर चले, यह भारत मा किस ओर चले ?
"दुखियाके जीवन लौट पड़ो, मेरे घन गर्जन लौट पड़ो,
जसुदाके मोहन लौट पड़ो, सित काली मर्दन लौट पड़ो।

(१०)

शुचि प्रेम बीज सब हृदयोंमें; गाली खाते खाते बोया,
सद्भावोंसे उसको सींचा, उसका भारी बोझा ढोया।
हां,-राष्ट्रीय पनेको रक्खा-तूने अपने पनको खोया;
गोपाल कृष्णके जानेपर, तू आशुताप सहसा रोया !
तेरी हुंकारोंका फल था, अगणित वीरोंने प्राण दिया,
राष्ट्रीय शक्तिने तुझसे ही, अमृतसरमें था त्राण लिया।

(११)

तुझको अब कष्ट नहीं देंगे, हाथोंमें झण्डा ले लेंगे,
मण्डालेके क्या, शूलीके कष्टोंको सादर झेलेंगे।
इंगलैण्ड नहीं, नभ मण्डलमें, हम तेरे हैं, हो आवेंगे,
तूने नरसिंह बनाये हैं, अपना तिलकत्व दिखावेंगे।
तू देख, देश स्वाधीन हुआ उसपर हम लाखों जियें मरें,
बस इतना कहना मान तिलक! हम तेरे शिरपर तिलक करें।

[१२]

अपने प्राणोंपर खेल गया, तू जेल गया, संहार हुआ।
तुझपर चिरोलके दोष लगे,-पीछेसे कायर वीर हुआ!
बूढ़ा कैदी लौटा ही था, बस लड़नेको तैयार हुआ,
घोषणा प्रकाशित होते ही, पण्डोंमें हा हा कार हुआ।
हुंकार सुनी, वह न्याय मरा, विजयी सिंहासन डोल उठा,
"इसकी न सुनो तो इज्जत है"-वह नीति विधाता बोल उठा!

(१३)

भारतको कुछ अधिकार मिले? ना, वह अधिकारी योग्य नहीं,
लकड़ी, पानी ढोनेवालोंको राज्य शक्तियां भोग्य नहीं।
सागरकी छाती चीर चली, अधिकार उठाने टूट पड़ा।
उस पार्लमेण्टके करसे सहसा रिफार्म एक् यह छूट पड़ा।
"मेरे जीते पूरा स्वराज्य भारत पावे अरमान यही,"
बस शान यही, अभिमान यही, हम तीस कोटिकी जान यही।

[१४]

दौड़ो, चरणोको जोरोसे पकड़ो, अब कैसे जावोगे !
हम तीस कोटि हैं तिलक, अकेले नहीं छूटने पावोगे !
वलवन्त रहे, मनमोहनके उसको उस ऊखलसे जकड़ो !
वह चलता है, वह भगता है, वह जाता है, पकड़ो पकड़ो ॥
उसको पाना है, तो भारतको वड़ियोंमें स्वच्छन्द करो !
वह कैदी है, उसको हृदयोंके वन्दीगृहमें वन्द करो !

[१५]

स्वार्थी देवोंको दूर हटा, तुम भरतखण्डमें वास करो।
यह असहकारिताका युग है, तुम आओ यहां प्रवास करो।
जो तुमको पाना इष्ट हुआ, तो आया क्यों न यहांपर वह।
श्रीकृष्ण चोर है ! चला गया जीवन सर्वस्व चुराकर वह।
वन्दी होवे वह दया हीन ! तू भारतीय आजाद रहे।
वह स्वर्ग टूटकर गिर जावे, यह आर्यभूमि आवाद रहे।

[१६]

भारत मांके हृदय देशके इकतारेका तार चला,
आर्य महा मन्दिरका जीवित प्रतिमा रूप उदार चला।
महाराष्ट्र पुण्य-प्रदेशके अकुलातोंकी जान चला,
राष्ट्र तपस्विनी भारत भूका कर्मवीर भगवान चला।
गीता-गाथावाले नटवर, अपनोंके गलहार वनो,
[illegible], लौटो, लौटो, आओ, भारतके अवतार वनो।

वह राष्ट्रीय सभाकी वेदी, करती है तेरी मनुहार।
दुखिया मध्यप्रदेश समझकर, इसे न छोड़ो करुणागार।
हृदय देशमे दीख रहे हो, आते नहीं, पधारो तो।
नभ मण्डलसे भूमण्डलमे खिंचते नहीं,—विचारो तो,
पद-पङ्कज धोनेवाले, ये आंसू कबतक बहें कहो,
चर्चित करवा लो यह चन्दन, गीला कबतक रहे कहो?

—एक भारतीय आत्मा।

न लें बहिश्त भी हम होमरूलके बदले

[१]

यह खाके हिन्दसे पैदा हैं जोशके आसार,
हिमालियासे उठे जैसे अब्रे दरिया बार।
लहू रगोमे दिखाता है बर्फकी रफ्तार,
हुई हैं खाकके पर्देमे हड्डियां बेदार।
जमींसे अर्श तलक शोर "होमरूल" का है।
शबाब कौमका है जोर "होमरूल" का है॥

(२)

निगाहे शौक है इस रुख़की तमाशाई,
है जिससे शोले दरख़्शान पै बेखुदी छाई।

हर एक गाम पे करते हुए जवीं साई,
चले हैं वहरे जयारत वफाके सौदाई
वतनके इश्कका वुत वेनकाव निकला है।
नये उफक पे नया आफताव निकला है॥

(३)

यह आरजू है कि महरो वफासे काम रहे,
वतनके वागमें अपना ही इन्तजाम रहे।
गुलोंके फिक्रमें गुलचीं न सुवहो शाम रहे,
न कोई मुर्ग खुशल्हां असीर दाम रहे।
सिरपर शाहका अकवाल हो वहार चमन।
रहे चमनका मुहाफिज यह ताजदार चमन॥

(४)

जो अपने हाल पे यह वेकसीं वरसती है,
यह नायवां हुकूमतकी खुद परस्ती है।
यहांसे दूर जो वरतानियाकी वस्ती है,
वहां सुना है मुहव्वतकी जिन्स सस्ती है।
जो उसपे हाले वतन आशकार हो जाये।
यह देखते रहे वेड़ा यह पार हो जाये॥

(५)

फिदाइयाने हुकूमतने हमको रञ्ज दिये,
जो फर्ज वफा थे अदा वह हमने किये।

निसार आंसे हुए दाव सल्तनतके लिये,
शराव ऐश समझकर लहूके घूंट पिये।
डगे न पाँव मुहब्बतके नोके खञ्जरपर।
लहूकी मुहर है अपनी वफाके महजरपर॥

(६)

जो अपने दिलसे है वरतानियांका दिल राजी,
तो क्या करेगे यह हिन्दोस्तानके काजी।
न काम आयेगी गैरोंकी रखना अन्दाजी,
तुम्हे पुकार रही है सखीकी फैय्याजी।
बचो खुची पै कनायत है क्यों नहीं पीते।
पिलानेवाला पिलाता है क्यों नहीं पीते॥

(७)

रहा है रातकी सोहवतमें क्या मजा बाकी,
निगाहे शौकको है दौरे नौकी मुश्ताकी।
नयी शराव नया दौर औ नया साकी,
मिटे सुरूरमे देरोहरमकी नाचाकी।
यही किसीका हरम हो किसीका दैर रहे।
यह मैकदा रहे आवाद खुमकी खैर रहे।

(८)

शरावे शौक दवा है इस अंजुमनके लिये,
सुरूर इसका है अकसीर रूह तनके लिये।

खिंची है खुल्दमें इस महफिले कुहनके लिये,
फलकसे उतरी है यह शेखो बरहमनके लिये।
रहेगा दौर जमानामें यादगार इसका।
यह 'होमरूल' का सौदा खुमार है इसका॥

[६]

इसीके मस्त कहीं हैं हरम पै छाये हुए,
अजांके नारये दिलकुशसे हज उठाये हुए।
कहीं है नगमये नाकौस दिल लुभाये हुए,
इसी फजामे यह सब राग हैं समाये हुए।
यह हुक्म पीरे मुगांका है नश ये मै में।
यह राग आके मिले "होमरूल" की लै में॥

(११)

रकीब कहते हैं रङ्ग वतन नहीं एकसाँ,
घना है कौस करह खाक हिन्दका दरमाँ।
जिधर निगाह उठे उस तरफ नया है समां,
न एक रङ्ग मईशत न एक रङ्ग जवां।
जो 'होमरूल' पै यह चश्म शौक शैदा हो।
तमाम रङ्ग मिलें एक नूर पैदा हो॥

(१२)

जो दिलसे कौमके निकली है वह दुआ है यही,
था जिसपै नाज मसीहाको वह सदा है यही।

दिलोंको मस्त जो करती है वह हवा है यही,
गरीबे हिन्दके आज़ारकी दवा है यही।
न चैन आयेगा बे "होमरूल" पाये हुए।
फकीर कौमके बैठे हैं लौ लगाये हुए॥

(१३)

यह जोश पाक जमाना दबा नहीं सकता,
रगोंमें खूंकी हरारत मिटा नहीं सकता।
यह आग वह है जो पानी बुझा नहीं सकता,
दिलोंमें आके यह अरमान जा नहीं सकता।
तलब फिजूल है कांटेकी फूलके बदले।
न ले बहिश्त भी हम "होमरूल" के बदले॥

— ब्रजनारायण चकबस्त।

आनन्द-नाद

चढ़ा है अजब स्वदेशी रङ्ग॥ टेक॥
जिसे देख करके परदेशी रह जाते है दङ्ग।
अपनी भाग्य परीक्षाका यह बड़ा निराला ढङ्ग॥
कठिन कार्यके सम्पादनमें बढ़ता नित्य उमङ्ग।
अन्यायोंको मिटा रहे हैं अब दिल रहा न तङ्ग॥

बड़ी बड़ी घटनाएं भी लख हुए न जरा उपङ्ग।
कर्तव्योंके लिये कालसे छिड़ा देख लो जङ्ग॥
प्रेम भावके प्रबल स्रोतमें उठा अबाध तरङ्ग।
नारायणकी कृपा दासताका मिट गया प्रसङ्ग॥

— द्वीपनारायणदेव शर्मा 'नारायणकवि'

खुश रहें शाद रहें जेलमें जानेवाले।

आगये आगये मञ्जिलपर अब आनेवाले।
क्यों भुलाते हैं इन्हें राह भुलानेवाले॥
'आह' यह कहके निकल जाती है दिलसे बाहर।
तू भी आराम न पायेगा सतानेवाले॥
कह रही है तुझे अब सारी खुदाई क्या क्या।
क्या मिला तुझको मेरे दिलके दुखानेवाले॥
हम वह कैदी हैं कि जञ्जीरकी आवाजोंसे।
कैदखानेकी हैं दीवार हिलानेवाले॥
आह मजलूमसे बरपा न कायमत हो कहीं।
सोच ले दिलमें जरा जुल्मके ढानेवाले॥
मोती, टण्डन, व कपिल, श्याम, जवाहिर, बासू।
सख्तियां जेलकी क्या क्या हैं उठानेवाले॥

खाक कर देगी तुझे अहले चमनकी आहें।
ऐ नशेमनमें मेरे आग लगानेवाले ॥
जा किसी औरसे कर उज़् सितम अहदे वफा।
तेरी बातोमें न आयेंगे अब आनेवाले ॥
उफ भी निकले जो जबांसे तो खतावार हैं हम।
कहते जाते हैं यह सर अपना कटानेवाले ॥
है यही आह शरर बार तो सुन लेंगे कभी।
जल गये आप ही औरोंके जलानेवाले ॥
दिलसे यह हजरते 'बिसमिल'के निकलती है दुआ।
खुश रहें शाद रहें जेलमें जानेवाले ॥
— बिसमिल।

किसानोंसे—

(१)

मैं हूं पदवीवाला तुमसे नेक नहीं शरमाऊंगा।
जब लेनेको वोट भीखमें द्वार तुम्हारे आऊंगा ॥
रखना लाज हमारी तुम भी यही जोड़ कर विनती है।
चाटुकार लोगोंमें पहले होती मेरी गिनती है ॥

[२]

नौकरशाहीका सन्देशा भारतमें फैलाया था।
देखा, फिर भोली जनताको कैसा नाच नचाया था ?

तुम्हें चिढ़ाया, उन्हें सताया, साहबको शरमाया था-
इन्द्रासनसे बढ़कर तब यह, मान कहीं ले पाया था !

[३]

कहते हैं—'पदवीको छोड़ो,'-पड़ी कहीं क्या पायी थी ?
बाबा ! इसके पानेमें तो, पगड़ी चरण चढ़ायीथी ॥
चाहे चन्द्र चांदनी छोड़े, उलटी गङ्गा बह जावे।
भारत नङ्गा हो जावे पर, शान हमारी क्यों जावे ॥

[४]

राजकीय परिषद्में बककर, खुश सबको मैं कर डालूं।
अपनी करनीसे फिर उनको, खासा चकमा दे डालू ॥
'जी हुजूर' की भड़ी लगाकर सिरको जब मटकाता हूं।
बड़ी बड़ी अक्लोंके तब मैं छक्के खूब छुड़ाता हूं ॥

[५]

कहूं कहांतक गुणोंमें मैं अपने, जिह्वा ही थक जावेगी।
'जी हुजूर' कहनेमें वह फिर नहीं काम हा ! आवेगी ॥
वे पेंदाके घड़े सरीखा असल राय देनेवाला।
कौंसिलमें क्या नहीं चुनोगे-इतनी लम्बी दुमवाला ॥

(६)

भाई ! अगर भलाई चाहो, सब छोड़ो यह काम करो।
हमको देकर वोट-दान फिर, चाहे तुम आराम करो ॥
नहीं हमे फिर मतलब तुमसे चाहे भूखो मर जाओ।
चाहे लेकर वोट कटारी, नित्य हमे तुम डरवाओ ॥

(७)

नहीं किसीसे डरनेवाला, पदवीका बल रखता हूं।
हूं मैं भाई रायबहादुर; ऊंचे स्वरमे कहता हूं॥
नौकरशाहीके नौकर सब, मेरी ही नित सुनते हैं।
मोटी अक्ल देखकर मेरी, सब्बी मुझको चुनते हैं॥

(८)

पत्रोमे टीकाएं पढ़कर आँसू नही गिनाता हूं।
लोगोंसे उल्टी सुल्टी कह, अपना रोब जमाता हूं॥
कर्मवीर तेरी झनकारोंका डर है—परवाह नहीं।
सिरपर हो सरकारी पञ्जा फिर जगमे कुछ चाह नहीं॥

—'सत्य'।

रहा क्या शेष है।

तनका बल व्यय हुआ दासता करते करते।
अन्न और जल मिला न हमको मरते मरते॥
स्वजन सहायक भी सभी: हुए कालकी भेंट।
अनाचारियोंने किया: जिन्हे हाय! आखेट॥
दलित अति देश है।
नाम मात्र ही मांस रहा है शेष गातमें।
रुधिर हमारा लखो गगनपर नित प्रभातमें॥

रक्त रञ्जिता भूमि वह; जलियांवाला बाग।
हम दीनोंके खूनके; जहां लगे थे दाग॥
अधिक अब क्या कहें?

भारत मांने सभी गोदसे लाल निकाले।
और युद्धमें उन्हें तुम्हारे किया हवाले॥
जो कुछ था सब दे दिया; तुम्हें समुद तत्काल।
तजे तुम्हारे ही लिये; माताओंने लाल॥
सतत निर्मोहि हो।

कहते हैं सब आज करो स्वागत तन धनसे।
आते हैं युवराज "रिनाउन" पर लन्दनसे॥
रहे न अब धन धाम हैं; और न सुखके साज।
तुम्हीं कहो कैसे करूं; उनका स्वागत आज॥
रहा क्या शेष है?

—दुर्गादत्त त्रिपाठी

—

देखें, कब बनायेगी।

बहादुर भारतीयो! क्या तुम्हें धमकी डरायेगी!
संभालो, शुभ घड़ी ऐसी नहीं फिर हाथ आयेगी!
तुम्हारा, देशभक्तो! इस्तहां सरकार करती है।
भरोसा है, किसीको फेल अब करने न पायेगी॥

अहिंसक हम रहें, फिर भी हमें गर कत्ल कर दें वह।
भला है, देशकी मिट्टी उसीके काम आयेगी॥
ये माना ऐशसे घरपर हमेशा तुम रहे अबतक।
मगर क्या ऐशकी ही जिन्दगी जिन्नत दिखायेगी?
मुसीबत जेलखानेकी उठाकर मर भी गर जावें।
कहो, अफसोस क्यों होगा? कजा क्या घर न आयेगी॥
चले आ आओ! जवां मर्दो!! भरो सब कैदखानोंको!!!
करोड़ों जेल यह सरकार, देखें, कब बनायेगी?

—"शरण"।

निर्भीक हृदय।

झोपोंसे निर्मुक्त घमण्डी व्यर्थ नहीं हो।
स्वाभिमानपर शुद्ध जगतमे क्यों न कहीं हो॥
जो कहना है उसे कहे होकर निर्भय है।
सच्चा वक्ता वही एक निर्भीक हृदय है॥ १॥

आंधी आवे विकट गिरे बिजली भी सिरपर।
बरसे अग्नि अपार दिवस हो रात्रि भयङ्कर॥
मित्र बने अति शत्रु दिखावे-राह सभय है।
किन्तु न डिगता रञ्च एक निर्भीक हृदय है॥ २

सतपर हो आरूढ़ बढ़ाता कदम निरन्तर।
देख दुखोंका द्वार हटे पीछे नहिं तिलभर॥

दृढ़ प्रतिज्ञ अतिशूर जगतका जिसे न भय है।
स्वयं स्वतंत्रित वही एक निर्भीक हृदय है ॥ ३ ॥

पक्षपातसे रहित विजयका डङ्का देता।
अन्यायीसे न्याय विवस कर करवा लेता ॥
नियत कार्यमें उसे समय जैसा कुसमय है।
सफल मनोरथ सदा एक निर्भीक हृदय है ॥ ४

क्या कर सकता काल? अटल सिद्धान्त समझता।
है अमर्त्य ये जीव सदा पर्याय बदलता ॥
इससे रत कर्तव्य सदा ही उज्वलमय है।
वही साहसी वीर एक निर्भीक हृदय है ॥ ५

छिन जावे सर्वस्व विपतिमें रहे अकेला।
घर २ मारा फिरे ग्रहणकी हो ज्यों वेला ॥
लङ्घन भी सह सके विचरता अति निर्भय है।
वही प्रेमका पात्र एक निर्भीक हृदय है ॥ ६

चाहे तो सर्वत्र जगतको नाच नचावे।
फूंक मात्रसे वही मनुजके होश उड़ावे ॥
शिलाशैल हो जाय, जगत जिससे गतिमय है।
जगतीतलमें वही एक निर्भीक हृदय है ॥ ७

चाहे तो गिरि फाड़ वहांपर शहर बसावे।
थलको जलनिधि करे नदीको विमुख वहावे ॥
उच्च बनावे नीच नीचको उच्चाशय है।
क्या कर सकता नहीं एक निर्भीक हृदय है ॥ ८

—छोटेलाल जैन।

उपालम्भ

हरि, बहुत हुआ, बस बहुत हुआ।

बहुतेरा अबतक तरसाया, सहते सहते जी पक आया।
अन्धकारमें खूब भुलाया, जले हृदयमें लवण लगाया।
क्या न अभी मन शान्त हुआ? हरि०—

सदियोंसे नित रुला रहा है, दुख वारिधिमे डुबा रहा है।
निराधारकर डुला रहा है, क्यों अपना गुण भुला रहा है?
क्यों करुणा-निधि नाम हुआ? हरि—

भगवन्! कुछ बाकी मत रखना, शान्त हृदयकर लेना अपना।
हमको तो दुख ही है सहना, इसी भांति दुखमे है मरना।
भारतमें नर-जन्म हुआ॥ हरि०--

मिटे सदा तड़पानेवाले, भूलो इसे न हो मतवाले।
दुखिया जिस दिन शीस उठाले, उस दिन संभलोगे न संभाले।
भूलो अपना दमन हुआ॥ हरि० -

—गणेशदत्त शर्मा गौड़ "इन्द्र"

अपील

[१]

कर रहे हम सत्य प्रचार हैं

चह रहे अपने अधिकार हैं ॥

पहनते निज निर्मित वस्त्र हैं।

न करमें गहते हम शस्त्र हैं ॥

[२]

न करते कुछ भी अप-कर्म हैं।

विचरते चरते निज धर्म हैं ॥

हम सदा सब भांति अदोप हैं।

किस लिये करते फिर रोप हैं ॥

[३]

वहु प्रकार कहे कहते थके।

तक गये तकते तकते तके ॥

वदल दी हमने निज नीतिको।

पददियो भयका तव प्रीतिको ॥

[४]

असहयोग किया निज शक्तिसे।

उठ गये तव दूपित पंक्तिसे ॥

वन गये निज देश रंगे हुए।

हृदयसे अति ही उमंगे हुए ॥

[५]

दमन आप यथा करते गये ।

हम अक्षय तथा बनते गये ॥

भय दिखा भयभीत किया चहे ।

पर अभीत स्वतन्त्र सदा रहे ॥

[६]

सब प्रकार निजास्त्र चला लिये ।

स्वबल पूर्ण भले दिखला लिये ॥

पर अहो कुछ भी न हुआ किया ।

मनुजतापर ध्यान नहीं दिया ॥

[७]

सुधरिये अब भी हठ छोड़के ।

कपट कुत्सितसे मुख मोड़के ॥

उचित न्याय करो अबसे भला ।

समय उत्तम है तुमको मिला ॥

—सीताराम "भ्रमर"

तिरस्कार

(१)

अरे अदय भाईचारेका, तुममें कुछ भी नाम नहीं ।

सत्य बोलना कपट न करना, दुष्ट तुम्हारा काम नहीं ॥

निबल जनोंको तुमसे बनचर, कभी मिला आराम नहीं।
उप उत्पीड़नका क्या तुमको, कभी मिला परिणाम नहीं॥
दानो बिना मरो चाहे तुम, चाहे धन भरपूर रहो।
हमसे तुमसे क्या नाता है, दूर रहो बस दूर रहो॥

(२)

परका रक्त चूसकर पर घर, चैन उड़ाना आता है।
सरल जनोंको दम दे तुमको खूब लड़ाना आता है॥
कृत्रिम सभ्य! भव्य बंगलोंमें तुमको रहना भाता है।
किन्तु दीन दल खडहरमें भी स्वस्थ न रहने पाता है॥
चाहे सज्जन बने रहो तुम, चाहे बनकर क्रूर रहो।
हमसे तुमसे क्या नाता है, दूर रहो बस दूर रहो॥

(३)

चरणदास भी होकर मनमें तुम चाहे सरताज बनो।
दानवपति भी होकर मनसे चाहे मानव राज बनो॥
बर्बर हो तुम नरवर जगमें, अरे निलज मत आज बनो।
मत बे काज दाध करनेको बगले होकर बाज बनो॥
चाहे हो मदहीन रहो तुम चाहे भरे गरूर रहो।
हमसे तुमसे क्या नाता है, दूर रहो बस दूर रहो॥

[४]

फाका करके इधर उधर हम धूल फाकते फिरते हैं।
धन, बल, धर्म, कर्मसे नीचे, नीच! सदा हम गिरते हैं॥

बलसे या छलसे फिर भी तुम हमें मिलाये रहते हो।
बाधक होकर बन्धु हमे क्यों कैसे किस मुख कहते हो॥
क्यो हम दीन दुखी हो क्यो तुम विविध मदोंसे चूर रहो।
हमसे तुमसे क्या नाता है, दूर रहो बस दूर रहो॥

(५)

उत्पीड़क तुम वीर बने हो बने रहो, हम दीन सही।
तुम निन्दाब्धिनक्र बन बैठे हम बन बैठे मीन सही॥
तारे रविसे, मृगहरिकेसे क्या मिल जुलकर रहते हैं।
उन अधमोंसे मिलें कभी क्यों हमें अधम जो कहते हैं॥
नारुनके फल होकरके भी चाहे बने अंगूर रहो।
हमसे तुमसे क्या नाता है, दूर रहो बस दूर रहो॥

(६)

चाहे असुरराज सुरपतिके सिंहासनपर बैठ रहे।
पराधीन हो चाहे सुरगण विविध भांतिके दुःख सहें॥
किन्तु सुरोंसे क्या असुरोंका काम कभी हो सकता है।
भूपर पड़ा कनक क्या अपनी कान्ति कभी खो सकता है॥
आंख निहत्थोंको दिखलाकर बरबस बनते शूर रहो।
हमसे तुमसे क्या नाता है, दूर रहो बस दूर रहो॥

(७)

आत्माजनप तुम्हारी बातें सुनते सुनते ऊब गये।
डूब गये तुम अन्धतममें अथवा जलधिमें डूब गये॥

आत्मज्ञान हुआ अब हमको कभी न दममें आवेंगे।
तुम्हें न भावेंगे तो क्या पर निज अभीष्टको पावेंगे॥
गृद्ध बनो मरघटके चाहे, वनके बने मयूर रहो।
हमसे तुमसे क्या नाता है, दूर रहो बस दूर रहो॥

(८)

चाहे हमें गालियां दो तुम चाहे मीठे बोलो बोल।
चित्त तुम्हारा स्वस्थ रहे या व्यथा सहित हो डावांडोल॥
बने रहो अनुकूल हमारे या भीखो होकर प्रतिकूल।
यदि आंखोंमें धूल पड़ी है तो समझो निज उरका शूल॥
बन करके मजदूर रहो तुम चाहे बने हजूर रहो।
हमसे तुमसे क्या नाता है, दूर रहो बस दूर रहो॥

—रामचरित उपाध्याय।

सत्य स्वराज

हमें है आत्मिक सत्य स्वराज॥ टेक॥
खाने पीने और पहननेका है सुन्दर साज।
देश प्रेम स्वाधीन सुजनता .औसाहित्य समाज॥
शान्ति एकता और प्रेमके शिरपर शोभित ताज।
मातृभूमिकी सेवाके हित करते सारे काज॥

—चन्द्रचूड़ प्रसाद (मानस)

वीर प्रतिज्ञा

(१)

भारतकी हम सन्तान हैं कुछ काम करेंगे।
संसारके इतिहासमे हम नाम करेंगे॥

साहस तथा उत्साहका हम भाव भरेंगे।
निज देशकी स्वाधीनताके हेतु मरेंगे॥

(२)

केवल परेश पूर्णसे हम नित्य डरेंगे।
उद्देशसे कर्तव्यसे हर्गिज न टरेंगे॥

सत्याग्रही सेनाके सुभग वीर बनेंगे।
दुर्दैव दमन शत्रुको हम तुच्छ गनेंगे॥

—दामोदरझा (मारुत)

कुशासनको दूर कर दे

युधिष्ठिरने जा शान्तनू सुतसे पूछा,
कि देशान्नतिके हैं साधन प्रभो क्या ?
बड़े प्रेमसे भीष्मजीने बताया,
रहे रास्तीका निशां सब दिखाया॥

कहा पुत्र! कहता हूं सच्ची कहानी।
यही मेरा अनुभव, यही नीति बानी॥

जिसे देशके हितकी उत्कट हो इच्छा,
प्रचारित करे वह स्वजातीय शिक्षा।
भरे भाव बच्चोंमें देशोन्नतीका,
यही मुल्ककी बेहतरीका जरीआ॥
जिहालतकी काली घटा दूर कर दे।
सुशिक्षासे बस नूर ही नूर कर दे॥
मुकद्दरसे शासन अगर गैरका हो,
पराजित हुआ देश दुख भोगता हो।
सितम ही सितम उनका जो मुद्आ हो,
अगर खून इन्साफका हो रहा हो।
सुनो पुत्र फिर किस तरह पिण्ड छूटे।
पराधीनताकी यह जंजीर टूटे॥
करे दूर आपसकी सारी अदावत,
मिटा दे सभी बाहिमी रंजो कुलफत॥
दिलोंपर करे नक्श सबके मुहब्बत,
बढ़े शाने-कौमी बढ़े अपनी अजमत॥
अलम एकताका अगर वह उठा ले।
जमीं क्या है फिर आस्मांतक हिला दे॥
प्रजाके हितोंका सदा ध्यान धरना,
दुराचार सारे बहिष्कार करना।
रहे रास्तीपर हमेशा गुजरना,
अहम्मन्यता भावसे दिलमें डरना॥

वही भूप दुनियांमें अवतार होते।
सभी उनके चरणोंको श्रद्धासे धोते॥
जो दुर्भाग्यसे भूप न्यायी मिले ना,
उचित स्वत्वसे गुनचये दिल खिले ना।
प्रजाके अगर कष्टसे वह डिगेना,
और अन्याययुत दुर्दशा भी मिटे ना॥
तो भूपालको तख्तसे दूर कर दे।
कुशासनके आइनेको चूर कर दे॥
नहीं इसकी परवा कि शक्ती बड़ी है,
नजर रास्तीसे इधर भी लड़ी है।
जो मजबूत हिम्मत बनी हर घड़ी है,
तो फिर सामने कामयाबी खड़ी है॥
जबरदस्त जालिम सदा मुंहकी खाते।
पुराण और इतिहास हैं यह बताते॥
न सहयोग दे उनके कामोंमें जाकर,
न पालन करे उनके फरमाने अवतर।
नहीं इसकी परवा चले सर पै खंजर,
प्रजापर यह दुष्कर्म होता है अक्सर॥
असहयोगपर पूर्ण रक्खे भरोसा।
यहां राहे मकसूद पानेका तोशा॥

—"मेहरोत्रा"

युवकोंके प्रति

(१)

जिसने ही पढ़ा होगा जरा ध्यानसे इतिहास।
उसको ही मिला होगा इसी बातका आभास।
युवकों ही पै निर्भर है किसी देशकी सब आस।
बालक ही मिटा सकते हैं निज देशकी सब त्रास।
चाहें तो किसी देशको बस स्वर्ग बना दें।
निज धर्मसे हट जांय तो मिट्टीमें मिला दें।

(२)

निज देशकी उन्नतिका है सब भार तुम्हींपर।
निज देशकी रक्षाका है सब दार तुम्हींपर।
इनकार तुम्हींपर है तो इकरार तुम्हींपर।
तुम ही पै रिआया भी है सरकार तुम्हींपर।
बालक जो संभल जायं तो सब देश सुधर जाय।
हरएकका दिल जोशके आनन्दसे भर जाय।

(३)

बालक ही तो हैं देशके सम्मानके आधार।
बालक ही तो हैं देशके धन-धान्यके भण्डार।
बालक ही तो हैं देशकी सब शक्तिके आगार।
[illegible] ही तो हैं देशकी लज्जाके भी रखवार।

सच मानो अगर देशके सब बाल संभल जायं।
इक आनमें भारतके सकल कष्ट मसल जायं।

[४]

युवकोंके बिगड़नेसे बिगड़ जाता है सब देश।
युवकोंके बदलनेसे बदल जाता है सब भेश।
युवकोंके बुरे होनेसे कुछ जाती नहीं पेश।
युवकोंके भले होनेसे मिट जाता है सब क्लेश।
युवकोंहीके हाथों तो है सब आगेकी आशा।
युवकोंहीके दम चलती है सद्धर्मकी श्वाँसा।

(५)

जिस देशके युवकोंमें हो उत्साहकी लाली।
करते न हों निज चित्तको उत्साहसे खाली।
खेलोंमें भी तजते न हों निज ओरकी पाली।
पड़ जाय कठिनता तो समझते हों बहाली।
बस जानलो उस देशमें आनन्दका है वास।
आपत्ति फटकने नहीं पावेगी कभी पास।

—लाला भगवानदीन 'दीन'

हृदयके उद्गार

करेंगी भारतका उद्धार।
सीता सावित्री अनुसूया गार्गी चरित उदार।
गांधारी विदुला कौशल्या नारी गुरु विचार।

वीर धीर सुतके जननेका लेगी व्रत स्वीकार।
शीघ्र स्वनन्त्र करेंगी भाषा भूषण वेष सुधार॥
मातृभूमि चरणोदक लेंगी होकर मुग्ध अपार।
सच्ची गृहिणी पद पाकरके देंगी दोष निवार॥
निज पुरुषोंको सत्कर्मोंमें देंगी वे सहकार।
पतिव्रता नययुतो अड़ी हैं हरनेको भू-भार॥
—श्रीसौन्दर्य नन्दिनी देवी।

तपोबल।

मर्द वे ही हैं जो दुनियां को हिला देते हैं,
कौम मुर्दाको तपोवलसे जिला देते हैं।
रञ्जोगम जुल्मसे मुरझायी हुई दिलकी कली,
ठण्ढी कुर्बानीके पानीसे खिला देते हैं।
वेकसी गुर्वतो गैरतमें जो मिलते वेहोश,
जिन्दगी वख्श, उन्हें होशमें ला देते हैं।
फर्क डाला है जो गैरोंने भाई भाईमें,
बिछुड़े भाईको मुहव्वतसे मिला देते हैं।
भूखसे मरते हुए कौमी दिमागी मजलूमको·
गिजा तोहफये आजादी खिला देते हैं।

कौम नामर्दको 'बेपानी' तड़पकर मरते;

मरतेदम जिन्दगीकी 'आब' पिला देते हैं।

कौमी खिद्मातमें सहते हैं मुसीबत लाखों,

रस्सी बट बटके नरम हाथ छिला देते हैं।

कैद तनहाई, मशक्कतमें, रहके जेलोंमे,

बेड़ियां पहनते हैं होंठ सिला देते हैं।

'हकतलफ खल्कको' मजबूरीतहे-मकसद कर,

हकपरस्तोंका जो कुछ हक है, दिला देते हैं।

— श्री ब्रह्मानन्द।

असहयोगीका हृदयोद्गार

लाख वारों पर जन्म-सिद्ध अधिकार न अब हम छोड़ेंगे ॥

भारतका अपमान किया है,

अच्छा, यह अहसान किया है,

तुमको अब पहिचान लिया है,

हमने अब यह ठान लिया है.

तुम्हें चुनौती देनेसे हम हाथ न कभी सिकोड़ेंगे ॥ १ ॥

हिंसासे हम काम न लेंगे,

तुमको एक छदाम न देंगे,

हटनेका अब नाम न लेंगे,
पल भर भी विश्राम न लेंगे,
असहयोग कर, कुटिलनीतिका दुर्गम गढ़ भी तोड़ेंगे ॥२॥
भारतकी अब नब्ज परखिये,
इसी तरह गुलछर्रे चखिये,
नहीं, नहीं, अब और न झखिये,
दिलमें कुछ अरमान न रखिये,
दमननीतिके वार करो, हम कदम न हरगिज मोड़ेंगे ॥३॥
साठ कोटि आंखोंका तारा,
राष्ट्रसभामें जब हुंकारा,
कायरताने किया किनारा,
पास हुआ प्रस्ताव करारा,
रामराज्य हित, रावणके सम, यमको पकड़ झंझोड़ेंगे ॥४॥
—चौपट ।

कर्म करो आगे बढ़ो

(१)

आर्योंकी सन्तान स्वदेशोन्नति चित धारो ।
मर्यादाके साथ कभी साहस मत हारो ॥
भाग्योदयके काल पैर पीछे मत धरिये ।
देश-प्रेम एकता-भाव सञ्चालन करिये ॥

होगी विजय अवश्य ही, उद्यत हो मगमें बढ़ो ।
ईश्वरपर विश्वास धर, कर्म करो आगे बढ़ो ॥

(२)

निज जातीय महत्व नीतिको तुम अपनाओ ।
ज्ञान और सम्मान कीर्ति जगमें फैलाओ ॥
सारा विश्व कुटुम्ब सभीको भाई जानो ।
शान्ति सहित स्वातंत्र्य लाभको उत्तम मानो ॥
शुद्धि अहिंसा वीरता पाठ सुजनताका पढ़ो ।
पूर्ति करो उद्देश्यकी, कर्म करो आगे बढ़ो ॥

—रामलखनसिंह 'जीवन'

इधर और उधर

[१]

इधर अहिंसाका अवलम्बन, हिंसाका हथियार उधर ।
इधर आत्मबलका आराधन, पशु-बलका आधार उधर ॥
असहयोगका अस्त्र इधर है, दमन-नीतिका वार उधर ।
पूर्णशान्तिकी इधर साधना, शान्ति भङ्ग तैयार उधर ॥

[२]

आज़ादीका मोद इधर है, पारतंत्र्य उपहार उधर ।
है स्वराज्यकी इधर कामना, आशाहीन सुधार उधर ॥

इधर आत्मगौरवकी शिक्षा, भिक्षाका सत्कार उधर।
धर्म मार्गके इधर पथिक हैं, दोज़खकी रफ्तार उधर॥

[३]

इधर सत्यपर डटे हुए हैं, कपट नीतिपर प्यार उधर।
इधर आपदाओंका स्वागत, विघ्नोंकी भरमार उधर॥
इधर कष्ट सहनेके इच्छुक, होते वज्र प्रहार उधर।
तुले हुए हैं इधर नीतिपर, खासा स्वेच्छाचार उधर॥

(४)

इधर फसादोंसे बचते हैं, रचते हैं तकरार उधर।
इधर निरंकुशतासे नफरत, इससे पूर्ण दुलार उधर॥
इधर कृष्ण मन्दिरके दर्शक, खोले कारागार उधर।
करते दूर इधर पापोंको, भरे पाप—भण्डार उधर॥

[५]

इधर मदनसे वीर समरके, डायरसे सरदार उधर।
इधर बदीपर भी नेकी है, नेकीपर अपकार उधर॥
इधर बाग जलियां जीवनप्रद, डायरशाही ख्वार उधर।
इधर निहत्थोंकी आहें हैं, अत्याचारी क्षार उधर॥

(६)

इधर खिताबोंकी ना खिदमत, खाली हैं दरबार उधर।
इधर देशद्रोहीको रुखसत, है उसका आभार उधर॥
हिन्दू मुसलिम ऐक्य इधर है, भेद-नीति-निधि पार उधर।
गान्धीका गुञ्जार इधर है, डायरका सत्कार उधर॥

(७)

इधर हमारा उठना लखकर, हिलते हैं मीनार उधर।
इधर शुभाशाकी शीतलता, बेचैनीकी झार उधर॥
इधर किसीसे द्वेष नहीं है, ईर्ष्याकी बौछार उधर।
इधर धर्मका पूर्ण ध्यान है, वेधरमी व्यापार उधर॥

(८)

इधर स्वदेशीका स्वागत है, व्यापारी बेजार उधर।
इधर चक्र चरखेका चलता, मेशीनें बेकार उधर॥
इधर विदेशी बहिष्कार है, परदेशी बीमार उधर।
इधर विजयके चिह्न प्रदर्शित; गिरनेके आसार उधर॥

—शोभाराम धेनुसेवक।

सच्चे देशभक्त

[१]

चाहे तारे चन्द्र दिवाकर भू पर आयें।
पृथ्वीपरकी वस्तु गगनमें जा मिल जायें॥
अथवा विषधर नाग अमृतधर ही हो जावे।
और शृगाल लघु सिंहको मार भगावे॥
पर देशभक्त सच्चे कभी, प्रणको छोड़ेंगे नहीं।
निज प्राणोंसे रहते कभी, वचन-बद्ध रहते सही।

[२]

चाहे चन्दन वृक्ष गन्ध अपना तज देवे।
पानी मृदुल स्वभावहीन चाहे ही होवे॥
औ रुद्र नदियोंमे जाकरके गिर जावे।
देख सर्पको गरुड़ सशङ्कित हो डर जावे॥
पर देशभक्त सच्चे सदा, कहते हैं करते वही।
वे निज निश्चित उद्देश्यसे, तिलभर भी हटते नहीं॥

[३]

चाहे रतिके विना गर्भ सम्भव हो जावे।
रुद्र विना यह सृष्टि स्वयं ही लय हो जावे॥
अथवा काया विना जीव प्रत्यक्ष दिखावे।
जिह्वा विना मनुष्य वेदवाणी कहजावे॥
पर देशभक्त सच्चे सदा, निश्चयपर मिट जायगे।
वह कभी नहीं कर्तव्यको, अपनी पीठ दिखायंगे॥

[४]

हंस मानसर छोड गड़हियोंका जल पीवे।
जलसे होकर दूर मीन चाहे तो जीवे॥
अथवा पर्वत खोद मूस मिट्टी कर डाले॥
बिल्ली लेकरके शुकको अपने कर पाले॥
पर देशभक्त सच्चे कभी, टेक टाल सकते नहीं।
यदि सारी बातें विश्वकी, बदले भ्रमवश हो कहीं॥

[५]

चाहे मधुलिह कमल वनोंमे कभी न जावे ।
और मतंगज पोछ थामकर शशक नचावे ॥
मृगतृष्णासे खूब पेटभर पानी पावे ।
खारा अम्बुधिनीर मीठ मधुसा हो जावे ॥
पर देशभक्त सच्चे कभी, सिद्धान्तोको तोड़ कर ।
क्या जीवेंगे इस लोकमें, मर्यादाको छोड़कर ॥

—जगन्नारायणदेव शर्मा 'कविपुष्कर'

खोटा और खरा

(१)

होकरके निर्भीक घोषणा कर देता हूं ।
मनमें जो है उसे सामने धर देता हूं ॥
पालन करनेका उसके प्रण कर लेता हूं ।
सबसे प्रथम अहिंसाका व्रत धर लेता हूं ॥
बस यही प्रतिज्ञा आजसे, निर्भय बन सेवा करूं ।
यदि काम पड़े तो शान्त हो, सिर अपना आगे धरूं ॥

(२)

पीछे दूंगा पैर नहीं अब कभी डरूंगा ।
जो करनेको कहा उसे ही सत्य करूंगा ॥

मानाकी अभिलाष पूर्ण मैं तूर्ण करूंगा ।
अन्यायीका दर्प शान्तिसे चूर्ण करूंगा ॥
हम भारतीय हैं, वीर हैं, रक्त वीरका है भरा ।
दे कष्ट कसौटी जान ले, सोना खोटा औ खरा ॥

—सीताराम "भ्रमर"

इफ़्लासकी घटा

गुम हुई नज़रोंसे पुर लुत्फ़ फ़ज़ायें, क्यों कर ?
हाय पुर ख़ौफ़ ये आयी हैं सदायें क्यो कर ?
एकपर एक यहां आयीं बलायें क्यो कर ?
हिन्दमें हाय चलीं उल्टी हवायें क्यो कर ?
घिरके इफ़लासकी आयी हैं घटायें क्यों कर ?
रौशनी इल्मकी हम अगलीसी पायें क्यो कर ?
चांदसी अशर्फ़ी दुर नज्मसे लायें क्यो कर ?
ऐसी हालत है तो हाय ! मुंह दिखायें क्यों कर ?
हिन्दमे हाय ! चलीं उल्टी हवायें क्यों कर ?
घिरके इफ़लासकी आयी हैं घटायें क्यो कर ?
माल तो हम दें मज़ा लूटें सनाअतवाले,
हम बने बैठे रहें सन्नोकनाअतवाले ।
कोरे मज़दूर रहे या कि जरारतवाले,
खींचकर गल्ला जो ले जॉय वलायतवाले ॥

फिर कहो भूखसे हम जाँन गवायें क्यों कर ?
आये दिन एक नया हश्र यहां बरपा है;
कभी सैलाबसे पाला तो कभी पाला है।
कभी कपड़ोंका नमकहीका कभी रोना है,
कभी ताऊन कभी कहत कभी हैज़ा है।
नहीं मालूम टलेंगी ये बलायें क्यों कर ?
जो गुज़रती है यहां सिर्फ हमको है मालूम,
होगी या तो वो फ़क़त अहेल-अदमको मालूम।
किस क़द्र ग़म है ये ख़ुद है नहीं ग़मको मालूम,
शिद्दते-दर्द है, शमशेरे-अलमको मालूम।
जो कलेजे पै हैं चरके वो दिखायें क्यों कर ?
गोशे गुलने न सुनी नालये-बुलबुलकी सदा,
हंस लाते नहीं ख़ातिरमें हैं कोयलकी अदा;
बगलोंको श्यामाके लहजेका नहीं कुछ भी पता,
क्या बांदल जाने जो है गूंजमें भौंरोंकी मज़ा।
गोरे तसलीम करें कालोंकी रायें क्यों कर ?
झिझके, सहमे, डरे, दबकेसे हैं रहते हरदम,
सरकशी हमने कभी जानी नहीं सरकी क़सम।
है "त्रिशूल" आप ही डरते न चुभे ख़ारे-अलम,
हम "फलक" फूंकके रखते हैं ज़मींपर भी क़दम।
आसमां सरपै उठायें तो उठायें क्यों कर ?

'त्रिशूल'।

मानाकी अभिलाष पूर्ण मैं तूर्ण करूंगा ।
अन्यायीका दर्प शान्तिसे चूर्ण करूंगा ॥
हम भारतीय है, वीर हैं, रक्त वीरका है भरा ।
दे कष्ट कसौटी जान ले, सोना खोटा औ खरा ॥

—सीताराम "भ्रमर"

इफ़लासकी घटा

गुम हुई नज़रोंसे पुर लुत्फ़ फ़ज़ाये, क्यों कर ?
हाय पुर ख़ौफ़ ये आयी हैं सदायें क्यो कर ?
एकपर एक यहां आयीं व्लायें क्यो कर ?
हिन्दमें हाय चलीं उल्टी हवायें क्यो कर ?
के इफ़लासकी आयी हैं घटायें क्यों कर ?
रौशनी इल्मकी हम अगलीसी पायें क्यो कर ?
चांदसी अश्रफ़ी दुर नज्मसे लायें क्यो कर ?
ऐसी हालत है तो हाय ! मुंह दिखायें क्यों कर ?
हिन्दमें हाय ! चलीं उल्टी हवायें क्यों कर ?
के इफ़लासकी आयी हैं घटायें क्यो कर ?
माल तो हम दें मज़ा लूटें सनाअतवाले,
हम बने बैठे रहें सन्नोकनोअतवाले ।
कोरे मज़दूर रहें या कि जरारतवाले,
खीचकर गल्ला जो ले जॉय वलोयतवाले ॥

फिर कहो भूखसे हम जाँन गवायें क्यों कर?
आये दिन एक नया हश्र यहां वरपा है;
कभी सैलावसे पाला तो कभी पाला है।
कभी कपड़ोंका नमकहीका कभी रोना है,
कभी ताऊन कभी कहत कभी हैज़ा है।
नहीं मालूम टलेंगी ये वलायें क्यों कर?
जो गुज़रती है यहां सिर्फ़ हमको है मालूम,
होगी या तो वो फ़कत अहेल-अदमको मालूम।
किस क़द्र ग़म है ये ख़ुद है नहीं ग़मको मालूम,
शिद्दते-दर्द है, शमशेरे-अलमको मालूम।
जो कलेजे पै हैं चरके वो दिखायें क्यों कर?
गोशे गुलने न सुनी नालये-बुलबुलकी सदा,
हंस लाते नहीं ख़ातिरमें हैं कोयलकी अदा;
वगलोंको श्यामाके लहजेका नहीं कुछ भी पता,
क्या कंवल जाने जो है गूंजमें भौंरोंकी मज़ा।
गोरे तसलीम करें कालोंकी रायें क्यों कर?
झिझके, सहमे, डरे, दबकेसे हैं रहते हरदम,
सरकशी हमने कभी जानी नहीं सरकी क़सम।
हैं "त्रिशूल" आप ही डरते न चुभे ख़ारे-अलम,
हम "फलक" फूंकके रखते हैं ज़मींपर भी क़दम।
आसमां सरपै उठायें तो उठायें क्यों कर?

'त्रिशूल'।

जियो या कि मर रहो

तुम मानवीय स्वत्व सभी प्राप्त कर रहो,
इसमें कोई दबाये तो तुम और उभर रहो।
ायें बलायें जितनी पै सीनासिपर रहो,
हो जाय फांसी सत्य पे तत्पर मगर रहो॥
चुड़ियां पहन, निकालके घूंघट न टर रहो।
मर्दानगीके साथ जियो याकि मर रहो॥
ा मुंहसे कहो उसपे ही बांधे कमर रहो,
मौके पै खबरदार! न हर्गिज कतर रहो॥
ो मर्द तो मैदानमें आकर उतर रहो,
बे-डर रहो, बे-खौफ रहो, बे-खतर रहो!!
चुड़ियां पहन, निकालके घूंघट न टर रहो।
मर्दानगीके साथ जियो या कि मर रहो॥
म हो बशर बशरके न जेरो जबर रहो,
हमसर व हमरिकाब रहो, हमअसर रहो।
नर फिरके भीक मांगते मत दर-बदर रहो।
निज शक्तिके साहाय्यसे सब प्राप्त कर रहो॥
चुड़ियां पहन, निकालके घूंघट न टर रहो।
मर्दानगीके साथ जियो या कि मर रहो॥
ज मातृ-भूमिके लिये तुम चश्मेतर रहो,
उसके लिये हथेलि पे रक्खे ही सर रहो।

उसके ही ध्यानमें सदा शामोसेहर रहो,
कुछ इस्तिहानपर न इधर और उधर रहो ॥
चुड़ियां पहन, निकालके घूंघट न टर रहो।
मर्दानगीके साथ जियो या कि मर रहो ॥
बेकसकी तरह तुम न फकत पेट पर रहो,
शेरानवार जीते रहो शेरे नर रहो।
तुम आर्य्य हो कदापि 'बहादुर' न डर रहो,
कोई तुम्हे डराये मगर तुम निडर रहो ॥
चुड़ियां पहन, निकालके घूंघट न टर रहो।
मर्दानगीके साथ जियो या कि मर रहो ॥
—महिपाल बहादुरसिंह।

प्रभातोदय

जगो भारत, सुनो बातें, पड़े हो व्यर्थ क्यों बेग़म।
जपो इस मन्त्रको मनमें, 'हमारे तुम तुम्हारे हम'।
मही निर्गन्ध हो, नभभी कभी निःशब्द हो जाये,
तदपि हम तुम रहें हंसते, मिलाये हाथको हरदम।
पढ़ो इतिहास यदि अपने, खुलें तो आपकी आंखें,
तुरत यह ज्ञान सच्चा हो, किसीसे भी न हम थे कम।
कभी निःसत्व या दुर्बल न समझो आप अपनेको,
अविद्या-ग्रस्त होनेसे, वृथा कुछ हो गया है भ्रम।
करो उद्योग निर्भय हो, निराशा कौन चिड़िया है,
हम उनके वंशधारी हैं, कि जिनसे काँपता था यम।

जियो या कि मर रहो

तुम मानवीय स्वत्व सभी प्राप्त कर रहो,
इसमें कोई दबाये तो तुम और उभर रहो।
आयें वलायें जितनी पै सीनासिपर रहो,
हो जाय फांसी सत्य पे तत्पर मगर रहो ॥
चुड़ियां पहन, निकालके घूंघट न टर रहो।
मर्दानगीके साथ जियो याकि मर रहो ॥
जो मुंहसे कहो उसपे ही बांधे कमर रहो,
मौके पै खबरदार ! न हर्गिज कतर रहो ॥
हो मर्द तो मैदानमें आकर उतर रहो,
वे-डर रहो, वे-खौफ रहो, वे-खतर रहो !!
चुड़ियां पहन, निकालके घूंघट न टर रहो।
मर्दानगीके साथ जियो या कि मर रहो ॥
तुम हो वशर वशरके न जेरो जवर रहो,
हमसर व हमरिकाव रहो, हमअसर रहो।
फिर फिरके भीक मांगते मत दर-वदर रहो।
निज शक्तिके साहाय्यसे सब प्राप्त कर रहो ॥
चुड़ियां पहन, निकालके घूंघट न टर रहो।
मर्दानगीके साथ जियो या कि मर रहो ॥
निज मातृ-भूमिके लिये तुम चश्मेतर रहो,
उसके लिये हथेलि पे रक्खे ही सर रहो।

उस्के ही ध्यानमे सदा शामोसेहर रहो,
कुछ इम्तिहानपर न इधर और उधर रहो ॥
चुड़ियां पहन, निकालके घूंघट न टर रहो ।
मर्दानगीके साथ जियो या कि मर रहो ॥
वेकसकी तरह तुम न फकत पेट पर रहो,
शेरानवार जीते रहो शेरे नर रहो ।
तुम आर्य्य हो कदापि 'बहादुर' न डर रहो,
कोई तुम्हे डराये मगर तुम निडर रहो ॥
चुड़ियां पहन, निकालके घूंघट न टर रहो ।
मर्दानगीके साथ जियो या कि मर रहो ॥
—महिपाल बहादुरसिंह ।

प्रभातोदय

जगो भारत, सुनो बातें, पड़े हो व्यर्थ क्यों बेग़म ।
जपो इस मन्त्रको मनमें, 'हमारे तुम तुम्हारे हम' ।
मही निर्गन्ध हो, नभभी कभी निःशब्द हो जाये,
तदपि हम तुम रहें हंसते, मिलाये हाथको हरदम ।
पढ़ो इतिहास यदि अपने, खुलें तो आपकी आंखें,
तुरत यह ज्ञान सच्चा हो, किसीसे भी न हम थे कम ।
कभी निःसत्व या दुर्बल न समझो आप अपनेको,
अविद्या-ग्रस्त होनेसे, वृथा कुछ हो गया है भ्रम ।
करो उद्योग निर्भय हो, निराशा कौन चिड़िया है,
हम उनके वंशधारी है, कि जिनसे काँपता था यम ।

करोड़ों मिट गये तारे, हवा चलती प्रभाती है,

न सोनेका समय यह है, जगतसे हट चला है तम।

—रामचरित उपाध्याय।

शान्तिपाठ

आ गया कठिन भयङ्कर काल, कालसा जो है अति विकराल!

ग्रास नित कितने करता है! पेट तब भी नहीं भरता है!

पाशविक बलका जोरो शोर, धर्म-धरतीपर छाया है।

सत्य खाकर चोटोंपर चोट, पड़ा अति व्यथित लखाता है!

ज़बांपर तालोंकी भरमार! क्रियापर तोपोंकी धमकार!!

कहें तो मारे जाते हैं! नहीं तो हारे जाते है!!

हांकते सब अपनी अपनी, सजाते अपनी अपना साज।

खेद! ऊंचे हलकेमें भी, क्षुद्र भावोंका जुटा समाज!

आत्मबलकी दुःखद घटती, मान गौरवकी विस्मृति है।

बचनमें कार्यमें न एका, इसीसे सारी दुर्गति है!!

महात्माजीके बस पद चिन्ह, बताते सीधी सच्ची राह।

बढ़ाते चलो कदम आगे, न रक्खो विघ्नोंकी परवाह!!

गिरें दल-बादल चाहे टूट, तड़ातड़ कड़्ण गिरें अनेक!

न होना धैर्यच्युत हे वीर, न तजना सुध-बुध, विमल विवेक!!

सहो सब योगी बन करके, प्रेम बदलेमें बरसाओ!

अनोखी आर्य धरापर यार, शान्ति-सुख अमृत बरसाओ!!

—हरिभाऊ उपाध्याय।

स्वत्वोपदेश।

(१)

मित्रो ! ईश्वर-दत्त-स्वत्वको तुम पहिचानो,
तन, मन, धन, जन, मान, प्राणसे पृथक न मानो।
जो 'स्व' शब्द युत जन्म-स्वत्व वह स्वत्व न छोड़ो,
पर-पदार्थके भोग-कार्यसे अब मुख मोड़ो।
यदि रखना है अस्तित्व तो, देर न करना चाहिये।
हे प्यारे, सबको स्वत्व-हित जीना-मरना चाहिये॥

(२)

मित्र ! स्वधर्माधार सार ये रूप नामका,
धर्म तजेपर रूप-नाम फिर कौन कामका।
अग्नि, धर्म-युत रहे तभीतक गौरव पावे,
धर्म्म भ्रष्ट हो रूप नष्ट कर भस्म कहावे।
यों रङ्ग-रूप शुभ, नाम निज चाहो तो सत्कर्मको
नित करो कभी त्यागो नहीं, प्रिय मनुष्यता-धर्मको॥

(३)

हो निर्भीक, स्वजाति करो उन्नत तन मनसे,
जनसे, धनसे, अन्य नियम-सेवन, साधनसे।
है समान गुण, कर्म, जातिसे कौन तुम्हारे,
बनो जाति आदर्श कर्म्म-गुण प्रेम पसारे।

प्रिय चार पदार्थ प्रदायिनी-जाति-नङ्ग प्रख्यातिको।
मत हीन समझ भूलो, वढ़ो, लेकर सङ्ग स्वजातिको ॥

[४]

नित स्वदेश-साङ्गीत-गौरवातीत सुनाओ,
वर्तमान उद्धार-भाव उरमें उपजाओ।
भावी मानो-भावना रख कर्तव्य दिखाओ,
बहती धारा पद पखार, अवसर न गंवाओ।
तुम मनसा, वाचा, कर्म्मणा, प्रेमादर सेवा करो।
यदि देश-भक्तिमें कष्ट भी, हो, होने दो, मत डरो ॥

[५]

शुभ स्वराज्यका जोर शोर दिन दिन दूना हो
मन स्वराज्यके भावसे न क्षणभर सूना हो।
करो शक्ति सम्पन्न, डरो मत, टेक निवाहो,
डट जाओ, फिर क्यो न मिले चितसे जो चाहो।
जो सत्याग्रह, सानन्द-श्रम सान्दोलन संयोग हो।
तो ब्रिटिश छत्र-रक्षित सुभग प्रिय स्वराज्य-सम्भोग हो ॥

[६]

मुदित न होते कृतम-कनक-खोतेमें तोते,
खोते अंसुआ-बीज सुआ सोतेमे रोते।
क्षण क्षण हों 'परवते' दूध रोटीसे कृश तन,
सचमुच पर वश पड़े जीवका जकड़े तन, मन,

हा! स्वर्ग भी परतन्त्रता यह नर्क-तुल्य अपवर्ग है।
मानव-जीवन सार तो शुभ स्वतन्त्रता स्वर्ग है॥

(७)

स्वावलम्ब नर-देह, निशापति चन्द्र दुलारा,
चौसर अगर सुकर्म स्वावलम्बन पौबारा।
कलित कामना कृषी, स्वावलम्बन घन-माला,
यदि जड़ता तम तोम दिवाकर तो उजियाला।
प्रति साध्य-वस्तुका समझ लो स्वावलम्ब साधन यही।
अतएव पराश्रय त्यागकर है स्वत्वाराधन सही॥

—चतुर्भुज पाराशर विशारद

——

आकांक्षा

प्रभो! भीष्म-प्रण-भक्ति हमें दो;
हरिश्चन्द्रकी व्यक्ति हमें दो;
स्वयं शक्तिकी शक्ति हमें दो;
'अपने' पर अनुरक्ति हमें दो;
देशोत्थान-दिनेश लख खिलनेको 'अरविन्द' हो।
समता—सुमन-सुवास-रस-के हित विमल मलिन्द हो॥
हमें युद्धका सात्विक बल दो
हृदय, पवित्र और निश्चल दो

हमें न धोखेबाजी—छल दो
स्वावलम्बपर प्रेम अटल दो
अन्यायी, अन्यायका साथ कभी देवें नहीं।
अन्याय, नीति, सद्धर्मसे विलग कभी होवें नहीं॥
भारत हो अरमान हमारा
भारत हो अभिमान हमारा
भारत ही हो प्राण हमारा
हो वह प्रिय आंखोंका तारा
उसपर हो बलिदान हमारा
जीवन—तरुका एक सहारा—
ज्ञेय, ध्येय, शुचि श्रेय हो,प्यारा भारत ही हमें।
बल दो, आशीर्वाद दो इस सात्विक उत्साहमें॥

—निर्बल

असहयोगीका कर्त्तव्य
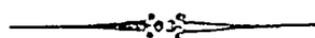
भाई हो, या पिता, पुत्र हो, माँ हो, या प्राणेश।
आत्माको ठुकराकर इनका मानूं क्यों आदेश॥
मै अपने जीवनका स्वामी मुझको अपना ज्ञान।
मुझसे ही मेरा होवेगा मान और अपमान॥
सम्बन्धी वे, उनका मुझपर सब प्रकार अधिकार।
पा सकते हैं मुझसे अपना न्याययुक्त सत्कार॥

पर मुझसे वे कहें कि तुम हो सदा हमारे दास।
रहो हमारे होकर ही तुम, रहो हमारे पास॥
यह होनेका नहीं, देशका मुझपर भारी स्वत्व।
इसी भेदपर जीवनका है छिपा गूढ़तम तत्व॥
दिया जन्म जिस मातृभूमिने पला जहांपर नित्य।
है उसकी सेवा ही मेरे जीवनका औचित्य॥
पाला मात पिताने पलकर इसी भूमिके मध्य।
तो प्रधान सेवा स्वदेशकी; यही प्रथम आराध्य॥

—असहयोगी छात्र

कबतक ?

चलेंगी हिन्दमें यों उलटी हवाएं कबतक।
टलेगी सरसे हमारे भी बलाएं कबतक।
पैदा तो हम करें ले जायं वलायतवाले,
कहो तो घरको भला हम यों लुटाएं कबतक।
देखते ही हमें "वेगर" जो कहा करते हैं,
उनके ख़िताबातसे इज़्ज़तको बढ़ाएं कबतक।
जोकि गर्दनमें गुलामीका तौक़ पहना दे,
ऐसी तालीमको बच्चोंको दिलाएं कबतक।
अब तलक देखा किये दिलको सब्र दे दे कर,
देखिये करते हैं हमसे वो वफाएं कबतक।

लेकिन पञ्जावकी पुर दर्द फजाएं आखिर,
दिलसे उस सब्रको अब भी न हटाएं कबतक।
मरकर या जिन्दा हों आज़ाद मगर अब होंगे,
ठान यह हमने लिया सरको भुकाएं कबतक।
हस्तिये कल्म तो मिटनेको नहीं ऐ गुलज़ार,
भेजो, भेजोगे तो भेजोगे कज़ाएं कबतक।

— गुलजार

आकांक्षा

ज़रा सोते हुओको जगा दो हरे ! ॥ ज़रा० ॥
बहुत तो हीन बने और फिरे भी दर दर,
ऐक्य कर दूर बुरी फूट बसायी घर घर।
आत्म अभिमान भरे योग्य बने वे अब तो-
देश कल्याण करें गान करें कह हर हर।
गिरे भावोंको ऊंचे बना दो हरे ! ज़रा सोते० ॥
और तो देश सभी मौज उड़ाते भारी,
प्राप्त अधिकार किये गर्व दिखाते भारी।
किन्तु है हिन्द अभीतक अयोग्य ही, तबतो-
उसे अधिकार दिये पूर्ण न जाते भारी।
पानेकी शिक्षा सिखा दो हरे ! ॥ ज़रा सोते० ॥

खिड़कियां खूब सहीं हां हुजूर कह कहकर,
कूप-मण्डूक बने अन्ध-कूपमें रहकर।
भक्त हों, काम करें, नाम करें, "अभिलाषी"
शौर्य्य, सम्पत्ति बढ़े, हो प्रतापयुत आदर।
पुनः भारतका गौरव बढ़ा दो हरे ॥ जरा सोते० ॥

—"अभिलाषी"

स्वराज्यकी योग्यता

अधिकारी कहते हैं हमसे-"तुम स्वराज्यके योग्य नहीं,
बिना योग्यताके शासन क्या मिल सकता है कभी कहीं?
बन्द करो इस आन्दोलनको, वृथा न हमसे वैर करो,
प्रथम तैरना सीखो बाबा, फिर पानीमें पैर धरो।"
किन्तु, बिना पानीमें पैठे कैसे तैरा जाय भला?
अधिकारी ही रखते होंगे ऐसी कोई सिद्ध कला!
और नहीं तो भवसागर भी हमें तैरना आता है।
'होसला, तो तुच्छ चींटियों तकमें पाया जाता है।
अवसर मिले योग्यताका हम तभी न कुछ परिचय देंगे?
कोई यही परीक्षा तो ले सनद आप हम ले लेंगे।
सच तो यह है अधिकारोंका बढ़ा हुआ है लोभ उन्हें,
इसी लिये रह रहकर हमपर हो उठता है क्षोभ उन्हें!

पर क्या उनके भृकुटि—भङ्गसे स्वाधिकार हम छोड़ेंगे ?

उनके ही समान नर होकर डरकर क्या मुंह मोड़ेंगे ?

छ भी हो, उद्देश्य—सिद्धिपर अब हमने हठ—योग लिया,

आतप, वर्षा, शीत सभी कुछ सहनेका उद्योग किया।

राजनीति अप्सरा—रूपिणी हमें डिगानेको आवे,

तीक्ष्ण कटाक्ष—वाण वरसाकर भाव—भङ्गियां दिखलावे।

सावधान, हे देश बन्धुओ! आसन अपना हिले नहीं ?

फिर ऐ से मिले नहीं ?

शरण गुप्त।

स्वदेशानुराग।

(महाकवि Sir Walter Scott के Love of Fatherland का भावानुवाद।)

क्या ऐसा नर शून्य-हृदयका,

इस जगमें पाता विश्राम।

जो यह कभी नही कहता है,—

"यही हमारा देश ललाम"!

जिसको हृदय नही लहराता,

जब वह आया अपने देश।

घूम घामकर दूर देशसे,

जहां नहीं सुखका लवलेश।

उसे खूब चौकस हो जांचो,

यदि ऐसा नर मिले कहीं।

कविवर जिसके गुण-वर्णनसे,

प्रेम-मत्त हो जायं नहीं।

यदि उसका हो नाम मानका,

होवे उसका वित्त अपार।

हो वह बड़े पदोंसे भूषित

मानव-इच्छाके अनुसार॥

सारे वैभवके रहते भी,

सुयश-रहित वह जीयेगा।

नीच, स्वार्थ-रत उभय मृत्युके,

क्रीड़ा-स्थलमें सोयेगा।

जिसी धूलमें जन्मा था वह,

उसी धूलमें होगा लीन।

अश्रु-बूंदसे वञ्चित होकर,

यश-मर्यादासे हो लीन।

—कामेश्वरप्रसाद (काम)

कैसे हमें यकीन हो.

कैसे हमें यकीन हो ऐसी जबानपर,
जिसका नहीं कयाम किसी भी बयानपर।

हज़रत ज़बान एक है बदलो न जानकर,
जब दे चुके जबान हमे मेहमान कर।

काबू जबानपर हो तो काबू जहानपर,
कैसे हमें यकीन किसी भी बयानपर।

किसीको तो किसीके कामसे तकलीफ होती है,
मगर हमको तुम्हारे नामसे तकलीफ होती है।

नामो निशान भी न रहेगा जहानपर,
कैसे हमें यकीन किसी भी बयानपर।

देखली बस आपकी ईमानदारी हो चुकी,
दोस्ती भी अब हमारी और तुम्हारी हो चुकी।

काबू नहीं है आपका अपनी जबानपर,
कैसे हमें यकीन किसी भी बयानपर।

हमारी राय अब तुमसे नहीं मिलती सुनो हजरत
हमारा रास्ता ये है तुम्हारा रास्ता वोह है।

बस हो ज़बान एक तो कुल है जहानपर;
कैसे हमें यकीन किसी भी बयानपर।

—शौक़

जान घुला देंगे हम

देशके वास्ते यह जान घुला देंगे हम।
गलेको शानसे शूली पे झुला देंगे हम ॥
भीष्म सन्तान हो कुत्तेकी मरेंगे क्या मौत,
जिस्मको शौकसे बाणो पै सुला देंगे हम ॥
रञ्ज झेलेंगे मुसीबत भी सहेंगे लेकिन,
तौक़ गर्दनसे गुलामीका खुला देंगे हम ॥
खातमा जुल्मोंका कर देंगे यह बीड़ा है लिया,
न्याय और सत्यके फूल फुला देंगे हम ॥
नौकरो और सता लो कि न अरमान रहे,
चौकड़ी सारी किसी रोज भुला देंगे हम ॥
हम तो रोते ही हैं और रो लेवेंगे जरा,
याद रहे तुमको भी एक रोज रुला देंगे हम ॥
तुम तो इंसान हो इंसानकी हस्ती क्या है,
खास भगवानका आसन भी डुला देंगे हम ॥

—वेनीमाधव तिवारी

स्तुति-पाठक

जय जय भारत--पूज्य मही।
देव-भूमि भी कभी स्वप्नमें, तेरे तुल्य नहीं ॥
कृष्ण, रामसे खड्ग, धनुर्धर, प्रकटित हुए यहीं।
छल-अनीति उनके पल तूने पलभर भी न सही ॥

असुर-रक्तकी नदी यहांपर, वार अनेक वही।
उससे प्लावित होकर प्रबले, तू शुचि बनी रही॥
तेरीसी विक्रम वाली भू, हो सकती न कहीं।
तो भी पग पग दलित वृथा तू होती है नितही॥
शक्ति प्रकटकर, छोड़ मूकता, जग जा झटपट ही।
तेरी हुंकृतिसे कांपेगा, खल-गण सचमुच ही॥
विविध वार जिससे ठोकर खा, रिपुकी गढ़ी ढही।
बासठ कोटि दुर्गोंसे लस ले, है तू जननि वही॥

—रामचरित उपाध्याय

श्रीतिलक-वन्दना
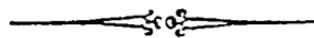
जय जय जय द्विजराज देशके सांचे नायक।
यदपि प्रभासत वक्र, सुधानवजीवन दायक॥
दृग चकोर आराध्य राष्ट्र-नभ-प्रतिभा-भाषा।
वन्दनीय विस्तार-विशारद ज्योत्स्ना आशा॥
जय चितपावन, सद्भावसों जग शुभचिन्तक प्रति पलक।
शिव-भारत-भाल-विशालके लोकमान्य अनुपम तिलक॥
देश—भक्ति—स्वर्गीय - गङ्ग-आघात-तीव्रतर।
गङ्गाधर सम सह्यो अटल-मन तुम गङ्गाधर॥
नित स्वदेशहित निर्भय निर्भ्रम नीति प्रकाशक।
जय स्वराज्य सयुक्त-शक्तिके पुण्य उपासक॥

जय आत्म त्याग अनुरागके उज्ज्वल उच्च उदाहरन।
जय शिव—संकल्प—स्वरूप शुभ एक—मात्र तारन तरन॥

कर्म—योग-आचार्य आर्य-आदर्श उजागर।
निर्मल न्याय निकुञ्ज पुञ्ज करुणाके सागर॥
सुदृढ़ सिंहगढ़के सजीव-ध्वज-धर्म-धुरन्धर।
अद्भुत अनुकरणीय प्रेमके प्रकृत पुरन्दर॥

प्राणोपम राष्ट्र प्रताप वर, अघ—त्रितापहर सुर—सरी।
जय जन—सत्ताके छत्रपति महाराष्ट्र—कुल-केसरी॥

मर्यादा-पूरण-स्वतन्त्रता-प्रियता प्यारी।
प्रकृति मधुर मृदु मंजु सरलता देखि तिहारी॥
रोम रोम कृतकृत्य भयो यह जन्म कृतारथ।
तव दर्शन करि लोचन पायो लाहु यथारथ॥

चित होत परम गद् गद् मुदित जबै विचारत कृत्ति तुव।
जय जीवन—जङ्ग—जहाजके जगमगात—जातीय—ध्रुव॥

धन्य धन्य यह देश जहां तुम देशभक्त अस।
जननी जन्मभूमि तन मन धन जीवन सर्वस॥
धन्य आगरा नगर धन्य यहंके वासी जन।
चरण कमल तव दरसि परसि भये जो पुनीत मन॥

सत विनय यही जगदीशसों होय मनोरथ तव सफल
हम हिन्दी पावें विश्वमें स्वत्व मानवोचित सकल॥

—सत्यनारायण (कविरत्न।)

— —

ग़ज़ल

वतनके वास्ते यह जान जाती है तो जाने दो,
मुसीबत लाख आती हैं मुसीबे सर पे आने दो ॥ १ ॥
अमर है आत्मा सबकी यही उपदेश गीताका,
हथकड़ी तौक जंजीरें पिन्हाते हैं पिन्हाने दो ॥ २ ॥
अड़ा दो अपने सीनेको सदाक़त पर रहा कायम.
ज़हरके तीर क़ातिल गर चलाते हैं चलाने दो ॥ ३ ॥
अगर तकलीफ आती हो मुबारक समझो उस दिनको,
गलेका हार समझो तुम न दिलपर मैल आने दो ॥ ४ ॥
वतनकी ख़ाकमे गर दफन होते हो नहे दिलसे,
शहीदाने वतन तुम भी बनोगे दिन वह आने दो ॥ ५ ॥
जमाना रंग बदलेगा "त्रिवेदी" कुछ दिनोंमे लेख,
हक़ीक़तकी तरह लाखोंको अब सर तो कटाने दो ॥६॥

—हरस्वरूप त्रिवेदी ।

चरखेपर गान

तनि सुनि लेउ अरजिया हमार सजन तोरे पइयां परौं ।

हमको मंजूर सनम रोज चलाना चरखा ।
बस गया आज मेरे दिलमें है प्यारा चरखा ॥
इसलिये आप हमें मोल मंगादे चरखा ।
अर्ज़ इतनी है सनम इसको न देना टरखा ॥

इसे लाने पे होगी बहार
सजन तोरे पइयां परौं ॥ १ ॥

कातकर सूत सदा आपको पहिनाऊंगी ।
आपके वस्त्र विदेशीको मै हटाऊंगी ॥
मिरजई खासी बना करके मैं पहिनाऊंगी ।
सभी पोशाक तुम्हें गाढ़े की बनाऊंगी ॥
फिर तो होगी स्वदेशी बहार
सजन तोरे पइया परौं ॥ २ ॥

आपतो खूब थियेटरमें रोज़ जाते हो ।
कोट पतलून हैट सभी कुछ लगाते हो ॥
चाय बिसकुट ही सदा आप खूब खाते हो ।
अपने पैसेसे विदेशीका घर चलाते हो ॥
ये सब छोड़ो मेरे दिलदार ॥
सजन तोरे पइयां परौं ॥ ३ ॥

छोड़ ये फैल सभी देशकी भलाइ करौ ।
चरखा लाके ऐ सनम पुण्यकी कमाइ करो ॥
भारतमाताके लिये हर तरह भलाइ करौ ।
बुराई ग़ैरकी छोड़ो पिया भलाई करौ ॥
इससे होगा हमारा सुधार
सजन तोरे पइयां परौं ॥ ४ ॥

आपको देशके शुभ कार्यमे आना चहिये ।
धरमकी राहमे पैसेको लगाना चहिये ॥

बढ़के माताकी सदा सेवा बजाना चहिये।
हर जगह देशमे चरखोंको चलाना चहिये॥
फिर तो होगी हमेशा बहार
सजन तोरे पइयां परौं॥ ५॥

—देहाती।

अनुताप

हा! मेरे सर्वस्व लिये॥ टेक॥
वैर-फूटने लूट-लूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये॥
अकर्मण्यता—पाठ पढ़ाकर,
नीचभावमें मिला-मिलाकर,
स्वार्थ-सुराको पिला पिलाकर,
'विमल' बुद्धिको भुलाभुलाकर,
वैर फूटने लूट लूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।
देशद्रोह शिर तिलक लगाकर,
अधमी कपटी नीच बनाकर;
विषयोमें संलग्न कराकर,
बन्धु-बन्धुसे लड़ा-भिड़ाकर;
वैर फूटने लूट लूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।

भेदभाव मनमें उपजाकर,
कपटजाल हियमें फैलाकर;
दुर्व्यसनोंमें शीघ्र फंसाकर,
ऐक्य-प्रेमको दूर भगाकर;
वैर फूटने लूटलूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।
पिता-पुत्रसे बिलग कराकर,
अरिको मित्र जान अपनाकर;
सुधा छोड़के गरल पिलाकर,
बिना मौतके प्राण गंवाकर;
वैर-फूटने लूटलूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।
स्वामीसे अब दास बनाकर,
दर-दर हमें भीख मंगवाकर;
ठौर-ठौर निन्दा करवाकर,
कुल गरिमाको धूल मिलाकर;
वैर-फूटने लूटलूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।
तन कायरता कवच पिन्हाकर,
स्वेत-स्वेतसे डरा डराकर;
हा! हा! कैसा स्वांग बनाकर,
हर देशोंमें घुमा घुमाकर;
वैर-फूटने लूट लूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।
कला-कुशलता दूर दबाकर,
ज्ञान और विज्ञान चबाकर;

सब देशोंको दास बनाकर,
सरपर ठोकर लगा लगाकर;
वैर-फूटने लूट लूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।
देश भेषको गंवा-गंवाकर,
धोती तजकर पैण्ट चढ़ाकर;
श्रीयुतसे मिस्टर कहलाकर,
अपना डेरा अलग कराकर;
व र-फूटने लूट लूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।
पाग त्याग सिर हैट लगाकर,
नेत्रोंपर उपनेत्र डटाकर;
बदन कोट पद बूट जटाकर,
देशबन्धुको खूब सताकर;
वैर-फूटने लूट लूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।
कर दासत्व-वृत्ति सुख पाकर,
उद्यमसे अति दूर भगाकर;
हा! हा! हमें निरीह बनाकर,
हमें क्रूरतामें लिपटाकर;
वैर-फूटने लूट लूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।
अपनी भाषा भाव भुलाकर,
चाल अन्यकी चला चलाकर;
देश—प्रेमसे हमे जुदाकर,
पुरुष स्त्री जन पशू बनाकर;

वैर-फूटने लूट लूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।
बने बनाये घरको ढाकर,
अपना तमोराज्य फैलाकर;
छिपा रहा है ज्ञान-दिवाकर,
अब भी आंखें खोल, भलाकर;
वैर-फूटने लूट लूटकर हा! मेरे सर्वस्व लिये।
वैर-फूटकी आगसे, दग्ध हो रहा देश।
डाल एकता-वारि झट, मान 'विमल' उपदेश॥

—"विमल"।

स्वप्न-स्थिति

सोया मैं सदियोतक सोया।
ा सोया हूं कि आपही मैं अपनेसे खोया
किन्तु नींद जो मुझको आयी,
वह कुछ भी विश्रान्ति न लायी,
सौ स्वप्नोंने धूम मचायी,
अपनी अपनी छटा दिखायी,
चिन्ता, शोक, विशाद, और भय—
सबने घोर घटा छायी,
और रुधिर धारा बरसायी।
कार उसने मुझे बहाया, और डकार डुबोया
सोया मैं सदियोतक सोया।

उन स्वप्नोंका ऐसा क्रम था,
वस प्रत्यक्ष भावका भ्रम था।
लूट मारसे नाकों दम था।
न मैं था न मेरा आश्रम था।
धरा धसकती नभ फटता था—
धुंवांधार दुस्तर तम था,
और दस्युदल अति दुर्दम था।
अव भी वही प्रहार निरन्तर सहता हूं मैं गोया
सोया मैं सदियोंतक सोया।
पर अव आंख खुली है मेरी,
और दृष्टि भी मैंने फेरी।
फिर भी है सव ओर अंधेरी,
प्रभा प्रकाशित हो अव तेरी।
देखूं मैं क्या गया, रहा क्या,
न कर दयामय देरी
वजने दे फिर जीवन भेरी।
किसी प्रकार भार यह मैंने जीवित रहकर ढोया।
सोया मैं सदियोंतक सोया।
तेरी पुण्य पताका फहरे,
मुक्ति मुक्तपर उसका लहरे।
आंधी उठे, धरा भी घहरे,
मेरी दृष्टि उसीपर ठहरे।

लाख लाख कण्टक हों पथमें—

चलूं जिधर वह छहरे,

भय विघ्नोंसे हृदय न हहरे।

पद पदपर उसका फल भोगे जो जिसने है बोया।

सोया मैं सदियोंतक सोया।

—मैथिलीशरण गुप्त

कुछ करके रहेंगे

जब सरको उठाया है तो कुछ करके रहेंगे।

आजाद ही रहेंगे या अब मरके रहेंगे॥

शादीके जहां जलसे हैं गमसे बदल गये।

उस हिन्दके जर्रे क्या सितमगरके रहेंगे॥

शोहरत है कुल जहांमें जवां मर्द हिन्दकी।

जुल्मोंको जालिमोंके मिटाकरके रहेंगे॥

लाखो मुसीबतें हों मगर हम स्वराज्यको।

लेनेको अड़े मिसले सिकन्दरके रहेंगे॥

'गुलजार' कुछ न होगा हमारा भी फिर गिला।

जब कुल हकूक अपने बराबरके रहेंगे॥

—देवीप्रसाद गुप्त

अभिलाषा

श्रीहीन हुए भारतमें अब पुनि सुधा वृष्टि वर्षावेंगे।
मान घटावेंगे उनका जो हमको अब कलपावेंगे॥
नहीं होय वचनोंसे विचलित जीवन ज्योति जगावेंगे।
मातृभूमिके लिये कष्ट सहते सहते मिट जावेंगे॥
खड़े खड़े कट जावेंगे पर हिंसा नहीं दिखावेंगे।
न हो भक्त नौकरशाहीके देशभक्त कहलावेंगे॥
लावेंगे उत्साह हृदयमें तब स्वराज्यको पावेंगे।
ललचावेंगे तो बातोंमें बहु विधि कष्ट उठावेंगे॥
चक्र सुदर्शन रूपी चरखेसे ही ध्यान लगावेंगे।
तुच्छ हमें जो समझे हैं उनको निज शक्ति दिखावेंगे॥
रहे देशकी लाज ईशसे नित प्रति यही मनावेंगे।
वे देखें हम असहयोगसे मन वांछित फल पावेंगे॥
दीखेंगे जब खड़े त्रिश्वमें करते नाद गगनभेदी।
बर्मन तब ही हो स्वतन्त्र जो माके लाल बने कैदी॥

—लक्ष्मीनारायण बर्मन

सत्याग्रह

आओ सत्याग्रह व्रत धारें।
दीन दुखी अन्याय दलित भारतको शीघ्र उबारें॥ १॥
रौलट बिल विष पूरित दुखमय छाये जलधर भारी।
सत्य न्याय दिनकरको ढकाकर फैलायी अंधियारी॥ २॥

भारत कोमल कमल विपिन हित, यह हथिनी मदमोती।
पूर्ण इन्दु सम हिन्द देश हित, राहु कठोर कुघाती ॥ ३ ॥
अन्धकारमें गरल बुझाये, अस्त्र अचूक चलाना।
सदा न्यायका गला घोटना, पर न्यायी कहलाना ॥ ४ ॥
सत्याग्रहका कवच पहिन कर, निज रक्षा अब कीजे।
शुभ स्वराज्यकी सुखद पताका नभमें फहरा दीजे ॥ ५ ॥
भव्य भूमि भारत सपूत ! निज आत्मिक बल दिखलादो।
"वीर धीर है शक्तिवान है" यह जगको बतलादो ॥ ६ ॥
सत्याग्रह व्रत धारण कीजे तुमसे यही विनय है।
निष्फल हो हम तो भी अपनी अन्त विजय निश्चय है ॥ ७ ॥

—भवानीशङ्कर याज्ञिक

सत्याग्रह-गीत
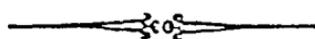
मैं अमर हूं मौतसे डरता नहीं।
सत्य हूं, मिथ्या डरा सकती नहीं ॥
मै निडर हूं, शस्त्रका क्या काम है ?
मैं अहिंसक हूं, न कोई शत्रु है ॥ १ ॥
शस्त्र लेना निर्वलोंका काम है।
सत्यको तो शस्त्र केवल प्रेम है ॥
प्रेमसे मैं भूमि स्वर्ग समुद्रको—
एक कर दूंगा हृदयके रूपमें ॥ २ ॥

पीस लो तुखमें, पिसूंगा तो सही,
किन्तु अञ्जन आँखका बन जाऊंगा ॥
दृष्टि होगी सौगुनी संसारकी।
तुम कहाँ पाओगे छिपनेकी जगह ॥ ३ ॥
चाहते तो ख़ाक करना ही मुझे,
आगमें धरकर तपाकर देख लो ॥
शुद्ध सोनासा कढ़ूंगा जब कभी।
दाम पहलेसे बहुत बढ़ जायगा ॥ ४ ॥
काट लो सिर, दर्द सिरका लो मिटा।
भार कंधेका हमारा भी हटे ॥
हूं दियेकी लौ, इसे मत भूलना।
फिर उजाला और भी हो जायगा ॥ ५ ॥
सत्य कहनेसे न रुकती जीभ है।
काँपते क्यों हो? इसे ही काट लो ॥
मैं कलम हूं, एक मेरी जीभसे,
क्या करोगे, जब बढ़ेंगी सैकड़ों ॥ ७ ॥
खूब चारों ओर काँटे दो बिछा।
मर मिटूं मैं काढ़ लो जीकी कसक ॥
किन्तु आकर देख जाना एक दिन।
मैं मिलूंगा फूलसा हंसता हुआ ॥ ७ ॥
क्रोधने जीता तुम्हें है सब तरह।
क़ैदमें तुम क्रोधकी हो हर घड़ी ॥

किन्तु मैं जीते हुए हूं क्रोधको।
तब कहो मैं किस लिये तुमसे डरूं ? ॥ ८ ॥
कौन हो तुम ? मौतका मैं दूत हूं।
क्या करोगे ? मौतसे दूंगा मिला ॥
है कहां वह जन्म भरकी सङ्गिनी !
मित्र ! लो तुम प्राण वह उपहारमें ॥ ९ ॥

— रामनरेश त्रिपाठी।

तर्पण

(१)

पितृ-पक्षमें तुम्हें तिलाञ्जलि पितरोंको देनी होगी।
सुख-स्वतन्त्रता हेतु तुम्हें आशिष उनसे लेनी होगी ॥
हटा विदेशी छाया उनकी कीर्त्ति—कौमुदी छिटकाना।
नवयुवको ! तम दूर हटाकर सत्पथपर ही तुम जाना ॥

(२)

पराधीनतासे कलुषित है हुआ, करो 'जीवन' निर्मल।
हृदय-कमल निज करमें ले लो धारणकर आध्यात्मिक बल ॥
शुद्ध पुष्प 'सुस्नेह' पूर्ण तिल ले सरिता तट मत जाना।
परवशतासे कलुषित हैं सरिताएं, उनको तज आना ॥

[३]

पहन कीर्त्ति-'पट' पूर्वपुरुषका, चलो आज अमृतसर वीर।
रुधिर-नदी है वही जहांपर युवको ! आओ उसके तीर ॥

करके मुंह जलियानवागकी ओर वहां तर्पण देना
देवी रतन खड़ी होगी, तुम ध्यान 'मदन' का कर लेना

[४]

वही 'चलोचन' आदि मिलेंगी और मिलेंगे सहयोगी
बना पुरोधा वहीं लाजपतको, अञ्जलि देनी होगी।
डायरका फायर नहीं होगा, नहीं वहाँ है 'स्मिथ' नीच
स्थिर हो अञ्जलि तुम देना होकर खड़े रुधिरके बीच।

(५)

भय हो, तो चट वहां बुलाना गांधी-अलीबन्धुसे वीर
पहरा देंगे तुम्हे घेरकर सभी भांतिसे वे मति-धीर।
अञ्जलि देना, भला करेगा, दयासिन्धु वह जगदीश्वर
नश्वर देह नष्ट होनेपर, हो जाओगे अविनश्वर।

—पारसनाथ त्रिपाठी

न आयेंगे

नाथ क्या भूमि भार टारने न आयेंगे ?
क्या सदा दुःख ही दुख अब हमें सहायेंगे ?
लाख सहते थे सहे अब न सहे जायेंगे।
क्या न प्रभु पापियोंसे पिण्ड अब छुड़ायेंगे॥

जिससे कहता हूं वही देता है दुत्कार हमें।
प्रार्थना करनेपर मिलती है बस फटकारे हमें॥
जिन्दगी सत्य हुई अब तो प्रभो भार हमे।
सांस एकबार यहां लेना है दुश्वार हमें॥

कबतलक डूबती नैयाको पार लायेंगे।
नाथ क्या भूमि भार टारने न आयेंगे ?

कैसे निज कष्ट कथा नाथ सुनायें अब हम।
कोमल उर आपका पत्थरसा बनावें अब हम॥
पहले आंखोंसे अश्रुधार बहावें अब हम।
या प्रभो दुःखकी सब बात सुनावें अब हम॥
आहें निकली कहां क्यों कितनी क्यों गिनायेंगे।
नाथ क्या भूमि भार टारने न आयेंगे ?

ग्रीष्मकी धूपमें मध्याह्नमें हम नाथ जले।
शिशिरकी शीतमें जाड़ेसे ठिठुरते थे गले॥
अन्न पैदा किया था भूखसे मर मरके भले।
किन्तु हा किस लिये हम आज गये ऐसे छले॥
बच्चो क्या भूखों तड़पकर कहो मर जायेंगे।
नाथ क्या भूमि भार टारने न आयेंगे ?

न्यायकी थी जहां आशा वहां अन्याय हुआ।
जिससे साहाय्यकी आशा किया असहाय हुआ॥
जिसको प्रतिपाल समझते थे नाशनाय हुआ।
मेरे सर्वस्व हरणको विशाल काय हुआ॥
कितनी बातें गयी बदली कहां गिनायेंगे।
नाथ क्या भूमि भार टारने न आयेंगे ?

गोलियां हम पै चलीं बमकी भी बोछार हुई।
कोड़े पीठो पै लगे रक्त वारिधार हुई॥

जब कहा कुछ भी सुनाई नहीं हर वार हुई।
नीचता अपनी कभी उनको न स्वीकार हुई॥
कैसे पश्चात्के हम दुःखको भुलायेंगे।
नाथ क्या भूमि भार टारने न आयेंगे।

सब तरह उनके दुख हरनेको हम तैयार रहे।
उनके ऋण सब तरह भरनेको हम तैयार रहे॥
काम पड़नेपर हम मरनेको भी तैयार रहे।
कोई भी वात न थी हमसे जो इनकार रहे॥
तिस पे मनमानी ये हम पे करें करायेंगे।
नाथ क्या भूमि भार टारने न आयेंगे।

अब तो हमने लिया है जीमें यही अपने ठान।
खलसे सौजन्यताकी छोड़ दी हमने है बान।
त्याग सहयोग असहयोग किया, हे भगवान।
सत्य स्वाधीन सुखद स्वत्वपर रख करके ध्यान।
दोष अन्याय कलह सर्वथा मिटायेंगे।
नाथ क्या भूमि भार टारने न आयेंगे।

—सीताराम "भ्रमर"

बाबू सूरजचन्द अग्रवाल बी० ए०
द्वारा 'विश्वमित्र' प्रेस,
२११ टेमर लेन, कलकत्तामें मुद्रित।